सामाजिक ज्ञान

की

सरल रूप रेखा

राजपूताना विश्वविद्यालय के हाईस्कूल के विद्यार्थियों के लिये

लेखक

आर० एन० गोरा, एम० ए०, एल० टी०,

समालोचक परीक्षक तथा सैंकड़ों

पुस्तकों के लेखक

वि द्या भ व न

पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता

चौड़ा रास्ता, जयपुर

मूल्य १।।।=)

दो शब्द

सहायक पुस्तकें विद्यार्थियों के लिये स्वयं शिक्षक का काम देती है। ऐसी पुस्तकों द्वारा विद्यार्थी किसी प्रकार की सहायता के अभाव में भी विषय को भली प्रकार हृदयङ्गम कर लेते हैं। यह पुस्तकें साधारणतया दो प्रकार से लिखी जाती है। प्रथम तो मूल पुस्तक के विचारों को सरल शब्दों में तथा संक्षेप से व्यक्त करना और दूसरे प्रश्नोत्तर के रूप में। प्रस्तुत पुस्तक में दोनों बातों का ध्यान रखा गया है। राजपूताना विश्वविद्यालय की हाई स्कूल कक्षा के अध्ययन क्रम में इस विषय का प्रवेश अभी नवीन है। इस कारण इस विषय के प्रश्नों तथा उत्तरों की शैली से विद्यार्थी सर्वथा अभिज्ञ है। विद्यार्थियों की इसी कठिनाई को ध्यान में रखकर पुस्तक को प्रश्नोत्तर का रूप दिया है। तथा इस प्रकार विषय शीघ्र ग्राह्य भी होता है।

पुस्तक की भाषा बड़ी सरल रखी गई है। इस बात की ओर विशेष ध्यान दिया गया है कि पुस्तक विद्यार्थियों के लिये अधिक से अधिक उपयोगी सिद्ध हो। इसीलिये पुस्तक के अन्त में 'परीक्षा से कुछ समय पहिले' शीर्षक से पुस्तक का निचोड़ दिया गया है जो वास्तव में एक दृष्टि में ही सारी पुस्तक को दोहराने के लिये पर्याप्त है। इसके अतिरिक्त ७ टस्ट पेपर दिये गये हैं जिनमें हर प्रकार का सम्भावित प्रश्न देने का प्रयत्न किया गया है। आशा है पुस्तक विद्यार्थियों को सही अर्थों में सहायक सिद्ध होगी।

विषय-सूची

स्वतन्त्र भारत प्रेस, देहली।

विषय-परिचय

प्रश्न १ सामाजिक ज्ञान क्या है ? इस विषय पर एक संक्षिप्त निबन्ध लिखिये।

उत्तर—सामाजिक ज्ञान एक विषय है जिसके अन्तर्गत मानव-जाति के क्रमिक विकास का अध्ययन किया जाता है। आदि काल में मनुष्य जंगलों में रहते थे। उनके रहने सहने के ढंग वन मानुषों के समान थे। वह तन ढांपने के लिए वृक्षों की छाल तथा पत्तों का प्रयोग करते थे और फल फूल खा कर निर्वाह करते थे। उस समय न कोई समाज व्यवस्था थी, न राज्य था न राज्य के नियम, न कोई मशीन थी न विज्ञान और न ही कोई प्रयोगशाला थी। मनुष्य पूर्णरूप से स्वतन्त्र था उस पर कोई अंकुश नहीं था। इस युग को आदि युग (Primitive Age) कहते हैं।

धीरे-धीरे मनुष्य का ज्ञान बढ़ता गया। उन्हें अपना अकेलापन अखरने लगा और वह एक दूसरे के समीप आने का प्रयत्न करने लगे। अब मनुष्य ने अपनी आवश्यकता के साधन जुटाने प्रारम्भ कर दिये। सर्व प्रथम आग का निर्माण हुआ फिर पत्थर के अस्त्र शस्त्र बनाये गये और मानव फलाहारी से मांसाहारी बना। धीरे-धीरे समाज व्यवस्था बनी, समाज के नियम बने फिर मशीन युग आया और आधुनिक शासन प्रणाली की नींव पड़ी।

मनुष्य की इस क्रमिक उन्नति का एक लम्बा इतिहास है, जिसका ज्ञान एक नियमित अध्ययन के पश्चात होता है। यह नियमित अध्ययन ही वह विषय है जो सामाजिक ज्ञान कहलाता है। इसके द्वारा ही हमें यह ज्ञान प्राप्त होता है कि किस प्रकार धीरे धीरे मनुष्य अपने वन मानुष के रूप से आधुनिक सभ्य रूप को प्राप्त कर सका। मनुष्य की इस क्रमिक उन्नति की यह कहानी अभी पूर्ण नहीं हुई है। मनुष्य अब भी विकास की ओर अग्रसर है और आधुनिक समाज जीवन में आगे भी बड़े-बड़े परिवर्तन होने हैं।

प्रश्न २. विज्ञान का क्या है अर्थ ? स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—विज्ञान की व्याख्या कई प्रकार से की जाती है। विज्ञान का शब्दार्थ है विशेष ज्ञान। हमारे आस-पास की वस्तुओं के बारे में हमारा जो दृष्टिकोण है वैज्ञानिक दृष्टिकोण उससे बहुत भिन्न है। वह प्रत्येक वस्तु को विशेष ज्ञान प्राप्त करने की दृष्टि से देखता है।

दूसरे शब्दों में विज्ञान का अर्थ प्राकृतिक ज्ञान की वृद्धि अथवा भौतिक ज्ञान की नियमित खोज है।

वैज्ञानिक प्रत्येक वस्तु को अनुभव तथा विश्लेषण की कसौटी पर कसता है। वह सदा यही प्रश्न करता है कि 'यह वस्तु इस रूप में क्यों है" "इसमें क्यों नहीं है" अथवा क्या यह इस रूप में भी आ सकती है। इस प्रकार अपनी खोज तथा विश्लेषण द्वारा वह ज्ञान मे वृद्धि करता है और कुछ आधारभूत नियम बना देता है।

आज हम अपने चारों ओर जो वैज्ञानिक आविष्कार देखते हैं वह इसी प्रकार की नियमित खोज तथा विश्लेषण का परिणाम है।

———

अध्याय १

मानव की प्रकृति पर विजय

प्रश्न १ आधुनिक युग विज्ञान युग क्यों कहलाता है?

उत्तर—आधुनिक युग विज्ञान युग कहलाता है, कारण विज्ञान ने मनुष्य जीवन के सभी क्षेत्रों में एक भारी क्रान्ति उत्पन्न की है। मनुष्य के घरेलू जीवन से लेकर सामाजिक और राजनैतिक जीवन तक कोई अंग अछूता नहीं रहा जिस पर विज्ञान का प्रभाव न पड़ा हो।

आधुनिक जीवन तथा विज्ञान के चमत्कार

घरेलू जीवन में मनुष्य के आराम के सभी साधन उपलब्ध हैं। ठीक समय का ज्ञान हो सके इसके लिए वैज्ञानिक मस्तिष्क ने घड़ी को खोज निकाला। बिजली का बटन दबाने भर की देर है, उसी से प्रकाश भी हो जाता है, घण्टी भी बज सकती है रसोई भी तैयार की जाती है और गर्मियों में पंखे भी चल सकते हैं। समाचार पत्र और रेडियो के बिना तो चैन ही नहीं। इसी प्रकार अन्य बहुत से यन्त्र हमारे जीवन को सुखमय बनाने में बहुत उपयोगी सिद्ध हुए हैं। मनुष्य ने पवन, जल, अग्नि और विद्युत आदि प्राकृतिक शक्तियों को अपने वश में किया है। नदियों को अपने वश में करके सिंचाई तथा बिजली सप्लाई की योजनाएँ बनाई गई हैं। इसी प्रकार हवा तथा अग्नि की शक्ति से अनेकों उपयोगी कार्य किये गये हैं। विद्युत चुम्बकीय लहरें एक सेकेण्ड में १८६००० मील का मार्ग तय करती हैं इनके द्वारा सन्देश वाहन का आविष्कार किया गया है। देश काल का अन्तर तो अब रहा ही नहीं। यातायात के साधनों की सुविधा होने से अधिकाधिक जातियों तथा देशों में सम्पर्क स्थापित हुआ और आधुनिक सामाजिक उलट फेर सम्भव हो सके।

राजनैतिक क्षेत्र में संसार ने सब से बड़ा कार्य जो अभी तक किया है वह है संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना जो देश काल का भेद कम होने से ही देखने में आ सका है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि जीवन का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं बचा जो विज्ञान के प्रभाव से बच सका हो। वास्तव में यह मनुष्य जीवन का एक अंग बन गया है। यदि आज के सभी उपलब्ध साधन मनुष्य मात्र से अचानक छीन लिए जाय तो हम अपने को आज से सहस्रों वर्ष पूर्व के युग में पाएँगे जो आज के विज्ञान युग से कहीं भिन्न था।

प्रश्न ४ आज का युग किस प्रकार प्राचीन युग से भिन्न है ?

उत्तर—आधुनिक युग में विज्ञान ने भारी प्रगति की है जो प्राचीन काल में कल्पना में भी नहीं आई होगी। प्राचीन काल में मनुष्य वन मानुष के रूप में थे और फल फूल खाकर पहाड़ों की कन्दराओं में रह कर जीवन-व्यतीत करते थे। शरीर को ढापने के लिए वृक्षों की छाल तथा पत्तों का उपयोग करते थे। धीरे-धीरे आवश्यकतानुसार मनुष्य का मस्तिष्क विकास के लिए छान बीन करता गया और हम पत्थर तथा धातु के युग से आज के वैज्ञानिक युग में पहुंच गये।

प्रारम्भिक मानव जीवन

आज के वैज्ञानिक ने प्राकृतिक शक्तियो को पूर्ण रूप से अपने वश में किया हुआ है और उनको अपनी इच्छानुसार तोड़-मरोड़ कर अपने लिए सुख तथा आराम के साधन जुटा लिए हैं। बड़ी-बड़ी नदियों पर बांध बना कर सिंचाई तथा बिजली सप्लाई की योजनाएँ कार्यान्वित की जा रही है। बिजली, रेडियो, टेलीफोन, बेतार के तार (Wireless) हवाई जहाज़, टेलिप्रिंटर, टेलिविजन, रेल और मोटर आदि सब आधुनिक युग की देन हैं।

आधुनिक युग तथा विज्ञान के चमत्कार

प्राचीन काल में कोई समाज व्यवस्था न थी, न राज्य था, न राज्य के नियम, न कोई मशीन थी और न विज्ञान ही एक स्थान के व्यक्ति दूसरे स्थान वालों से सर्वथा अपरिचित थे। और यह

श्रेय आधुनिक युग को ही है कि हम अमेरिका में बैठे हुए व्यक्ति से बात-चीत कर सकते हैं। देश काल का अन्तर तो अब बहुत कम हो गया है। यही कारण है कि आज की समाज व्यवस्था, आज की शासन प्रणाली, आज का राज्य तथा उसके नियम बन सके।

प्रश्न ४ अन्य प्राणियों की तुलना में मनुष्य में कौन सी ऐसी विशेषताएँ हैं जिसके कारण वह अधिक उन्नति कर सभ्यता का निर्माण कर सका है ?

मानव की बुनियादी श्रेष्ठता

उत्तर—मनुष्य और पशु दोनों ही आज तक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हाथ पाँव मारते आये हैं। किन्तु यह स्पष्ट है कि मानव ने इस ओर अपार सफलता प्राप्त की है। मनुष्य की यह सफलता उसकी हाथ, वाणी तथा मस्तिष्क की श्रेष्ठता पर निर्भर है।

मुक्त हाथ

मनुष्य के हाथ मुक्त हैं। वह दोनों हाथों के सहारे के बिना दोनों पाओं पर खड़ा हो सकता है। अन्य प्राणियों अर्थात् पशुओं को यह सुविधा प्राप्त नहीं है। मनुष्य दोनों पाओं पर खड़े होकर दोनों हाथों से स्वतन्त्र रूप में कार्य कर सकता है। हम अपने आस पास जो भी कला कौशल का अस्तित्व देख रहे हैं यह सब मनुष्य के स्वतन्त्र अथवा मुक्त हाथों की कृपा है। मनुष्य का हाथ का अगूठा अन्य पशुओं की अपेक्षा प्रत्येक अगुली के सामने सरलता से आ जाता है।

विकसित वाणी यन्त्र

पशुओं की तुलना में मानव की एक और विशेषता यह है कि मानव की वाणी विकसित है और इस विकसित वाणी द्वारा वह एक दूसरे मनुष्य की भाषा समझ लेते हैं और उनके अनुभवों से लाभ उठा सकते हैं। वाणी के आधार पर ही लिखित भाषा बन सकी। लिखित भाषा तथा वाणी के माध्यम द्वारा एक पीढ़ी का ज्ञान दूसरी पीढ़ी को बिना किसी कठिनाई के प्राप्त हो जाता है और विज्ञान में प्रगति होती है

मानव की तीसरी और महत्वपूर्ण विशेषता है उसका विकसित मस्तिष्क। मनुष्य मस्तिष्क का प्रधान भाग जिसे सेरिब्रम (Cerebrum) कहते हैं वह पशु की अपेक्षा बहुत उन्नत है। वह कार्य और कारण के अर्थ में विश्लेषण कर सकता है और इसके आधार पर साधारण नियम बना देता है अर्थात् "यदि ऐसा किया तो इसका यह परिणाम होगा।" और इन नियमों के आधार पर भविष्य की सुरक्षा के लिए बहुत बड़ी योजना बना लेता है।

विकसित मस्तिष्क

प्रश्न ६ मानव की क्रमिक प्रगति पर प्रकाश डालिये। अथवा मानव प्रगति की कहानी लिखिये।

उत्तर—पशुओं की तुलना में मनुष्य को जो श्रेष्ठताएँ तथा सुविधाएँ प्राप्त हैं उनकी सहायता से मनुष्य जटिल से जटिल समस्याओं को सुलझाने में सफल हुआ है। आधुनिक वैज्ञानिक आविष्कार इसका स्पष्ट उदाहरण है। आज से लगभग ६०० वर्ष पूर्व ऐतिहासिक काल प्रारम्भ होता है। उस काल में मनुष्य ने पत्थर और धातु के अस्त्र शस्त्र बनाये और प्रथमबार आग का प्रयोग सीखा। भाषा का निर्माण किया, पशु पालन सीखा और कृषि उद्योग प्रारम्भ किया। धीरे धीरे पहाड़ों की कन्दराओं के स्थान पर घर बना कर उनमें रहना आरम्भ किया। साहित्य, कला, दर्शन, विज्ञान का विकास हुआ, पृथ्वी की खोज हुई। किन्तु विज्ञान की जितनी उन्नति पिछले अढ़ाई तीन सौ वर्षों में हुई है इतनी इससे पहिले नहीं हुई थी। पिछले तीन सौ वर्षों में, भाप, पेट्रोल, बिजली के उपयोग तथा मशीनों के आविष्कार से मनुष्य के भौतिक जीवन में आमूल क्रान्ति हुई। इसी प्रकार अन्यान्य जीवनोपयोगी वस्तुएँ निर्माण होती गईं।

मानव प्रगति की कहानी

धीरे-धीरे समाज व्यवस्था बनी और दिनोंदिन इसमें फेर बदल होते गये। सामाजिक नियम बने, अर्थ व्यवस्था बदली और हम एक लम्बे प्रयत्न के पश्चात् आज के व्यवस्थित एवं नियम बद्ध समाज में पहुंच गये।

आधुनिक युग की विशेषता

विज्ञान की उन्नति हुई और विज्ञान हमारे जीवन का अंग बन गया।

यद्यपि समाज व्यवस्था का रूप बहुत निखर चुका है, वैज्ञानिक उन्नति बहुत अधिक हो चुकी है, किन्तु अभी भी मनुष्य ने प्रकृति पर पूर्ण विजय प्राप्त की है ऐसा कहना कठिन है, अभी भी एक बड़ा अकल्पनीय मार्ग तय करना शेष है।

प्रश्न ७. आधुनिक वैज्ञानिक आविष्कारों का सामाजिक जीवन के निर्माण तथा विकास पर क्या प्रभाव पड़ा है ?

वैज्ञानिक आविष्कार और सामाजिक विकास

उत्तर—वैज्ञानिक आविष्कारों का सदा ही मानव जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा है। जैसे-जैसे मनुष्य प्रकृति पर अधिकार प्राप्त करता आया है वैसे ही सामाजिक विकास में भी उलट फेर होता रहा है।

मनुष्य प्रारम्भिक जीवन में फलाहारी था किन्तु आग और शस्त्र के निर्माण से वह मांसाहारी हो गया। और इसी मांसाहारी प्रवृत्ति ने उसे पशु पालने पर बाध्य किया। खेती की व्यवस्था होने से गांव का निर्माण हुआ और एक नियन्त्रित समाज जीवन स्थापित हुआ।

जल, भाप, तेल, तथा बिजली से बड़े-बड़े कारखाने चलने लगे। बड़े-बड़े शहरों का जन्म होने लगा और प्राचीन ग्रामीण सभ्यता धीरे-धीरे बदलने लगी। इस प्रकार स्पष्ट है कि वैज्ञानिक आविष्कारों का सामाजिक जीवन के निर्माण तथा विकास पर बड़ा प्रभाव पड़ा है।

विज्ञान द्वारा उत्पन्न सामाजिक विषमता

बड़े-बड़े कल कारखानों के निर्माण से राष्ट्रीय सम्पत्ति तो बहुत बढ़ी किन्तु वितरण की योजना सन्तोष जनक न होने से समाज दो भागों में बँट गया है। एक ओर पूंजीपति हैं और दूसरी ओर मजदूर तथा गरीब लोग। और यह वर्ग भेद अधिकाधिक तीव्र होता जा रहा है। अब इस बात की आवश्यकता है कि वैज्ञानिक मस्तिष्क इस ढंग से काम करें कि वैज्ञानिक आविष्कार लोक हित में सहायक सिद्ध हों और यह वर्ग भेद और कलह समाप्त हो।

———

अध्याय २

दूरी पर विजय

यातायात के साधनों का विकास

प्रश्न ८. स्थल यातायात के साधनों का विकास कैसे हुआ ? उनके विकास में क्या कठिनाइयाँ आई तथा उन पर किस प्रकार विजय प्राप्त की गई ?

यातायात के साधनों का क्रमिक विकास

उत्तर—आदि काल से मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए साधन जुटाता आया है। प्रारम्भ में मनुष्य के पास एक स्थान से दूसरे स्थान तक आने जाने के लिए तथा बोझा ढोने के लिए कोई साधन न थे। धीरे-धीरे इस ओर आवश्यकता प्रतीत होने लगी कि दूसरे स्थान के व्यक्तियों से सम्पर्क लाने के लिए कोई ऐसा साधन चाहिए जिससे दूरी पर विजय पाई जा सके।

इस प्रकार समय और स्थानानुकूल हाथ गाड़ी, बैल गाड़ी, घोड़ा गाड़ी और ऊँट गाड़ी आदि बहुत से साधनों का आविष्कार हुआ। इन सब साधनों में केवल एक पहिये की ही करामात है और आगे चल कर इस पहिये के आधार पर ही इन साधनों में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए। जैसे-जैसे भारी-भारी गाड़ियाँ बनी वैसे-वैसे सड़कों में भी सुधार होता गया और मैकडम जैसी सड़कों का निर्माण हुआ।

रेल और मोटर के आविष्कार से स्थल यातायात में वर्णनीय परिवर्तन हुए। एक दूसरे स्थान से आना जाना ही सरल नहीं हुआ अपितु उपभोग्य वस्तुओं का आयात निर्यात भी सम्भव हो सका। भाप के इन्जन से चलने वाली रेल गाड़ी बनाने का श्रेय जार्ज स्टीफन्सन का है। धीरे-धीरे रेल गाड़ियों

मे बहुत परिवर्तन हुये, आज कल रेल गाड़ियों मे कई प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त हैं ।

भापके इन्जन भारी होने के कारण पैट्रोल मे चलने वाले हलके इन्जनों का आविष्कार किया गया । सन् १८६१ मे पैट्रोल मे चलने वाली पहिला गाडी बनी । १६१५ में बहुत थोडी गाडिया थीं । धीरे-धीरे इनकी सख्या में वृद्धि होती गई । आज कल मोटरें १०० माल प्रति घण्टा की गति मे चली हैं । इस प्रकार स्थल यातायात के साधन विकास करते आये हैं । और इनमें आगे भी विकास की सम्भावना है ।

प्रारम्भ मे वैज्ञानिकों को बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पडा ।

कठिनाइया और उन पर विजय

लोग इन आविष्कारों से डरते थे । पेरिस में एक बार भाप का इन्जन फट गया जो ट्रेवेथिक ने बनाया था । इस घटना से लोग भाप से डरने लगे और फ्रांस मे इसकी प्रगति बन्द हो गई । इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे लोग थे जिनके स्वार्थों को इन आविष्कारों मे ठेस लगती थी उन्होंने इन आविष्कारों का बड़ा विरोध किया । कई वैज्ञानिकों को तो अपनी जान बचा कर भाग जाना पडा । धीरे-धीरे लोग समझने लगे और वैज्ञानिकों के धैर्य तथा साहस ने अन्त में इन कठिनाइयों पर विजय पाई और यह सब साधन आज हम देख सके ।

प्रश्न ६ जल यातायात के विकास की कहानी सक्षेप मे लिखिये । आधुनिक जहाजों के बनने से सामाजिक जीवन में क्या परिवर्तन हुआ ?

उत्तर—यातायात के लिये नदी का उपयोग करना मनुष्य ने बहुत पहिले सीख लिया था ।

जल यातायात

लकडी के लट्ठों को जोड के बेडा बनाया जाता था । किन्तु यह या तो पानी के बहाव के साथ चल सकता था या पाल बान्धकर हवा की दिशा की ओर चल सकता था । अनुकूल वायु न रहने से नावें रुक जाती थीं । इस समस्या का हल भाप के इजन से पूरा किया गया और नावें इच्छित दिशा की ओर चलाई जा सकीं ।

सबसे पहिला स्टीम बोट डेनिस पेपिन ने बनाया। सन् १८१२ में पहिला पैसिंजर स्टीमर क्लाइड नदी में उतारा गया जिसे हेनरी बेल नामी नवयुवक ने बनाया था। विलखन नामी व्यक्ति ने लोहे का स्टीमर बनाया जिसका नाम "विलकन" रखा, उसकी इस सफलता पर उसके विरोधी भी उसके मित्र बन गये। पहिले जहाज़ों मे पीने का पानी नहीं होता था, किन्तु आजकल एक जहाज एक शहर के बराबर होता है। और शहर के समान सब सुविधायें बाजार-थियेटर आदि उसमें प्राप्त होती हैं। इसमें लगभग २००० व्यक्ति यात्रा कर सकते है।

जल यात्रा की कठिनाइयों पर विजय

जहाज़ों के बनने से सामाजिक जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ा है। जहाजों से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में बड़ी वृद्धि हुई। भारी मशीनें तथा अन्य उपयोगी वस्तुयें बड़ी सरलता से एक देश से दूसरे में आ जा सकती है। पहिले लोग उतना ही पैदा करते थे जितना उन्हें अपने गुजारे के लिये पर्याप्त था। किन्तु अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार बढ़ने से दुनिया भर की उपज भी दिनों दिन बढ़ती जा रही है। व्यापार वृद्धि के तथा अधिकाधिक सम्पर्क बढ़ने के साथ साथ युद्ध और साम्राज्यवाद भी अधिक व्यापक होगये है। जहाजों के आविष्कार के पूर्व युद्ध उन्हीं देशों में हो सकता था जिनके बीच मे स्थल मार्ग हो और यातायात की सुविधा हो सके। जहाजों के आविष्कार ने इस समस्या को सरल कर दिया और अब समुद्र के मार्ग से भी साम्राज्य वृद्धि हो सकती है। इस प्रकार जल यातायात के आविष्कार से हमारे सामाजिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

सामाजिक जीवन पर प्रभाव तथा व्यापारिक महत्व

प्रश्न १० मनुष्य ने आकाश में उड़ने के क्या क्या प्रयत्न किये तथा अन्त में वह कैसे सफल हुआ?

उत्तर—मनुष्य स्वभाव से महत्वाकांक्षी है। दूरी पर विजय प्राप्त करने के लिये उसने स्थल और समुद्र इन पर ही विजय प्राप्त नहीं की अपितु आकाश को भी पराजित कर ही दिया। यद्यपि रामायण तथा महाभारत

आकाश पर विजय

काल में बहुत शीघ्रगामी वायुयान थे किन्तु बीच मे एक ऐसा समय आया जब यह सब साधन प्राय लुप्त हो चुके थे। और इस के पश्चात् इनका पुन श्रीगणेश बीसवीं शताब्दी मे हुआ।

पख लगाकर उडने का प्रयत्न

प्रारम्भ में पक्षियों की भान्ति पख लगाकर उडने के प्रयत्न किये गये किन्तु शीघ्र ही यह विश्वास होगया कि मनुष्य के समान भारी प्राणी पंख लगाकर नहीं उड सकता। इङ्गलैण्ड का एक पादरी पख लगाकर छत से कूद पडा उसका विचार था कि वह सुरक्षित नीचे आजायगा किन्तु वैसा न हुआ और उसके पाव टूट गये।

गुब्बारो से उडने के प्रयत्न

इसके पश्चात् गर्म हवा मे गुब्बारे उडाये गये और उनके द्वारा उडने के प्रयत्न किये गये। १८ वीं शताब्दी तक मनुष्य ने गुब्बारों में बैठकर उडना प्रारम्भ कर दिया था। १८७४ में राबर्ट और चार्लस् दो व्यक्ति हाईड्रोजन के बैलून में बैठकर १० हज़ार फुट की ऊचाई तक उडे थे।

भाप के इंजन के आविष्कार ने गुब्बारों में भाप के इजन लगाकर प्रयोग किये गये कारण गैस से गुब्बारे को इच्छित दिशा की ओर ले जाना सम्भव नही था। परन्तु भाप का इजन भारी होने से वह अधिक ऊचा नहीं उड सकता था। इसलिये आधुनिक ढग के पैट्रोल इजन की आवश्यकता प्रतीत हुई।

हवाई जहाज़ का आविष्कार

आधुनिक प्रकार का वायुयान सबसे पहिले राबर्ट बन्धुओं ने १६०३ में बनाया जो मशीन से चलता था। आज वायु यात्रा अत्यन्त सरल हो गई है। आज वायुयान प्राय. २०० मील प्रति घण्टा की गति से चलते हैं। उनमें भारी बोझ भी एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जा सकते है। पैट्रोल इंजनों के विकास से वायुयात्रा मे बहुत विकास हुआ है।

प्रश्न ११ "वायुयान ने मानव-जीवन मे क्रान्तिकारी परिवर्तन किये है" इस वाक्य पर एक सरल निबन्ध लिखिये।

वायुयान द्वारा दूरी पर विजय

उत्तर—वायुयान के विकास से पहिले यद्यपि यातायात के और बहुत साधन थे किन्तु फिर भी ससार मे ऐसे बहुत-से स्थान शेष थे जहाँ सरलता से नहीं पहुचा जा सकता था। वायुयान ने वह कठिनाई सरल कर दी। एक स्थान की सभ्यता तथा शिक्षा दूसरे स्थान तक पहुँचाने में वायुयान ने बड़ी सहायता दी है। दूर देशों के लोग ऐसे प्रतीत होते हैं मानो हमारे पड़ोसी हो। हमारे व्यक्तिगत-पत्र तथा समाचार पत्र दूसरे ही दिन दूर देशों में पहुँच जाते हैं।

सघर्ष के क्षेत्र का विस्तार

किन्तु मनुष्य एक महत्वाकाक्षी प्राणी है और उसकी इच्छा सदा दूसरों पर अधिकार करने की रही है और जैसे-जैसे उसे सुविधायें प्राप्त होती गई है वैसे ही वह सदा पाँव फैलाता आया है। वायुयान के आविष्कार से विभिन्न देशों में परस्पर सम्बन्ध स्थापित हुआ और साथ ही साथ साम्राज्य-विस्तार की लिप्सा भी जागृत होती गई और सघर्ष का क्षेत्र विशाल होता गया। विनाशिनी शक्ति को और भी सशक्त करने मे वायुयान का बडा हाथ रहा है। द्वितीय महायुद्ध में वायुयान का सबसे प्रमुख स्थान रहा है। वायुयान द्वारा ही अमेरिका ने जापान पर अणु बम गिराये।

वायुयान द्वारा पल-भर में कहीं का कहीं पहुचा जा सकता है। जिन देशों तक सड़कों अथवा समुद्र के मार्ग से पहुंचने मे बाधायें आती थी वहाँ अब वायुयान द्वारा सरलता पूर्वक पहुंचा जा सकता है। पिछले युद्ध मे जहाँ जाने के लिए और कोई साधन उपयुक्त नहीं था वायुयानों द्वारा पैराशूट से सेनायें उतारी गईं। वायुयान वास्तव में बड़ी उपयोगी वस्तु है। परन्तु यह मनुष्य के आधीन बात है कि वह इसका उपयोग मनुष्य-सेवा के लिए करता है अथवा विनाश के लिए।

प्रश्न १७ रेल के आविष्कार का मनुष्य के आर्थिक तथा सामाजिक-जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा है ?

आर्थिक तथा सामाजिक जीवन पर प्रभाव

उत्तर—रेलों के आविष्कार से मनुष्य के जीवन के सभी क्षेत्रों मे भारी प्रभाव पड़ा। विशेषकर आर्थिक-क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं। देहातों मे पहिले किसान लोग उतना ही अन्न उत्पन्न करते थे जितना उनको अपनी आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त होता था। अनाज को मंडियों मे ले जाने की प्रथा रेलगाडी तथा मोटरों के आविष्कार से प्रारम्भ हुई। मुद्रा का प्रसार भी इसके पश्चात् ही हुआ। लोग मण्डियों में माल ले जाते और वहाँ से पैसे ले आते। रेलो के आविष्कार से अकाल-पीड़ित स्थानों में अनाज पहुचाने की सुविधा हुई। आज अनाज का अकाल कम दिखाई देता है। आजकल अकाल केवल पैसे का है। यदि पैसा हो तो अनाज मगाया जा सकता है। अनाज तथा अन्य वस्तुओं का मूल्य सब स्थानों पर समान हो गया है। जहाँ पर भाव अधिक है वहाँ कम भाव वाले स्थान से अनाज तथा अन्य वस्तुयें पहुँच जाती हैं। इस प्रकार भाव सब स्थानों पर समान रहता है।

भारत में पहिले केवल कृषि ही मुख्य उद्योग था। किन्तु रेलों के विकास से भारत के कोने-कोने मे भारी-भारी मशीनें पहुचाई गईं और इस प्रकार यहां पर भी औद्योगीकरण की नींव डाली गई। आज भारत में बहुत-से बड़े-बड़े कारखाने हैं।

सामाजिक-क्षेत्र में भी बड़े परिवर्तन हुये। देहाती लोग कल-कारखानों के कारण शहरों में आकर बस गये और उनके द्वारा शहरी जीवन के चिन्ह गावों में भी गये। एक दूसरे स्थान के व्यक्तियों से सम्पर्क आया, सभ्यता का विकास हुआ। तीर्थ-स्थानों पर जाने के लिए सरलता हुई। लोगों का सकुचित दृष्टिकोण समाप्त हुआ और उनमे राष्ट्रीयता की भावना जागृत हुई उनका दृष्टिकोण स्थानीय न रहकर भारतीय बना।

इस प्रकार आर्थिक तथा सामाजिक उन्नति में रेलो के आविष्कार ने बड़ी ही सहायता दी है।

प्रश्न १३ रेल-आविष्कार की कहानी संक्षेप से लिखिए।

उत्तर—आजकल धरती पर यातायात का प्रमुख साधन रेलगाड़ी है।

भाप का उपयोग रेलगाड़ी

पहिले रेलगाड़ी पर यात्रा करना हानिकारक समझा जाता था। सन् १६५५ में एक अंग्रेज लार्ड वूस्टर ने भाप का इंजन बनाया जो केवल पम्प के रूप में ही रहा। १७६९ में क्यूनो नामक एक फ्रांसीसी व्यक्ति ने पहिली भाप से चलने वाली गाड़ी बनाई, किन्तु उसका इंजन फटने से लोग डरने लगे और वहाँ पर उसकी प्रगति बन्द होगई। सन् १८०२ में ट्रेविथिक ने पहली रेल पर चलने वाली भाप-गाड़ी बनाई। परन्तु वास्तविक भाप से चलने वाली रेलगाड़ी बनाने का श्रेय जार्ज स्टीफनसन को है। सन् १८२५ में संसार की सबसे पहली रेलगाड़ी रेल की पटरियों पर चली।

रेल-यात्रा की प्रारम्भिक अवस्था

पहिले-पहिले रेलगाड़ी चलाने में बड़ी कठिनाइयाँ आईं। लोग गाड़ी से भयभीत थे इसलिए इंजन के आगे एक व्यक्ति चलता था। यदि कोई जानवर आदि आगे आजाता था तो बन्दूक में मटर के छर्रे भर कर उससे मारकर हटाते थे। प्रकाश की भी कोइ व्यवस्था न थी। गाड़ी के आगे एक बड़ी अंगीठी जलाई जाती थी। उसी से प्रकाश का काम लिया जाता था। कोयले के स्थान पर लकड़ी जलाई जाती थी। उस समय सिगनल की भी व्यवस्था न थी।

आधुनिक रेलगाड़ी तथा बाधाओं पर विजय

आधुनिक-युग में रेलों का जाल बिछाने के लिए पहाड़ों को काट-काट कर लाइनें बिछाई गई हैं। हर प्रकार की बाधाओं पर विजय पाने का पूरा प्रयत्न किया गया है। आज रेलगाड़ी में बहुत विकास हो चुका है। उसमें बिजली के पंखे लगे होते हैं। गर्मियों में ठंडक पहुंचाने के लिए एयर-कूलर (Air Coolers) का प्रबन्ध है। गाड़ियों की गति में भारी परिवर्तन हुआ है। इनकी गति १०० मील प्रति घण्टा से १२५ मील प्रति घण्टा तक पहुंच चुकी है। लन्दन जैसे शहर में जहाँ भूमि के ऊपर गाड़ी चलाने के लिए स्थान नहीं है वहां भूमिगत

रेल चलाने के लिये सुरंगें बनाई गई है। बडी-बडी नदियों पर पुल बनाये गये हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि रेल-यातायात में धीरे-धीरे बहुत विकास हो चुका है और भविष्य मे रेलों मे बहुत सुधार की आशा की जाती है।

प्रश्न १४ मोटरगाड़ी के विकास पर प्रकाश डालिये तथा उसका सामाजिक जीवन पर प्रभाव बताइये।

उत्तर—यातायात के साधनों मे मोटरगाडी का महत्वपूर्ण स्थान है।

मोटरगाडी का विकास

भाप के इंजन मे कोयले और पानी की आवश्यकता के कारण वह बेडोल-सा हो जाता है, क्योंकि कोयला और पानी बहुत जगह घेर लेते हैं। पैट्रोल इंजनों ने इस कठिनाई को दूर कर दिया। पैट्रोल इंजन के आविष्कार से वैज्ञानिकों का ध्यान पैट्रोल से चलने वाली गाडी की ओर गया। १८८९ ईस्वी मे डमलर ने पैट्रोल का एक इंजन बनाया और उसे एक साईकिल में लगाया। इस आविष्कार के आधार पर ही आधुनिक मोटरगाड़ी बनी। १८९१ के लगभग पैट्रोल से चलने वाली गाडी बनी। आरम्भ में मोटरगाडी की गति १५ मील प्रति घण्टा थी। १९१५ मे लन्दन में बहुत थोडी मोटरगाडियाँ थीं और १९२० मे वहा ४९४१ मोटर गाडिया हो गई। मोटर में हजारों के लगभग पुर्जे लगते हैं। भूमि पर चलने वाली गाडियों में सबसे तीव्र गति मोटर की है। एक अंग्रेज जॉन कॉब ने ३६६०७ मील प्रति घंटा की गति से मोटर चलाकर दिखाई थी।

सामाजिक महत्व

मोटरगाडी के आविष्कार ने सामाजिक-जीवन पर बडा गहरा प्रभाव डाला है। देहात के लोग शहरों मे आकर बस गये हैं। उनके द्वारा शहरी-जीवन के चिन्ह देहातों मे गये हैं। आजकल शहर वाले देहातों में तथा देहात वाले शहरों से विवाह करने लगे हैं। मोटरगाडी ने देहाती तथा शहरी जीवन मे सम्पर्क स्थापित कर दिया है। मोटरगाडी के विकास से हमारे रीति रिवाजों में बडा अन्तर पडा है। उनमें अब इतनी कट्टरता नहीं रही है। छुआछूत का भूत भी अब सर से उतरने लगा है। इस प्रकार सामाजिक क्षेत्र मे मोटरगाडी द्वारा क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं।

प्रश्न १५ यातायात के साधनों के विकास में पहिये का क्या महत्व है ? सडकों के विकास पर भी एक दृष्टि डालिये।

पहिये का महत्व

उत्तर—यातायात के जितने भी आविष्कार हुए हैं उनमें सबसे अधिक महत्व पहिये का है। पहिये के द्वारा ही मानव दूरी पर विजय पाने में सफल हुआ। प्रारम्भ में सम्भव है मनुष्य पहिये को स्वयं खींचते होंगे। फिर उसमें पशु जोतना आरम्भ किया होगा। प्राचीन सिन्धु और सुमेरियन सभ्यता में पहिये वाली गाडियों के प्रयोग में लाने का उल्लेख मिलता है। कहा जाता है कि पहिये का आविष्कार अब से ४५०० वर्ष पूर्व हुआ था। इस पहिये के आविष्कार ने ही आधुनिक यातायात के साधनों के आविष्कार का मार्ग खोल दिया था।

सडकों का विकास

पहियेदार गाडी के चलाने के लिए सडकों की आवश्यकता हुई। साधारण भूमि पर चलने से पहियों की गहरी-गहरी लीकें बन जाती थीं जिसके कारण वह मार्ग गाडी चलाने के योग्य नहीं रहता था। इसलिए ऐसी सडकें बनाने की आवश्यकता हुई जिन पर भारी भारी गाडियाँ भी चल सकें और सडक न टूटे। परिणाम स्वरूप आज हम देखते हैं कि सडकों के विकास तथा बनावट में भारी उन्नति हुई है। भारत में अनेक शहरों को मिलाने वाली ग्राण्ड ट्रंक रोड (Grand Trunk Road) बहुत प्रसिद्ध है। संसार की सबसे बड़ी सड़क अमरीका में है जिसकी लम्बाई २२१६ मील है।

———

अध्याय ३

दूरी पर विजय

विचार-वाहन के साधनों का विकास

प्रश्न १६ पिछले दो-सौ वर्षों में संदेशवाहन में क्या उन्नति हुई है ?

अतीत और वर्तमान

उत्तर—प्राचीन-काल में संदेश-वाहन की कोई सुविधा न थी। जितनी दूर तक मनुष्य की आवाज जा सकती थी अथवा जितने अन्तर पर संकेत आदि किये जा सकते थे, उतने ही स्थान तक संदेश भेजे जा सकते थे। कहीं-कहीं पर प्रकाश आदि से भी संदेश भेजे जाते थे। विचार-वाहन के साधन जो हम आज अपने चारों ओर देखते हैं वह तो केवल पिछले सौ-दोसौ वर्षों की देन है। महाभारत काल में इन साधनों के बहुत अधिक विकसित होने के प्रमाण मिलते हैं। संजय ने घर बैठे ही महाराज धृतराष्ट्र को युद्ध-क्षेत्र का सारा हाल ज्यों का त्यों बता दिया था। महाभारत के पश्चात एक युग ऐसा आया जब ये साधन प्राय लुप्त-से होगये थे। इसीलिये हम इन साधनों को आधुनिक युग की देन कहते हैं।

पिछले दो सौ वर्षों में उन्नति

बीसवीं शताब्दी में छापाखाना, डाक, तार, रेडियो और टेलीफोन आदि साधनों का विकास हुआ और विचारों के आदान-प्रदान में अनेक सुविधायें हुईं। आज लाखों की संख्या में समाचार-पत्र प्रतिदिन छपते हैं तथा अन्यान्य पुस्तकें छपती हैं जिनसे समाचार तथा विचारों के आदान-प्रदान में बड़ी सहायता मिलती है। रेडियो द्वारा तो

मानो सारा संसार ही एक हो गया है। निश्चित समय पर हम रेडियो द्वारा प्रत्येक देश के समाचार सुन सकते हैं। टेलीफोन द्वारा सैंकड़ों मील दूर पर बैठे व्यक्ति से स्वयं बात कर सकते हैं। समाचार पत्रों को सही और ताज़ा समाचार देने के लिए टेलिप्रिंटर का आविष्कार हुआ है। टेलिप्रिंटर द्वारा समाचार स्वयं लिपिबद्ध होते जाते हैं।

इस प्रकार पिछले दो सौ वर्षों मे सन्देशवाहन ने बहुत उन्नति की है और दुनिया का कोई ऐसा क्षेत्र शेष नहीं बचा है जहां समाचार प्राप्ति की दृष्टि से मनुष्य की पहुंच न हो।

प्रश्न १७ छापाखाने के क्रमिक विकास पर प्रकाश डालिये।

उत्तर—छपाई के आविष्कार से पहिले ग्रन्थ हस्तलिखित होते थे।

छापाखाने का महत्व

इसलिए वह कम मात्रा में तथा महगे होते थे जिस के कारण वह सर्व साधारण की पहुँच के बाहर रहते थे। छापाखाने के आविष्कार से अधिकाधिक पुस्तकें छपने में बडी सहायता मिली और विद्वान लोगो के विचार तथा उनके अनुभवों से सर्वसाधारण को भी लाभ उठाने का अवसर प्राप्त हुआ।

पुस्तक छपने का सब से पहिला प्रयत्न चीन में हुआ बताया जाता

यूरोप में छपाई का आरम्भ

है। छठी शताब्दी में चीन के लोग लकडी के उभरे हुये टाईप से छोटी-छोटी पुस्तकें छापते थे। आधुनिक ढङ्ग के छापाख़ाने का चलन १५ वीं शताब्दी से हुआ। सन् १४५० में गुटेनबर्ग नामी एक जर्मनी व्यक्ति ने लकडी के अक्षरो द्वारा छपाई का काम आरम्भ किया। और छ वर्ष में बाइबल का संस्करण छप कर तैयार हुआ।

छपाई की मशीनें पहिले हाथ से ही चलाई जाती थी। और एक

छपाई मे प्रगति

व्यक्ति एक घण्टे से भी अधिक मे अढ़ाई सौ के लगभग प्रतियां छाप सकता था। उस समय के काम की यदि आज के छपाई के काम से तुलना करें तो एक आश्चर्यजनक अन्तर प्रतीत होगा। आज छोटी-छोटी मशीनें भी बिजली से चलाई जाती हैं। छोटे कागज छापने की मशीनें अलग है और बडे कागजों की

अलग। समाचार पत्र छापने वाली मशीनों पर एक घण्टे में ४० हज़ार के लगभग समाचार पत्र छापे जाते हैं। पहिले टाईप बनाने अथवा ढालने का कार्य हाथ से किया जाता था अब उसके लिए टाईप ढालने की मशीनें (Mono Caster) काम मे लाई जाती हैं। हाथ से कम्पोज करने के स्थान पर लाइनो टाइप (Lino type) तथा मोनो कम्पोज़र (Mono Composer) मशीनों को प्रयोग म लाया जाता है। इस प्रकार छापाखाने के काम में धीरे-धीरे उन्नति होती गई और यह अपने आज के विकसित स्वरूप को प्राप्त कर सका है।

प्रश्न १८ छापाखाने ने मनुष्य समाज की क्या सेवा की है?

उत्तर—शिक्षा द्वारा समाज में क्रान्ति लाने में जितना महत्वपूर्ण कार्य छापाखाने ने किया उतना शायद ही किसी अन्य आविष्कार ने किया हो। छपाई का काम प्रारम्भ होने से पहिले किताबें हाथ से लिखी जाती थी जिससे वह सर्व साधारण व्यक्तियों तक नहीं पहुँच सकती थी और इसलिए साधारण लोग पढ़ने लिखने से वञ्चित रह जाते थे।

छापाखाने का महत्व

छापाखाने के आविष्कार से ज्ञान की वृद्धि हुई। आज एक आने के समाचार पत्र द्वारा विदेशी वैज्ञानिकों की नित्य नई खोजों के बारे में पता लगता रहता है और उनके परीक्षणों की रिपोर्ट भी कई बार समाचार पत्रों में छपती रहती है इस प्रकार विद्या के आदान प्रदान से मनुष्य के ज्ञान में बड़ी वृद्धि हुई उसकी बुद्धि का विकास हुआ और अपनी विकसित बुद्धि से मनुष्य जीवन को सुखी बनाने के लिए उन विद्वानों ने बहुत से सामाजिक नियम बनाये और एक व्यवस्थित समाज जीवन की स्थापना की।

जिस समय छापाखाने का नाम भी लोग नहीं जानते थे उस समय मरते वक्त विद्वान लोग अपनी विद्या अपने साथ ले जाते थे और आने वाली सन्तान उनके अनुभव तथा उनकी खोज से लाभ नहीं उठा सकती थी कारण उस समय ऐसी कोई व्यवस्था नहीं थी जिससे उनके अनुभव तथा उनके विचार लिपिबद्ध किये जा सकते। आज जैसे ही कोई विद्वान कोई विचार

प्रकट करता है अथवा जैसे ही वैज्ञानिक खोज होती है उस पर तुरन्त ही हज़ारों पुस्तकें छप जाती हैं और आने वाली सन्तान भी उनसे लाभ उठा सकती है। इस प्रकार एक पीढ़ी का ज्ञान दूसरी पीढ़ी तक पहुचाने में छापाखाने ने बड़ी सहायता की है।

हर वर्ष स्कूल और कालिज की हजारों पुस्तकें छपती हैं और नये-नये विचारों का खूब प्रसार होता है इस प्रकार विद्या के प्रसार में छापाखाने ने बड़ा ही सराहनीय कार्य किया है।

प्रश्न १६ तार के आविष्कार पर प्रकाश डालिये।

उत्तर—संकेतों द्वारा समाचार पहुचाने की प्रथा बहुत प्राचीन है।

तार

धूप के सामने शीशा रख कर अथवा रात्रि मे प्रकाश द्वारा संकेत किये जाते थे। यह सब एक सीमित क्षेत्र में ही हो सकता था। जहा तक प्रकाश दिखाई दे सके वहीं तक यह संकेत उपयोगी हो सकते थे। और दूर दूर के स्थानो पर समाचार पहूचाने की कोई व्यवस्था न थी। तार का आविष्कार १८ वीं शताब्दी मे हुआ और इसके द्वारा दूर स्थानो पर समाचार भेजने सरल हो गये।

तार का आविष्कार

वास्तव मे तार द्वारा समाचार नहीं भेजे जाते। तारों मे से बिजली की शक्ति का प्रवाह बहता है। जो समाचार भेजा जाता है वह बिजली की धारा के रूप में होता है। तार का सन्देश पाने वाला व्यक्ति उसका अर्थ समझ लेता है। इस प्रकार मनुष्य ने शब्दों को बिजली की धारा का रूप देकर अधिक व्यापक कर दिया है।

प्रारम्भ में तार के लिए एक डिबिया काम मे आती थी जिसमे सुई होती थी किन्तु आज कल एक और यन्त्र जिसे डेसी कहते है और जो रेलवे स्टेशनों पर खट-खट करता रहता है काम में लाया जाता है।

केबल व रामेश्वर

धरती पर तार द्वारा समाचार भेजने का प्रबन्ध तो व्यापक हो ही गया था किन्तु आजकल समुद्र पार भी तार द्वारा समाचार भेजे जाते है। इसके लिए समुद्र के अन्दर तार बिछाये जाते है। जिन्हे केबल (Cable) कहते

हैं। और इन केबल्स द्वारा सन्देश दूर देशों तक भेजे जाते हैं। जिस प्रकार श्री रामचन्द्र जी ने लङ्का तक पहुचने के लिए सेतु बन्ध रामेश्वर बनाया था इसी प्रकार आधुनिक वैज्ञानिक ने केबल बन्ध रामेश्वर द्वारा समुद्र पार समाचार भेजने की योजना की हैं।

प्रश्न २०. टेलिफोन, टेलिविजन, टेलिप्रिंटर इन तीनों में क्या भेद है स्पष्ट कीजिये ?

उत्तर—यद्यपि टेलिविजन और टेलिप्रिंटर बोलने मे एक से प्रतीत होते है तथापि इन तीनों में कार्य की दृष्टि से मौलिक भेद हैं।

टेलिफोन

टेलिफोन आज कल बहुत व्यापक हो गया है। प्रति सैकड़ा व्यक्तियों में २ व्यक्ति टेलिफोन का उपयोग करते हैं। टेलिफोन द्वारा दूर पर बैठे हुए दो व्यक्ति इसी प्रकार बात चीत कर सकते है मानो वह एक ही कमरे म बैठे हो। टेलिफोन मे बात सुनने के लिए तथा बोलने के लिए अलग यन्त्र होते हैं जिन्हें क्रमश रिसीवर (Receiver) और ट्रासमिटर (Transmitter) कहते है। टेलिफोन का एक डायल होता है। डायल को जिस नम्बर पर घुमाया जाय उसी नम्बर से बात चीत की जा सकती है। आज कल बड़ी-बड़ी फर्मों मे जहा कई टेलिफोन होते है, विनिमय कार्यालय अथवा (Exchange) का प्रबन्ध होता है। जब किसी व्यक्ति को उस कार्य के किसी नम्बर से बात करनी हो तो वह पहिले विनिमय कार्यालय (Exchange) का नम्बर मिलायगा और फिर उससे अपना इच्छित नम्बर माग लेगा। टेलिफान के कारण ही ध्वनि चित्रों के आविष्कार की ओर वैज्ञानिकों का ध्यान गया था।

टेलिविजन

टेलिविजन का अभी व्यापक प्रचार नहीं हुआ हैं। यह अभी तक भी अमेरिका के अध्ययन शालाओं तक सीमित है। किन्तु शीघ्र ही इसके भी प्रकाश में आने की बड़ी सम्भावना है। जिस प्रकार आज हम रेडियो द्वारा गाने तथा नाचने की आवाज सुनते हैं उसी प्रकार टेलिविजन द्वारा गाने तथा नाचने वाले व्यक्ति को प्रत्यक्ष देख सकेंगे।

टेलिप्रिंटर

टेलिप्रिंटर का भी पर्याप्त प्रचार हो गया है और लगभग प्रत्येक दैनिक समाचार पत्र के कार्यालय में आज कल टेलिप्रिंटर मिलता है। समाचार भेजने वाला व्यक्ति एक टाइप राईटर पर समाचार टाईप करता है और वह समाचार उसी समय एक साथ हज़ारों टेलिप्रिंटरों पर टाईप होते रहते हैं। इस प्रकार समाचार स्वय लिपि बद्ध होते जाते हैं और अशुद्धि की भी कम सम्भावना रहती है।

प्रश्न २१ रेडियो के विकास पर प्रकाश डालिये तथा सामाजिक दृष्टि से इसका महत्व प्रदर्शित कीजिये।

उत्तर—रेडियो आधुनिक युग का सबसे चमत्कार पूर्ण आविष्कार है।

रेडियो

महाभारत काल में इस प्रकार के यन्त्रो का उल्लेख मिलता है किन्तु महाभारत और आज के युग के बीच में एक ऐसा युग आया जब यह सब साधन प्राय लुप्त हो चुके थे और उस समय का मनुष्य रेडियो के समान आविष्कार की कल्पना भी नहीं कर सकता था।

रेडियो के आविष्कार का श्रेय इटली के एक युवक मारकोनी को प्राप्त है। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त मे मारकोनी ने बिना तार के समाचार पहुँचाने का एक प्रदर्शन किया और आगे आने वाले ५०–६० वर्षों मे ही रेडियो ने बहुत भारी उन्नति की, आजकल रेडियो बहुत विकसित स्वरूप को प्राप्त कर चुका है।

रेडियो के आविष्कार से दूर-दूर देशो में निकटतम सम्बन्ध स्थापित हुआ आज यदि कोई महान् व्यक्ति किसी सार्वजनिक सभा मे भाषण देता है तो वह भाषण रेडियो द्वारा प्रसारित किया जाता है। और हम यदि उस भाषण में प्रत्यक्ष रूप से भाग नहीं ले सकते तो अपने घर बैठे रेडियो पर उसे वक्ता के श्रीमुख से सुन सकते हैं।

रेडियो प्रचार और शिक्षा का महत्वपूर्ण साधन है। आधुनिक सरकारों को संकट काल में जनता को सम्भाले रखने तथा जनता को

मार्ग दर्शन कराने में रेडियो बहुत सहायक सिद्ध हुआ है। रेडियो स्टेशन से एक दूसरे देशों के प्रतिनिधियों का प्रत्यक्ष वाद विवाद प्रसारित किया जाता है। नये और पुराने समाचारों पर अनुभवी व्यक्ति अपने विचार व्यक्त करते हैं। इन सब बातों से समाज को शिक्षित बनाने मे और जनता को अच्छा नागरिक बनाने में रेडियो ने बड़ी सहायता दी है।

रेडियो प्रचार का शक्तिशाली साधन

प्रश्न २२. बेतार के तार के आविष्कार द्वारा मनुष्य को क्या लाभ हुआ है ?

उत्तर—बेतार के तार द्वारा सन्देश पहुचाने में किसी तार के माध्यम की आवश्यकता नहीं होती। इसके लिये दो प्रकार के यन्त्रों की आवश्यकता होती है एक वह जिसमे समाचार प्रसारित किये जाते है जिसे ट्रांसमीटर (Transmitter) कहते हैं और दूसरा वह जिससे समाचार प्राप्त किये जाते है जिसे रिसीवर (Receiver) कहते है। ट्रांसमीटर द्वार समाचार अर्थात् वाणी को विद्युत की लहरों में बदल दिया जाता है जो एक सैकिंड में १८६००० मील की यात्रा करती है और रिसीवर उन लहरों को पकड कर उन्हे पुन वाणी का रूप दे देता है।

बेतार के तार के आधार

आजकल बेतार के तार द्वारा बहुत लाभ उठाया जा रहा है। बेतार के तार के आधार पर ही रेडियों का आविष्कार हुआ। आजकल हवाई जहाजों में वायरलैस ट्रांसमीटर तथा रिसीवर लगे रहते हैं। यदि वायुयान को कोई खतरा हो तो चालक ट्रांसमीटर द्वारा स्टेशन पर सूचना भेजता है और उसको बचाने के प्रयत्न किये जाते है। इसी प्रकार मौसिम की खराबी इत्यादि के समाचार रिसीवर द्वारा चालक को मिलते रहते है।

वायुयान यात्रा मे बेतार के तार का उपयोग है

आजकल बिना चालक के वायुयान चलाने के प्रयोग हो रहे हैं। वायुयान का चालक पृथ्वी पर बैठा हुआ वायरलैस ट्रांसमीटर द्वारा ही उस वायुयान को अपने नियन्त्रण में रख सकता है और इच्छित दिशा में ले जा

सकता है तथा सुरक्षित नीचे उतार सकता है। अमेरिका ने अभी हाल ही में एक वायुयान को चालक के बिना चलाने का प्रदर्शन किया था।

संयुक्त राष्ट्र सघ मे प्रत्येक देश ने अपने प्रतिनिधि भेजे हुए हैं। वायरलैस अर्थात् बेतार के तार द्वारा ही उन्हे अपनी सरकार का आदेश मिलता रहता है। और वह ठीक प्रकार से अपनी सरकार का प्रतिनिधित्व कर सकता है। इस प्रकार बेतार के तार ने मनुष्य समाज की बडी सेवा की है। हजारो मीलो पर बैठे हुए भी नदियों, समुद्रो और पर्वतों को लाघकर समाचार एक दूसरे को मिलते रहते हैं।

प्रश्न २३. सन्देश वाहन के आधुनिक साधनों का मानव जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा है ?

यातायात तथा विचार वाहन के साधनो का सामाजिक महत्व

उत्तर—आधुनिक युग मे सन्देश वाहन के अनेको साधन उपलब्ध हैं। रेडियो, वायरलेस, तार, केबल, टेलीफोन, टैलीप्रिन्टर, टैलीविजन इत्यादि यन्त्र दूरी पर विजय प्राप्त करने मे बहुत हितकारी सिद्ध हुये हैं। आधुनिक युग मे दूरी बिलकुल कम हो गई है और राष्ट्रो की भूगोलिक सीमा दूर कर दुनिया भर के लोग एक दूसरे के अधिकाधिक समीप आ गये हैं। हम आज सारी दुनिया की एक सरकार होने के स्वप्न देखने लगे हैं।

दूरी पर इस प्रकार विजय से अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग सम्भव हुआ है। इन साधनों के विकास से ही सयुक्त राष्ट्र सघ के निर्माण तथा कार्य में सुगमता हो सकी। इन देशों के प्रतिनिधि भली प्रकार अपने राष्ट्र के हित की दृष्टि से प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। और कोई गूढ़ समस्या आ पडने पर पल भर में ही वायरलैस द्वारा अपनी सरकार की आज्ञा तथा परामर्श प्राप्त कर सकते हैं।

शिक्षा की दृष्टि से क्रान्तिकारी आविष्कार

रेडियो, शिक्षा और मन बहलाव का अच्छा साधन है। प्रचार की दृष्टि से भी रेडियो ने बड़ा महत्वपूर्ण कार्य किया है। और टैलीफोन तो मानो आज के जीवन का अंग ही बन गया है। प्रत्येक सौ व्यक्तियों में से दो व्यक्ति टैलीफोन का उपयोग करते हैं। व्यापारिक क्षेत्र में

टेलिफोन ने बड़ा ही सराहनीय कार्य किया है। इस प्रकार प्रत्येक आविष्कार ने अपने अपने स्थान पर बड़ा ही कार्य किया है।

अत स्पष्ट है कि सन्देश वाहन के साधनो ने मानव जीवन को सुखी बनाने में बडा काम किया है। इन सब साधनो के कास के विकास के साथ ही जैसे मानव मे मिलन तथा सहयोग के अवसर बढ़े वैसे ही अत्याचार और संहार का क्षेत्र भी व्यापक हो गया, यदि इन साधनो का दुरुपयोग न किया जाय और इन्हें वास्तव मे मानव हित की ओर लगाया जाये तो मानव सही अर्थो में सुख का अनुभव कर सकेगा।

———

अध्याय ४

अभावों एवं श्रम पर विजय

प्रश्न २४. यन्त्र मानव के नये दास हैं, इस वाक्य का अर्थ दो पृष्ठों में उदाहरण सहित समझाओ।

उत्तर—आधुनिक यन्त्रों और श्रम के साधनों के आविष्कार के पूर्व मनुष्य का शरीर ही उसके लिये श्रम का साधन था, किसी भी कार्य के करने के लिये या किसी वस्तु को उत्पन्न करने के लिये मनुष्य अपने शरीर को ही कष्ट देता था। अपने बाहुबल द्वारा ही उसे यह सब कार्य करने पड़ते थे, एक स्थान से दूसरे स्थान तक बोझ ढोने के लिये कोई साधन न था इसलिये मनुष्य बोझे को अपने सर पर रख कर स्वय ही यन्त्र का कार्य करता था। किन्तु इस प्रकार कार्य भी कम होता था और समय भी अधिक लगता था और इसके साथ ही वह कष्टदायी भी प्रतीत होता था। इसलिये मनुष्य ने इस ओर सोचना प्रारम्भ किया कि श्रम के ऐसे साधन खोज निकालने चाहियें जिनसे मनुष्य शरीर इस कष्ट से बच जाये।

पहिले पहिले श्रम के लिये मनुष्य ने दास प्रथा का सहारा लिया।

दास प्रथा

समाज मे जो भी शक्तिशाली व्यक्ति हुआ उसी ने दूसरे व्यक्तियों को अपना दास बना लिया और उन मे काम लिया। धीरे-धीरे दास प्रथा बहुत अधिक जोर पकड़ गई और उस आदमी को अधिक प्रतिष्ठित समझा जाने लगा जिसके पास अधिक दास हों, दास लोग मेहनत मजदूरी करते थे और मालिक उनकी मेहनत से बना हुआ माल खाते थे। दास प्रथा लगभग दुनिया के हर एक भाग में थी, अमरीका में इसका कुछ आधिक्य था। अगस्टस के समय मे एक आदमी के पास ४११६ दास थे।

किन्तु आधुनिक युग मे दास दासियो का स्थान यन्त्रों ने ले लिया है, यन्त्र मानव के नये दास है। जो कार्य पहिले सैकड़ो दास दासियो से कई दिनो मे पूरा नहीं होता था, वह यन्त्रों द्वारा एक आदमी एक ही दिन मे पूरा कर देता है। यन्त्रों द्वारा मनुष्य आज ऐसे ऐसे भारी कार्य कर लेता है जो दास दासियों की किसी भी सख्या से सम्भव नहीं हो सकता था। जितना आटा एक हजार दास एक दिन मे पीस सकते थे उतना आटा एक आदमी यन्त्र से पीस देता है। खेतों मे बीज बोने से काटने तक सारा कार्य आज यन्त्रों द्वारा किया जाता है। खेतों में ट्रैक्टर तथा अन्य मशीनें कार्य करती हैं और इस प्रकार मानव के इन नये दासो द्वारा इतना कार्य हो जाता हैं जो दास दासियों द्वारा सम्भव नहीं हो सकता था। खेतों में पानी देने के लिये अनेकों दास और दासिया लगे रहते थे, आज दो बैल और रहट द्वारा एक आदमी सारे खेत को पानी दे देता है और यहां तक नहीं पानी खींचने वाला पम्प सारे दिन में १००० व्यक्तियों से भी अधिक पानी निकाल देता है।

यन्त्र नये दास हैं

कृषि श्रम से मुक्ति

आजकल कारखानों के निर्माण मे अब लगभग सभी काम यन्त्रों द्वारा होने लगे है। यहा तक कि रोटी भी यन्त्रों द्वारा पकाई जाने लगी है और दास प्रथा प्राय लुप्त हो गई है। अब उनके स्थान पर यन्त्र ही मानव के दास है और कार्य करने में दासों से कहीं दक्ष है।

प्रश्न २५ यन्त्रों ने गृह वधू को किस प्रकार श्रम से मुक्त कर दिया है?

उत्तर—आज कल स्त्रियें समाज सुधार कार्यों में काफी भाग लेती हैं। शिक्षा का प्रचार होने से अब बड़ी उमर होने पर भी स्त्रियें पढ़ने लिखने के लिए समय निकाल ही लेती हैं। आजकल तो स्त्रियें राजनैतिक क्षेत्र में भी काफी भाग लेती है। किन्तु यह सब तभी हो सकता है जब उनके पास यह कार्य करने के लिए पर्याप्त समय हो।

यन्त्र गृह वधू के मुक्तिदाता

आजकल स्त्रियों को घरों में उतना कार्य नहीं करना पड़ता जितना कि आधुनिक यन्त्रों तथा श्रम साधनों के विकास से पहिले करना पड़ता था। पहिले स्त्रियें जैसे ही सवेरे सोकर उठती तो काम में लग जाती और रात को सोते तक उन्हें घर के काम से फुरसत नहीं मिलती थी। किन्तु आजकल श्रम साधनों के विकास से गृह वधू घर के कामों से मुक्त हो गई है। अब उसके पास सामाजिक जीवन में भाग लेने के लिए पर्याप्त समय होता है। अब वह मुक्त है।

यन्त्रों से कपड़ा बुनना

आज कल उसे सवेरे उठते ही आटा पीसना नहीं पड़ता। मशीन उसका आटा पीस देती है। फिर उसे पानी भी नहीं भरना पड़ता, नल उसका पानी भर देता है। अब उसे धान भी नहीं कूटने पड़ते। धान कूटने की मशीन लगी है। आग भी उसे न जलानी पड़े इसके लिए बिजली के स्टोव हैं इसी प्रकार घर में झाड़ू का कार्य भी यन्त्रों से होता है। कपड़ा बुनने के लिए उसे सूत नहीं कातना पड़ता। इस काम के लिए पुतली घर उपस्थित हैं। वहां पर कातने के लिये हजारों मशीनें तथा कपड़ा बुनने के लिये लूमें लगी होती हैं और दिन भर में लाखों गज कपड़ा तैयार होता है।

इस प्रकार गृह वधू घर के इन झंझटों से मुक्त है और उसको अपना तथा अपने बच्चों का जीवन सुधारने के लिए पर्याप्त समय मिलता है। आज कल वह मुक्त है।

प्रश्न २६. यन्त्रों के आविष्कार से मनुष्य के आर्थिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा है?

आर्थिक जीवन पर प्रभाव

यन्त्रों के आविष्कार से मनुष्य के आर्थिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा है। सरल शब्दों में आर्थिक जीवन से अभिप्राय है मनुष्य जीवन का वह अंग जो सम्पत्ति से सम्बन्ध रखता हो अर्थात् मनुष्य अपने भोग की वस्तुओं का निर्माण किस प्रकार करता है तथा किस प्रकार उनका उपभोग करता है।

पहिले उपभोग्य वस्तुओं के निर्माण के लिए उसके पास कोई यन्त्र नहीं थे। सारे काम उसे अपने हाथों से तथा अपने स्वय के परिश्रम से करने पड़ते थे। और इसलिए वह अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति भर कर पाता था। किन्तु मनुष्य आज अपने लिए ही नहीं वरन् अपने दूसरे भाइयों के लिये भी पैदा करता है। आज कल मनुष्य यन्त्रों द्वारा इतना निर्माण कर लेता है कि उसे अपनी तथा अपने देश वासियों की आवश्यकता पूर्ति करने के अतिरिक्त विदेशों में ऐसी मण्डियां देखनी पड़ती है जहां उसकी उपज की खपत हो। इस प्रकार यन्त्रों द्वारा मनुष्य को जीवन की आवश्यकताएँ निर्माण करने में बड़ी सहायता मिली है।

यदि यन्त्रों का उचित ढंग से उपयोग किया जाय तो कोई व्यक्ति भी भूखा अथवा नङ्गा नहीं रह सकता। आज कल बड़े-बड़े पुतली घर हमारे लिए लाखों गज कपड़ा तैयार कर देते हैं जो हम अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के अतिरिक्त बाहर भी भेजते हैं। यह आधुनिक यन्त्रों से ही सम्भव हो सकता है। अनाज उगाने में भी यन्त्रों ने बड़ी सहायता की है। ट्रैक्टर का खेती के काम में बड़ा उपयोग होने लगा है। बीज बोने से लेकर रोटी बनाने तक सब कार्य मशीन-द्वारा होने लगा है। इस प्रकार हम इतना अन्न उत्पन्न कर सकते है जितना यन्त्रों के बिना हो ही नहीं सकता। यन्त्रों के द्वारा वस्तुएं अधिक संख्या में निर्माण हुई है। इसलिए वह पहिले की अपेक्षा सस्ती भी हैं और आसानी से मिल भी सकती है।

यन्त्रों की सहायता से धन की वृद्धि तो बहुत हुई परन्तु उसका वितरण सही ढंग से नहीं हो सका और परिणाम स्वरूप समाज में दो वर्ग पैदा हो गये, एक पूंजीपति और दूसरे श्रमिक तथा गरीब लोग। इसी दोष-पूर्ण वितरण के कारण ही इतना अन्न और वस्त्र होने पर भी भुखमरी और वस्त्रहीनता कम नहीं हो सकी। इस लिये वितरण सही ढंग से हो इसकी ओर ध्यान देने की आवश्यकता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि यन्त्रों के आविष्कार से मनुष्य के आर्थिक-जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ा है। वास्तव में यन्त्रों का आविष्कार तथा उसका

मानव-समाज पर प्रभाव अर्थशास्त्र का ही विषय है इसलिए स्पष्ट ही इसका मनुष्य के आर्थिक जीवन से गहरा सम्बन्ध है।

प्रश्न २७. यदि किसी बडे आधुनिक कारखाने को जाकर देखा जाये तो हमे यंत्रो की आश्चर्यजनक करामात का दिग्दर्शन होगा। उस दृश्य को शब्दों द्वारा दर्शाइये।

उत्तर—यदि किसी आधुनिक बडे कारखाने को जाकर देखा जाये तो यन्त्रो की आश्चर्यजनक करामात का कुछ अन्दाजा हो सकता है, रेल का इन्जन बनाने के कारखानों में एक ही आदमी क्रेन के द्वारा भारी इजन एक पटरी से उठा कर दूसरी पर रख देता है। लाल गरम लोहा जिसे छूना तो दूर रहा जिसके समीप भी जाना कठिन है क्रेन के द्वारा पकड कर एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाया जाता है। लोहे के कारखानों में ऐसे यन्त्र होते है जो लोहे को गाजर मूली की भान्ति काट देते है। यन्त्रों की यह शक्ति सचमुच आश्चर्यजनक है।

यन्त्रो की आश्चर्यजनक करामात

यन्त्रों के आविष्कार से वस्तुएँ बडे पैमाने पर तैयार की जाती है। पश्चिमी बंगाल में आसनसोल के पास चितरजन कारखाने की स्थापना की गई है जिसमे रेल के इजन बनते हैं। इस कारखाने मे १९५४ के पश्चात् ८० इन्जन प्रतिवर्ष बन सकेंगे।

बड़े पैमाने पर उत्पादन

कई कल कारखानों में जहा लोग काम करते हैं वायु मडल स्वास्थ्य के लिये हानि कारक होता है। कई स्थानो पर बहुत शोर गुल में कार्य करना पडता है। कई स्थानो पर अधिक प्रकाश होता है। थोडी सी लापरवाही मे शरीर के अंगों के जल जाने का, कट जाने का और मृत्यु का भी भय होता। इन कठिनाइयों का सुधार करने का प्रयत्न भी अभी चल ही रहा है। है सम्भव है कोई सुधार हो जाय।

नई समस्याये

बडे बडे कारखानो में काम को छोटे-छोटे भागो मे बाटा होता है।

कारखानों में सृजनात्मक आनन्द का अभाव

प्रत्येक कारिगर काम के छोटे से भाग पर ही लगा रहता है। एक कारीगर केवल कील ही बनाता है दूसरा उस पर केवल पालिश ही करता है। इस प्रकार एक ही कार्य करते रहने से कारिगर अपने कार्य में निपुण अवश्य हो जाता है किन्तु बार-बार एक ही काम करने से वह कार्य कुछ शुष्क सा हो जाता है और सारी वस्तु के निर्माण मे जो सृजनात्मक आनन्द मिलता है कारिगर उससे वञ्चित रह जाता है।

अध्याय ५

शक्ति पर विजय

प्रश्न २८ वाष्प शक्ति के उपयोग से मनुष्य को क्या क्या लाभ हुआ ?

आधुनिक युग का प्रारम्भ-वाष्प शक्ति का उपयोग

उत्तर—सत्रहवीं शताब्दी से भौतिक शक्ति के उपयोग में प्रगति हुई। उस समय वाष्प शक्ति का उपयोग होने लगा। अठारहवीं शताब्दी में पानी का पम्प चलाने के लिये भाप का प्रयोग हुआ।

आजकल बड़े बड़े कल कारखाने सब वाष्प की शक्ति से चलाये जाते हैं। रेलगाडी, जलयान, बिजली पैदा करने वाले डाइनेमों आदि सब में वाष्प की शक्ति का उपयोग किया जाता है।

अभी तक बिजली की शक्ति तथा पैट्रोल की शक्ति इतनी अधिक मात्रा में उपलब्ध नहीं है कि उनसे हर प्रकार की बडी से बडी मशीनें चलाई जा सकें। इसलिये हमें वाष्प का सहारा लेना पडता है। भारतवर्ष में कपडे लोहे तथा दिया सलाई आदि बनाने के कारखाने सब कोयले अर्थात् वाष्प की शक्ति से चलाये जाते हैं। यदि आज यह शक्ति हमारे पास न हो तो हमारे बड़े-बड़े कल कारखाने एक दम बन्द हो जायं और हमें इस अभाव की पूर्ति करने में अपने को असमर्थ पायेंगे। इस प्रकार स्पष्ट है कि वाष्प शक्ति ने मनुष्य को बडे लाभ पहुंचाये हैं।

प्रश्न २६ आधुनिक औद्योगिक जीवन मे कोयले का क्या महत्व है ? कोयले की खानो मे काम करने से किन-किन विपत्तियों का सामना करना पड़ता है तथा इन विपत्तियो को कम करने के लिये क्या क्या प्रयत्न किये गये हैं ?

उत्तर—कोयले की शक्ति ने औद्योगिक जीवन मे बड़ा महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण किया है। आज कोयले का उपयोग बहुत व्यापक हो गया है। कोयला ईन्धन के लिये तथा कारखानों मे उपयोग किया जाता है। कोयले का महत्व इतना है कि यदि इसकी प्राप्ति कम हो जाय तो बड़े बड़े कारखाने तथा रेलें आदि सब बन्द हो जायें।

कोयले का महत्व

कोयला भूमि को अधिक गहरा खोद कर निकाला जाता है। भारतवर्ष मे रानीगज तथा झरिया मे कोयले की बहुत बड़ी खानें हैं जहा से हर वर्ष लाखों टन कोयला निकाला जाता है। पहिले खानों में काम करने वाले लोगो को अनेक कठिनाइया आती थीं। प्रतिवर्ष सैकड़ो लोग इन खानों की भेंट हो जाते थे। कई बार खानों की छतें टूट जाती थीं और लोग दब कर मर जाते थे। आजकल भी कई बार खानों में आग लग जाती है जो कोल गैस के हवा मे मिलने के कारण होती है और बहुत से व्यक्ति जल कर मर जाते हैं। इसी गैस से लोग दम घुट कर भी मर जाते हैं। इङ्गलैण्ड मे साढ़े आठ लाख व्यक्ति खानों में काम करते है और इनमें से बारह सौ के लगभग व्यक्ति प्रतिवर्ष इन खानों में ही मृत्यु के ग्रास बन जाते हैं।

कोयले की खानों मे कार्य करने में विपत्तिया

आजकल खानों में पर्याप्त सुधार हुआ है। किन्तु वह अब भी आवश्यकता से कहीं कम है। खानें गिर न जाय इसके लिये खम्भो के सहारे दिये जाते हैं। साफ हवा आने के लिये तथा विषैली हवा बाहर जाने के लिये रोशनदानों की व्यवस्था की गई है। अब बहुत सारा काम मशीनो द्वारा ही किया जाता है। इन दुर्घटनाओं को रोकने के लिए नये नये कानून भी बनाये गये हैं। यद्यपि कोयले की खानों में काम करने के ढंगों में अब पहिले से बहुत सुधार हो चुका है किन्तु फिर भी खानों का काम बहुत कष्टदायी तथा विपत्ति जनक है।

प्रश्न ३०. पिछले दो सौ वर्षों मे मनुष्य ने शक्ति के कौन मे नये साधन ढूंढ निकाले हैं ?

कलों को चलाने वाली शक्ति

उत्तर—हम देखते हैं कि आधुनिक युग में मशीनों की बड़ी प्रधानता है। किंतु देखना यह है कि इन सब शक्तियों को कौन सी शक्ति द्वारा चलाया जाता है। रेल, मोटर और जहाज आदि यह सब अपने आप नहीं चलते इनको चलाने वाली कोई शक्ति है।

आदिकाल मे मनुष्य सब काम स्वय अपने हाथ से तथा अपने स्वय के परिश्रम से करता था। फिर पशुबल का उपयोग हुआ और धीरे-धीरे भौतिक बल का प्रयोग भी होने लगा और आटा पीसने तथा नाव चलाने के लिये हवा और पानी का उपयोग होने लगा।

आधुनिक युग का प्रारम्भ-शक्ति के प्रमुख स्रोत

भौतिक शक्ति का उपयोग वास्तव म पिछले सौ दो सौ वर्षों से प्रारम्भ हुआ। आज रेल गाडी, जहाज तथा बिजली पैदा करने की कलें इन सब का काम चलाने के लिये भाप की अथवा कोयले की शक्ति काम में लाई जाती है। आधुनिक युग में कोयले के अतिरिक्त, पैट्रोलियम और जल धारा तथा बिजली आदि शक्ति के प्रमुख स्त्रोत हैं। और अभी हाल ही में परमाणु शक्ति भी काम में लाई जाने लगी है।

कोयले का उपयोग आजकल बहुत व्यापक हो गया है। घर में ईन्धन के लिये तथा बड़े-बड़े कल कारखानों में जलाने के लिये तथा भाप निर्माण करने के लिये काम में आता है। यदि आज कोयला मिलना बन्द हो जाय तो हमारे बड़े-बडे कारखाने सब बन्द हो जायें।

औद्योगिक क्षेत्र में काम आने वाली दूसरी बड़ी शक्ति है पेट्रोलियम। आजकल पैट्रोल इन्जन का बहुत उपयोग होने लगा है। भाप का इन्जन भारी होने के कारण हर छोटे बड़े काम में उपयोग नहीं किया जा सकता। मोटर और वायुयान आदि में पैट्रौल इन्जन की आवश्यकता होती है

बिजली की शक्ति भी पिछले सौ दो सौ वर्षों की ही देन है। आज कल बड़े बड़े कल कारखाने, भूमिगत रेलें तथा भारी-भारी क्रेन बिजली के द्वारा काम करते हैं। हाल ही में परमाणु शक्ति का भी उपयोग होने लगा है। यदि परमाणु शक्ति का उपयोग समाजहित के लिये किया गया तो यह शक्ति इन सब शक्तियों से अधिक महान और हितकर सिद्ध होगी।

प्रश्न ३१ पैट्रोल कैसे निकाला जाता है? पैट्रोल के उपयोग ने यातायात के विकास में कैसे सहायता की?

उत्तर—हम अपनी मोटरकार में जिस पैट्रोल का उपयोग करते हैं वह बड़े परिश्रम के पश्चात् प्राप्त होता है। सब से पहिले तो यह देखना पड़ता है कि भूमि के किस भाग में पैट्रोल है। आज कल इस काम के लिए एक यन्त्र जिसे प्रॉस्पेक्टिंग (Prospecting) कहते हैं काम में लाया जाता है। प्रॉस्पेक्टिंग के पश्चात् कुए को खोदा जाता है। खुदाई के पश्चात् कुए की तह को तारपीडो आदि से तोडा जाता है। थोड़ी देर के पश्चात् फव्वारे की भांति पीले रंग का पेट्रोलियम निकलने लगता है। प्रारम्भ में नये नये कुओं में से पैट्रोलियम स्वयं बाहर निकलता रहता है और बाद में उसे पम्प द्वारा निकालना पड़ता है।

पैट्रोल निकालना

इसके पश्चात नलों द्वारा पैट्रोलियम कारखानों में पहुँचाया जाता है जहा पर इसको साफ किया जाता है। और यह उस रूप में आ जाता है जिसमें कि वह हम तक पहुचता है।

पेट्रोल से बहुत हलकी मशीनों द्वारा काफी शक्ति पैदा की जाती है। एक अश्व बल शक्ति वाले भाप के इन्जन का वज़न १५० पाउण्ड होता है और इनके विपरीत पैट्रोल का दो पाऊण्ड का इन्जन ही एक अश्वबल शक्ति उत्पन्न कर सकता है। पैट्रोल का इन्जन हलका होने के कारण वायुयान और मोटरों में उपयोग किया जाता है। युद्ध के समय में पेट्रोल का बहुत ही अधिक महत्व होता है। वायुयान, मोटर, गाड़ी आदि में पेट्रोल के उपयोग से यातायात में पेट्रोल का महत्व स्पष्ठ है

पैट्रोल इन्जन का महत्व और विशेषता

प्रश्न ३२. विद्युत शक्ति किस प्रकार पैदा की जाती है ? इसके व्यापक उपयोग पर एक संक्षिप्त निबन्ध लिखिये।

उत्तर—विद्युत शक्ति से आज लगभग प्रत्येक व्यक्ति परिचित है।

विद्युत शक्ति

विद्युत के कारण ही रेडियो, टेलिफोन और सिनेमा आदि सम्भव हुये हैं। बिजली के एक बटन में कितनी शक्ति है कि उसे दबाते ही बड़ी-बड़ी मशीनें स्वयं चलने लगती हैं। एक बटन के दबाने से ही सारे नगर में प्रकाश हो जाता है।

एक अंग्रेज़ वैज्ञानिक माइकल फेरेडे (Faraday) ने यह सिद्धान्त निकाला था कि विद्युत शक्ति इंडक्शन (Induction) से पैदा की जाती है। उसने १८३१ में प्रदर्शन किया और एक तांबे की तशतरी को दो चुम्बकों के बीच में रख कर घुमाया और उससे बिजली पैदा की। आज कल इसी सिद्धान्त के आधार पर बिजली पैदा की जाती है। एक धुरे पर तांबे के तार लपेटे जाते हैं जिसे चम्बकों (Magnet) के बीच में घुमाया जाता है और उससे बिजली निर्माण की जाती है। ऐसे यन्त्रों को डाइनेमो (Dynamo) अथवा जेनरेटर (Generator) कहते हैं।

डाइनेमो प्राय भाप के इन्जनों से चलाये जाते हैं। किन्तु आजकल

जलधारा के वेग से विद्युत शक्ति का उत्पादन

बड़ी-बड़ी नदियों पर बन्ध बान्धकर उनके जल प्रवाह को वश में करके विद्युत शक्ति उतपन्न की जाती है। इन नदियों के पानी को एक ऊँचाई से गिराया जाता है और इस पानी से डाइनेमो अथवा जेनरेटर चलाये जाते हैं जिनसे बिजली पैदा होती है। भारत में भी इसी प्रकार की बड़ी बड़ी योजनायें कार्यान्वित की जा रही हैं। आशा है कि शीघ्र ही यहा भी प्रत्येक छोटे बड़े नगरों में बिजली पहुँच जायगी।

आधुनिक युग में अनेकों मशीनें बिजली द्वारा चलाई जाती हैं। इसके

आधुनिक युग मे बिजली का प्रयोग

अतिरिक्त घर के अनेक कार्य, रसोई बनाना, कपड़ो पर प्रैस करना, झाड़ू लगाना और बर्फ जमाना आदि सब बिजली से होने लगे हैं।

कारखानों में कोयले की कमी के कारण जो कठिनाइयां थी वह विद्युत शक्ति द्वारा बहुत सरल हो गई हैं।

प्र०३३. बिजली का उपयोग किन किन कार्यों मे होता है? उस से मनुष्य को क्या लाभ हुआ?

उत्तर—आधुनिक युग में बिजली का उपयोग व्यापक हो गया है। आज अनेकों मशीनें बिजली से चलाई जाती हैं। बड़े बड़े मुद्रणालय (छापाखाने) जहां पर लाखों समाचार पत्र प्रतिदिन छपते है बिजली की सहायता से चलते हैं। मशीनें बनाने के कारखाने, रेल इंजन बनाने के कारखाने, मोटर बनाने के कारखाने, क्रेन पम्प, लिफ्ट इत्यादि सभी कलें बिजली की शक्ति से काम करते हैं। इस प्रकार अनेकों प्रकार की कलें बिजली की सहायता से चलती हैं। रेडियो, टेलीफोन आदि आजकल के चमत्कारी आविष्कार बिजली के कारण ही सम्भव हुये।

आधुनिक युग मे बिजली का व्यापक उपयोग

इसके अतिरिक्त घरेलू जीवन मे भी बिजली ने बड़ा महत्वपूर्ण कार्य किया है। रसोई बनाने के लिए बिजली के स्टोव, बरफ जमाने के लिए तथा पानी इत्यादि ठंडा करने के लिये रेफरीजरेटर और यही नहीं कपड़ों पर प्रेस करने के लिए बिजली के प्रेस आज हमें प्राप्त है। घर में झाड़ू लगाने का कार्य भी बिजली के झाड़ू द्वारा ही होने लगा है।

बिजली के व्यापक उपयोग से मनुष्य को सब से बड़ा लाभ जो हुआ वह यह है कि अब उसे कोयले के ऊपर बहुत निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं। जिन देशों के पास कोयला नहीं है वह नदियों पर बांध बनाकर पानी की शक्ति से बिजली पैदा करते हैं और इस प्रकार बिजली कोयले की कमी को पूरा कर देती है। दूसरे बिजली द्वारा कोई भी मशीन चलाने के लिए कम समय लगता है। बटन दबाया कि काम चालू हुआ। भाप के इंजनों में आग जलानी पड़ती है। ब्वायलरों मे पानी भरना पड़ता है। इस प्रकार इस से समय की भी बहुत बचत होती है।

प्रश्न ३२. विद्युत शक्ति किस प्रकार पैदा की जाती है ? इसके व्यापक उपयोग पर एक संक्षिप्त निबन्ध लिखिये।

उत्तर—विद्युत शक्ति से आज लगभग प्रत्येक व्यक्ति परिचित है।

विद्युत शक्ति

विद्युत के कारण ही रेडियो, टेलिफोन और सिनेमा आदि सम्भव हुये हैं। बिजली के एक बटन में कितनी शक्ति है कि उसे दबाते ही बड़ी-बड़ी मशीनें स्वयं चलने लगती हैं। एक बटन के दबाने से ही सारे नगर में प्रकाश हो जाता है।

एक अंग्रेज़ वैज्ञानिक माइकल फेरेडे (Faraday) ने यह सिद्धान्त निकाला था कि विद्युत शक्ति इंडक्शन (Induction) से पैदा की जाती है। उसने १८३१ में प्रदर्शन किया और एक तांबे की तशतरी को दो चुम्बकों के बीच में रख कर घुमाया और उससे बिजली पैदा की। आज कल इसी सिद्धान्त के आधार पर बिजली पैदा की जाती है। एक धुरे पर तांबे के तार लपेटे जाते हैं जिसे चम्बकों (Magnet) के बीच में घुमाया जाता है और उससे बिजली निर्माण की जाती है। ऐसे यन्त्रों को डाइनेमो (Dynamo) अथवा जेनरेटर (Generator) कहते हैं।

डाइनेमो प्राय. भाप के इञ्जनों से चलाये जाते हैं। किन्तु आजकल

जलधारा के वेग से विद्युत शक्ति का उत्पादन

बडी-बडी नदियों पर बन्ध बान्धकर उनके जल प्रवाह को वश में करके विद्युत शक्ति उत्पन्न की जाती है। इन नदियों के पानी को एक ऊंचाई से गिराया जाता है और इस पानी से डाइनेमो अथवा जेनरेटर चलाये जाते हैं जिनसे बिजली पैदा होती है। भारत में भी इसी प्रकार की बडी बडी योजनायें कार्यान्वित की जा रही हैं। आशा है कि शीघ्र ही यहा भी प्रत्येक छोटे बडे नगरों में बिजली पहुंच जायगी।

आधुनिक युग में अनेकों मशीनें बिजली द्वारा चलाई जाती हैं। इसके

आधुनिक युग मे बिजली का प्रयोग

अतिरिक्त घर के अनेक कार्य, रसोई बनाना, कपडो पर प्रैस करना, झाड़ू लगाना और बर्फ जमाना आदि सब बिजली से होने लगे हैं।

कारखानों में कायले की कमी के कारण जो कठिनाइयां थी वह विद्युत शक्ति द्वारा बहुत सरल हो गई है।

प्र०३२ बिजली का उपयोग किन किन कार्यों मे होता है? उस से मनुष्य को क्या लाभ हुआ?

उत्तर—आधुनिक युग में बिजली का उपयोग व्यापक हो गया है। आज अनेकों मशीनें बिजली से चलाई जाती हैं। बड़े बड़े मुद्रणालय (छापाखाने) जहां पर लाखों समाचार पत्र प्रतिदिन छपते हैं बिजली की सहायता से चलते हैं। मशीनें बनाने के कारखाने, रेल इंजन बनाने के कारखाने, मोटर बनाने के कारखाने, क्रेन पम्प, लिफ्ट इत्यादि सभी कलें बिजली की शक्ति से काम करते हैं। इस प्रकार अनेकों प्रकार की कलें बिजली की सहायता से चलती हैं। रेडियो, टेलीफोन आदि आजकल के चमत्कारी आविष्कार बिजली के कारण ही सम्भव हुये।

आधुनिक युग मे बिजली का व्यापक उपयोग

इसके अतिरिक्त घरेलू जीवन में भी बिजली ने बड़ा महत्वपूर्ण कार्य किया है। रसोई बनाने के लिए बिजली के स्टोव, बरफ जमाने के लिए तथा पानी इत्यादि ठंडा करने के लिये रेफरीजरेटर और यही नहीं कपड़ों पर प्रेस करने के लिए बिजली के प्रेस आज हमें प्राप्त हैं। घर में झाड़ू लगाने का कार्य भी बिजली के झाड़ू द्वारा ही होने लगा है।

बिजली के व्यापक उपयोग से मनुष्य को सब से बड़ा लाभ जो हुआ वह यह है कि अब हमें कोयले के ऊपर बहुत निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं। जिन देशों के पास कोयला नहीं है वह नदियों पर बांध बनाकर पानी की शक्ति से बिजली पैदा करते हैं और इस प्रकार बिजली कोयले की कमी को पूरा कर देती है। दूसरे बिजली द्वारा कोई भी मशीन चलाने के लिए कम समय लगता है। बटन दबाया कि काम चालू हुआ। भाप के इंजनों में आग जलानी पड़ती है। ब्वायलरों में पानी भरना पड़ता है। इस प्रकार इस से समय की भी बहुत बचत होती है।

प्र० ३४. परमाणु शक्ति के आविष्कार से मनुष्य को क्या लाभ अथवा हानि हुई ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—सब पदार्थ छोटे छोटे अणुओं से मिलकर बने हैं । हर एक परमाणु में महान शक्ति भरी पड़ी है। इन को फाड़ कर परमाणु शक्ति उत्पन्न की जाती है। इस शक्ति द्वारा द्वितीय महायुद्ध में परमाणु बम बनाये गये। और यह बम अब तक बने सभी प्रकार के बमों से बहुत भयानक और विनाशक सिद्ध हुआ है।

परमाणु शक्ति

कोयला पैट्रोल और बिजली आदि की शक्ति जिन का उपयोग आज बहुत व्यापक हो गया है परमाणु की शक्ति के सामने कुछ भी नहीं है । तांबे की एक पाई में आठ करोड़ अश्वबल (H P) की शक्ति भरी हुई है। सेर भर कोयलों के परमाणुओं में जितनी शक्ति है उतनी करोड़ों मन कोयला जलाकर भी उत्पन्न नहीं की जा सकती ।

परमाणु शक्ति के आविष्कार ने भविष्य को बहुत उज्ज्वल बना दिया है। यदि इस शक्ति पर ठीक प्रकार से मनुष्य अधिकार कर सका तो उस से मनुष्य जाति का क्या भला होने वाला है इस की केवल कल्पना ही की जा सकती है। सुना जाता है कि सोवियत रूस में बड़े बड़े पत्थरों को तोड़ कर नहरें निकालने तथा बड़ी बड़ी नदियों की दिशा बदलने के लिए परमाणु शक्ति का उपयोग किया जा रहा है।

यदि परमाणु शक्ति का उपयोग मानव हित के लिये हुआ तो संसार से अभाव का नाम उठ जायगा और मनुष्य अपने को सही अर्थों में सुखी बना सकेगा।

———

अध्याय ६

रोगों पर विजय

प्र० ३५ रोगों पर विजय प्राप्त करने के लिये मनुष्य ने पहिला कार्य कौनसा किया है ?

उत्तर—रोगों के कारण मनुष्य को कष्ट प्राप्त होता है। और स्वास्थ्य से सुख मिलता है। मनुष्य ने कष्टों को कम करने का तथा उनसे बचने का सदा प्रयत्न किया है। रोगों से बचने के लिए मनुष्य ने जो जो प्रयत्न किये उन में विज्ञान की प्रगति के साथ साथ बहुत। फेर बदल होते आये हैं और आज उसमें बहुत सुधार हो चुका है।

प्रारम्भिक अज्ञान अवस्था

प्राचीन काल से रोगों से बचने के लिए देवी देवताओं की शरण ली जाती थी। उनका मत था कि रोग तभी उत्पन्न होते हैं जब देवता प्रकुपित हो जाते हैं। इस लिए देवताओं को भेंट देकर प्रसन्न करने के प्रयत्न किये जाते थे। आज कल भी भारतवर्ष में चेचक की बीमारी को माता के प्रकोप से हुआ माना जाता है। और इस बीमारी का नाम भी माता ही रख दिया गया है। आजकल विज्ञान तथा शिक्षा के प्रचार से यह अज्ञान कम हो रहा है।

मनुष्य ने रोगों पर विजय प्राप्त करने के लिए सब से पहिला काम तब किया जब उसने रोगों का कारण देवी देवताओं के स्थान पर मानव शरीर में ही खोजना प्रारम्भ किया। यह इसी प्रगति का कारण है कि चिकित्सा के आधुनिक ढंग सम्भव हो सके।

प्रथम वैज्ञानिक प्रगति

प्र० ३६ आधुनिक युग मे पाश्चात्य देशो मे सामूहिक स्वास्थ्य रक्षा के क्या क्या प्रबन्ध किये गये ?

उत्तर—रोगों का घर तथा अपने आसपास की सफाई मे बड़ा निकट सम्बन्ध है। मोहिनजोदाड़ो की खुदाई मे जो अवशेष मिले हैं उनमे पता चला है कि तीन हज़ार साल पहिले भारतवर्ष मे नगरों की स्वच्छता आदि के लिये ईटों की नालियां होती थीं। इससे स्पष्ट है कि नगरों की सफाई का यह ढग प्राचीन है, किन्तु फिर भी आज इस दृष्टि से हम अपने को बहुत पीछे पाते हैं। इस के विपरीत पाश्चात्य देशों के लोग अपने आसपास का वातावरण स्वच्छ रखने के कारण अधिक स्वस्थ हैं और वहा के लोगों की आयु हमारे यहाँ की अपेक्षा अधिक है।

प्राचीन भारत मे नगर स्वच्छता

आजकल नगरों और शहरों को स्वच्छ रखने के लिए पाश्चात्य देशो में बहुत प्रयत्न किये जाते हैं। बड़े बड़े नगरों की शासन व्यवस्था मे स्वच्छता को प्रमुख स्थान दिया जाता है। और लाखो की सख्या वाले शहरो मे भी गन्दगी का नाम तक नहीं होता। इसका स्वास्थ्य पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ता है। गदे पानी आदि की नालिया जमीन के अन्दर ही अन्दर बहुत दूर तक चली जाती है जहां उसे वैज्ञानिक रीति से प्रयोग में लाया जाता है। प्रत्येक नगर मे वैज्ञानिक ढग से शुद्ध किया हुआ पानी पहुचाया जाता है। भोजन तथा खाने-पीने में काम आने वाली वस्तुओं का हैल्थ आफिसर द्वारा निरीक्षण किया जाता है और दूषित वस्तुए बेचने वाले को दण्ड दिया है जाता। जो विदेशी रोगी हों तब तक उन्हे उन देशों मे प्रवेश नहीं मिलता जब तक कि यह सिद्ध न हो जाय कि वह किसी संक्रामक रोग से पीड़ित नहीं है। इस प्रकार उन देशों में स्वास्थ्य रक्षा के लिये बहुत अधिक ध्यान दिया जाता है।

पाश्चात्य देशों में सामूहिक स्वास्थ्य रक्षा के प्रबन्ध

प्र० ३७ रोग कीटाणु सिद्धान्त की खोज का चिकित्सा शास्त्र पर क्या प्रभाव पडा ?

उत्तर—वर्तमान चिकित्सा शास्त्र की यह सबसे बड़ी खोज है कि

रोग कीटाणुओं का सिद्धान्त

रोग की अधिकतर उत्पत्ति छोटे छोटे कीटाणुओं द्वारा होती हैं। यह कीटाणु बहुत ही सूक्ष्म होते हैं और एक कीटाणु लगभग एक इंच के $\frac{1}{५५०००}$ भाग के बराबर होता है। यह कीटाणु खाने पीने की वस्तुओं के साथ, वायु द्वारा अथवा घाव आदि द्वारा हमारे शरीर में प्रवेश करते हैं और कई प्रकार की बीमारियां फैलाते हैं। यह कीटाणु शरीर में एक विशेष प्रकार का विष फैलाते हैं जिससे रोग फैलता है। इस खोज ने रोगों को दूर करने में चिकित्सा शास्त्र की बड़ी सहायता की है। इस सिद्धान्त की स्थापना १९वीं शताब्दी में लूई पारस्चोर ने की। संसार उनके इस कार्य के लिए आभारी है।

रोग कीटाणुओं के इस सिद्धान्त का आधुनिक चिकित्सा शास्त्र से गहरा सम्बन्ध है। इस सिद्धान्त के ज्ञान के कारण आजकल अनेक ऐसी औषधियां निकाली गई है जो हमारे शरीर में प्रवेश कर रोग कीटाणुओं को मार देती है अथवा शरीर को कीटाणुओं से सुरक्षित कर देती हैं। सल्फानो-माइड के परिवार की बहुत सी औषधियां जैसे सल्फाडायजीन, सीयाजोल इत्यादि का हाल ही में आविष्कार हुआ है जिन्होंने इन कीटाणुओं को मार कर रोगों को दूर करने में बड़ी सहायता दी है। क्षय रोग के लिये स्ट्रप्टो-माईसिन, मोतीझरे (Typhoid) के लिए क्लोरोमाइसेटिन (Chloromycetine) नाम की औषधियां निकली हैं। हाल ही में पेनिसिलिन (Peniciline) जैसी औषधियों का आविष्कार हुआ है। इस प्रकार रोगाणुओं के इस सिद्धान्त ने ऐसी औषधियों के आविष्कार को सम्भव बनाया। टीका और सूई लगाने की प्रथा ने भी रोग कीटाणुओं को दूर भगाने में पर्याप्त सहायता दी है इस प्रकार रोग कीटाणुओं के सिद्धान्त की खोज के पश्चात ऐसी ऐसी औषधियां बनी हैं जिनकी पहले कल्पना भी नहीं की जा सकती थी और इस प्रकार रोगों पर विजय पाई।

प्र० ३८ रोगों पर विजय प्राप्त करने में विज्ञान ने मनुष्य की क्या सहायता की है? संक्षेप में लिखिये।

उत्तर—रोग कीटाणुओं की खोज के पश्चात इन कीटाणुओं को

औषधोपचार में प्रगति

मारने के लिये भी मावन अथवा जो भी औषधियां बनाई गई हैं वह सब विज्ञान की देन हैं। सल्फाने माइड तथा सिबाजोल आदि उसके परिवार की अनेक औषधिया, क्षय के लिए स्ट्रैप्टोमाइसिन तथा मोतीझरे के लिये क्लोरोमाईसेटिन आदि औषधियों का आविष्कार विज्ञान की ही देन है। पेनिसिलिन जैसी औषधियों के आविष्कार के लिए ससार आधुनिक वैज्ञानिक का सदैव आभारी रहेगा। माईक्रोसकोप (Mycroscope) और एक्सरे (X-Ray) जैसे यन्त्रों के आविष्कार ने मानव समाज की जो सेवा की है उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। शरीर में कौन से कीटाणुओं का प्राधान्य है यह माईक्रोसकोप द्वारा पता लग जाता है। शरीर का कोई अग अन्दर से खराब हो जाय अथवा कोई हड्डी टूट जाय उसकी स्थिति का सही ज्ञान एक्स-रे द्वारा हो जाता है।

आधुनिक शल्य चिकित्सा के ढग विज्ञान की बड़ी भारी देन है। आज कोई ऑपरेशन करते समय मनुष्य को पीडा नहीं होती कारण उसे बेहोश करने की औषधि दी जाती है। प्राचीनकाल में इस प्रकार की कोई औषधि नहीं थी और रोगी के अग इत्यादि काटने समय जो कष्ट उसे होता होगा उसकी केवल कल्पना ही की जा सकती है।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि विज्ञान ने हर बीमारी के लिये औषधिया बनाई हैं तथा किसी औषधि के सेवन के समय कष्ट न हो इसके लिये भी प्रयास किया गया है। विज्ञान ने वास्तव में रोगों पर विजय पाने के लिये पर्याप्त सहायता दी है।

प्रश्न ३६. मोतीझरा, हैजा, क्षय, डिप्थीरिया, चेचक आदि रोगों पर विज्ञान ने कैसे विजय पाई? विज्ञान की इस सफलता से भारत जैसे पिछडे हुए देश कैसे लाभ उठा सकते हैं?

टीका उपचार (Vaccine Theory)

उत्तर—सल्फानोमाइड, स्ट्रैप्टोमाइसेटिन आदि रोगाणुनाशक औषधियों के अतिरिक्त एक और रोगाणुनाशक उपचार निकला है जिसे टीका उपचार (Vaccine Therapy) कहते हैं।

शरीर में जब किसी बीमारी के कीटाणु प्रवेश करते हैं तो शरीर उन कीटाणुओं को नष्ट करने के लिए एक प्रति विष उत्पन्न करता है जिसे (Antitoxin) कहते हैं। यह विष उन कीटाणुओं को तो मार ही देता है किन्तु उसके पश्चात् भी इसका प्रभाव बहुत समय तक रहता है। इसलिये आजकल चिकित्सक टीके द्वारा ऐसी बीमारी के कीटाणु जिसका निकट भविष्य में फैलने का भय हो मनुष्य शरीर में टीकों द्वारा प्रवेश कराते हैं। जिसके प्रतिकार के लिए शरीर में प्रति विष (Antitoxin) उत्पन्न होता है और जिसका प्रभाव बहुत समय तक रहता है और वह व्यक्ति जिसको टीका लगाया जाता है उस बीमारी के डर से मुक्त हो जाता है। १९ वीं शताब्दी में डाक्टर जेनर ने गायों में होने वाले चेचक (Cow Pox) के फोड़ों का मवाद मनुष्य शरीर में प्रविष्ट करके यह सिद्ध किया कि इस प्रकार के प्रयोग से चेचक जैसी भयकर बीमारी से मनुष्य सुरक्षित रखा जा सकता है।

मोतीझरा, हैजा, क्षय, डिप्थीरिया, चेचक आदि रोगों में इस पद्धति ने बहुत लाभ पहुँचाया है। यह रोग वहां अधिक फैलते हैं जहाँ स्वच्छता आदि की विशेष व्यवस्था न हो। भारत में यह रोग बहुत फैलते हैं। टीके की प्रथा से अब हर वर्ष हजारों लोगों की जानें बचाई जाती हैं। पहले पहल भारत में ही जब हैजे का प्रकोप होता तो गाव के गाव खाली हो जाते थे। आजकल भी कई बार इसी प्रकार बीमारियां फैलती हैं, किन्तु भविष्य में इन पर विजय पाने की बहुत सम्भावना है।

प्रश्न ४० आधुनिक शल्य चिकित्सा के विकास की कहानी लिखिये। किन किन आविष्कारों ने शल्य चिकित्सा की उन्नति में सहायता की है ?

उत्तर—आधुनिक शल्य चिकित्सा प्राचीन शल्य चिकित्सा से कहीं अधिक विकसित है। पहले चीर फाड करने की विधि इतनी कष्टमय होती थी कि रोगी की बात तो दूर रही उस क्रिया को देखने वालों के दिल बैठ जाते थे। कई रोगी दर्द तथा घाव सड़ जाने के कारण मर जाते थे। उस समय रोगी को अचेतन करने के लिए कोई साधन नहीं थे।

शल्य चिकित्सा (Surgery)

अन्दर ही रह गई हो तो उस की सही स्थिति का ज्ञान एक्सरे द्वारा हो जाता है। यदि शरीर का कोई अंग अन्दर से गल जाय और उसके कारण कोई रोग खड़ा हो जाय तो उसका निदान एक्सरे द्वारा ही हो सकता है। क्षय रोग में एक्सरे द्वारा पता लगता है कि मरीज़ इस समय कौन सी स्टेज पर है। इस प्रकार बिना चीर फाड़ के रोग का निदान हो जाता है।

रोग निदान के यह जो वैज्ञानिक साधन हैं इनके द्वारा रोग निदान में तथा रोगों को दूर करने में बडी सहायता मिली है।

प्रश्न ४२. "स्वास्थ्य एक सामाजिक समस्या है" इस वाक्य पर अपने विचार व्यक्त कीजिये ?

स्वास्थ्य एक सामाजिक समस्या

उत्तर—यह अनुभव सिद्ध बात है कि स्वास्थ्य की समस्या व्यक्तिगत नहीं है बल्कि सामाजिक है। यदि एक व्यक्ति बीमार पड जाता है तो उसका सारे समाज पर प्रभाव पड़ता है। प्रथम तो उस व्यक्ति से वह बीमारी फैल कर दूसरे व्यक्तियों को लगने का डर रहता है दूसरे बीमारी के समय वह व्यक्ति कार्य नहीं कर सकता इस कारण से उस की सेवाओं द्वारा समाज का जो भला होना था समाज उससे वंचित रह जाता है। तीसरे उसकी बीमारी को दूर करने के लिए समाज की काफी शक्ति खर्च होती है। यदि वह बीमार न हो तो समाज उस शक्ति को अन्य कार्यों में लगा सकता है। वह शक्ति अच्छे भोजन की उत्पत्ति, शहर की सफ़ाई आदि में खर्च की जा सकती है जिससे समाज का बहुत ही भला हो सकता है।

यह सिद्ध होने पर कि स्वास्थ्य की समस्या सामाजिक है इस समस्या को हल करने की व्यवस्था भी सामूहिक ही होनी चाहिये। आधुनिक सरकारें सार्वजनिक स्वास्थ्य सम्बन्धी सेवा अमीरों और गरीबों को समान रूप से नहीं मिलती। धनवानों को अच्छी से अच्छी सेवायें प्राप्त हैं जब कि धन हीन लोग इसके अभाव में तड़प कर मर जाते हैं।

आज यह आन्दोलन तीव्र होता जा रहा है कि प्रत्येक नागरिक के स्वास्थ्य की रक्षा करना राज्य का ही कर्तव्य है। स्वास्थ्य सेवाओं का उपयोग

इस प्रकार हो कि प्रत्येक व्यक्ति को चाहे धनवान् है चाहे निर्धन उसकी आवश्यकतानुसार अच्छी से अच्छी स्वास्थ्य सेवा उसे मिल जाय। भारत में अभी स्वास्थ्य सेवाओं की बहुत कमी है। आशा है भविष्य में इस ओर उन्नति होगी और समाज की इस महत्त्वपूर्ण समस्या का कुछ हल निकल आयेगा।

प्रश्न ४३ प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति तथा मनोवैज्ञानिक ढंग से चिकित्सा पद्धतियों पर प्रकाश डालिये।

उत्तर—आजकल चिकित्सा की कई पद्धतियां है जिनमें एलोपैथिक, होम्योपैथिक, आयुर्वेदिक, प्राकृतिक चिकित्सा तथा मनोवैज्ञानिक ढङ्ग से चिकित्सा आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

प्राकृतिक चिकित्सा

आज ऐलोपैथिक चिकित्सा का बहुत प्रचार हो गया है। किन्तु ऐलोपैथिक चिकित्सा मे जिन औषधियों का प्रयोग होता है वह रोग को शरीर में ही दबा देती हैं। इसलिये आधुनिक चिकित्सक प्राकृतिक चिकित्सा का सहारा लेने लगे हैं।

प्राकृतिक चिकित्सकों का मत है कि जब शरीर में कोई रोग होता है तो उसका कारण है कि शरीर में मल रुक गया है। तो वह रोग को वहीं दबाने के स्थान पर उस मल को निकालने का प्रयत्न करते हैं। शरीर की सफाई हो जाने पर रोग स्वयं ही भाग जाता है और फिर कभी नहीं होता। प्राकृतिक चिकित्सा के सिद्धान्तों के अनुसार मनुष्य को प्राकृतिक नियमों के अनुसार जीवन व्यतीत करना चाहिये। भोजन इस लिए खाना चाहिए कि स्वास्थ्य ठीक रहे, केवल स्वाद के लिये नहीं।

आजकल मनोवैज्ञानिक ढंग से भी रोगियों का इलाज किया जाता है। शरीर में मल इकट्ठा होने से तो रोग उत्पन्न होता ही है किन्तु मानसिक अवस्था से भी रोगों का घनिष्ट सम्बन्ध है। जो रोग मानसिक अवस्था के कारण उत्पन्न होते हैं उनका मनोवैज्ञानिक ढंग से इलाज किया जाता है। पागलपन, हिस्टीरिया आदि रोग मानसिक कारणों से होते हैं। ऐसे सब रोग जिनका अन्य चिकित्साओं द्वारा उपचार नहीं हो सकता मनोविज्ञान द्वारा उन्हें दूर करने का प्रयत्न किया जाता है।

चिकित्सा में मनोविज्ञान का उपयोग

अध्याय ७

आज की आर्थिक व्यवस्था

प्रश्न ४४. आज की आर्थिक व्यवस्था की विशेषताये क्या हैं ?

विज्ञान नई दुनिया का जनक बड़े-बड़े कारखानों का निर्माण

विज्ञान की प्रगति के साथ साथ पुराना आर्थिक ढाचा बिल्कुल बदल गया है और एक नई दुनिया का निर्माण हुआ है। आज कल बडी बडी मशीनें काम करती हैं, कपड़ा बुनने तथा सूत कातने के बडे-बडे कारखाने हैं और वहा एक दिन मे हजारों गज कपडा तैयार हो जाता है। इसी प्रकार लोहे चीनी तथा अन्य वस्तुयें निर्माण करने के बडे-बडे कारखाने आज काम कर रहे हैं।

बडे पैमाने पर उत्पादन

आधुनिक वैज्ञानिक आविष्कारों के पूर्व मनुष्य अपनी छोटी सी दुनिया में रहता था और वह बाकी दुनिया से बिल्कुल अपरिचित था, इसलिये वह उतना ही निर्माण करता था जितना उसके अपने लिये काफी हो, किन्तु आधुनिक अर्थ व्यवस्था की यह विशेषता है कि उत्पादन बहुत बडे पैमाने पर किया जाता है। अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने पर जो बच जाता है वह विदेशों में भेज दिया जाता है, इस प्रकार इस अधिक उत्पादन से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि हुई, ब्रिटेन में इतना कपडा तैयार होने लगा जितना उसकी अपनी आवश्यकता से अधिक था, तब उसको बाहर भेजने का प्रबन्ध किया गया, और इतना कपडा तैयार करने के लिए मिस्र तथा भारत इत्यादि देशों से कपास मंगाई गई, इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को बहुत प्रोत्साहन मिला। अधिकाधिक कारखानों के निर्माण से पूंजी का केन्द्रीकरण

भी पूंजी पतियों के हाथों में चला गया, इस प्रकार समाज दो भागों में विभक्त हो गया एक श्रमिक तथा बीच के दर्जे के लोग दूसरे पूंजीपति, और उनमें आपसी संघर्ष दिनों दिन बढ़ता ही गया। इस प्रकार अधिक उत्पादन तथा उसके फल स्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और पूंजीवाद आज की अर्थ व्यवस्था की विशेषतायें हैं।

प्रश्न ४५ भारत की वर्तमान आर्थिक व्यवस्था पर एक निबन्ध लिखिये।

उत्तर—भारतवर्ष बहुत बड़ा देश है। इसका विस्तार उत्तर से

देश का विस्तार और जन-संख्या

दक्षिण लगभग २०० मील है और लगभग उतना ही पूर्व से पश्चिम तक है। इसका क्षेत्रफल बारह लाख नौ हज़ार मील है।

पाश्चात्य देशों के मुकाबले में भारतवर्ष में औद्योगीकरण बहुत कम हुआ है। फिर भी कुछ उद्योग ऐसे हैं जिन में भारत का संसार में महत्वपूर्ण स्थान है। सूती कपड़े का उद्योग इनमें सबसे अधिक विकसित है। बम्बई, अहमदाबाद, कानपुर, इन्दौर और शोलापुर आदि शहरों में कपड़े की बड़ी बड़ी मिलें हैं। इसके अतिरिक्त पटसन, चीनी, माचिस, लोहा, कागज और सिमेंट इत्यादि के उद्योगों ने भी बहुत सफलता प्राप्त की है।

भारत में औद्योगीकरण

औद्योगीकरण के विकास के पूर्व भारत में कुटीर व्यवसाय काफी उन्नति पर था। किन्तु अंग्रेजों की कूटनीति तथा मशीन द्वारा बने माल की प्रतियोगिता में उसे हार माननी पड़ी और भारत से कुटीर व्यवसाय प्रायः लुप्त हो गया। आज लगभग साठ प्रतिशत व्यक्ति कुटीर व्यवसाय द्वारा अपना पेट पालते हैं। इनमें प्रमुख कुटीर व्यवसाय हैं रेशमी, सूती और ऊनी कपड़े का बुनाई। चमड़े का काम, मिट्टी के बर्तन बनाना और लकड़ी का काम इत्यादि, इसके अतिरिक्त दरी व कालीन बनाना, मधुमक्खी पालना, कसीदे का काम, रंगाई, छपाई, गुड़ बनाना, चटाई टोकरी इत्यादि बनाना, हाथी दान्त का काम इत्यादि व्यवसाय भी प्रचलित हैं

कुटीर व्यवसाय

भारत वासियों का मुख्य धन्धा खेती

भारत की कुल जन सख्या में से ६० प्रतिशत लोग देहातों में रहते हैं और उनका प्रमुख धन्धा खेती है। भारत में खेती की हालत अच्छी नही है। आज हम उतना भी अन्न पैदा नहीं कर पाते जितना कि हमारी आवश्यकता है। और इसके विपरीत हमें विदेशों से अन्न मगाना पडता है। भारत की आर्थिक व्यवस्था तब तक नहीं सुधर सकती जब तक हम इन ६० प्रतिशत लोगों का जीवन सुखी न बना सकें।

प्रश्न ४६. आज संसार के भिन्न-भिन्न देश परस्पर अन्तर्निर्भर हैं। इस अन्तर्निर्भरता का कारण लिखिये।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार तथा आर्थिक अन्तर्निर्भरता

मशीनों के आविष्कार से उत्पादन मे बडी वृद्धि हुई। और इस वृद्धि के कारण माल विदेशी मण्डियों मे भेजने की आवश्यकता प्रतीत हुई। इङ्गलैण्ड में कपड़े का उत्पादन इतना बड़ा जितना उनकी अपनी आवश्यकता से अधिक था। इसलिये उन्होंने कपड़ा बाहर भेजना प्रारम्भ किया। किन्तु कपडा इतनी मात्रा मे बनाने के लिये कपास की आवश्यकता हुई तो वह भारत तथा मिश्र आदि देशों से मगाई गई। जहाज़ों तथा तार के आविष्कार से माल खरीदने और बेचने मे सुविधा हुई। इस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रोत्साहन मिला।

यदि एक देश चावल के स्थान पर गेहूँ अधिक पैदा कर सकता है और दूसरा देश गेहू की बजाय चावल अधिक उत्पन्न कर सकता है तो पहला देश केवल गेहू के उत्पादन पर ही अपनी शक्ति लगायेगा और दूसरा चावल पर इस प्रकार सामूहिक रूप से सारी दुनिया की उपज में वृद्धि होगी। पहिला देश गेहू देकर दूसरे से चावल ले लेगा। इस प्रकार आज देश एक दूसरे पर आर्थिक दृष्टि से परस्पर अन्तर्निर्भर हैं। अमरीका तथा इङ्गलैंड मे पिछड़े हुए देश मशीनरी मगाते है और उसके स्थान पर अपने देश की उपज वहा भेजते हैं।

आज यह अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध इतना व्यापक हो गया है कि किसी भी राजनैतिक अथवा आर्थिक घटना का अन्य देशों पर प्रभाव पड़े बिना नहीं

रह सकता। जब इङ्गलैण्ड ने पाउण्ड का अवमूल्यन किया तो भारत को भी रुपये का मूल्य घटाना पड़ा। पाकिस्तान ने अपने रुपये का मूल्य कम नहीं किया इससे भारत तथा पाकिस्तान के आपसी सम्बन्धों पर बड़ा प्रभाव पड़ा। इस प्रकार आज भिन्न-भिन्न देश परस्पर अन्तर्निर्भर हैं।

प्रश्न ४७ बड़े बड़े कारखाने खुलने से श्रमिकों और पूंजीपतियों में संघर्ष बढ़ने के क्या कारण हैं?

मजदूरों और पूंजीपतियों में संघर्ष

उत्तर—आधुनिक अर्थ व्यवस्था, पूंजीवादी अर्थ व्यवस्था है। आधुनिक कल कारखानों का प्रभुत्व उन्हीं लोगों के हाथों में रहता है जिनके पास पूंजी हो। इन कारखानों में जितना लाभ होता है वह भी उन्हीं पूंजी पतियों को मिलता है। इस प्रकार वितरण का कोई विशेष प्रबन्ध न होने के कारण धन समाज के इन्हीं गिने चुने लोगों के हाथों में केन्द्रित हो जाता है।

मजदूरों को जो वेतन मिलता है उससे उनके पेट का ही खर्च नहीं चलता कपड़े इत्यादि की बात तो रही अलग। उनके पास रहने का मकान नहीं और यदि भाग्य से कोई मकान मिल भी जाय तो वह स्वास्थ्य के नियमों के अनुकूल नहीं। जब मिल मालिक कारों में घूमते फिरें और शाहाना जीवन व्यतीत करें और यह गरीब लोग जिनके कारण वह आनन्द करते हैं, भूखे मरें तो फिर संघर्ष क्यों न हो।

शिक्षा के थोड़े प्रचार से मजदूरों में भी जागृति आई और उन्होंने भी अपने संगठन बनाये। जब हजारों व्यक्तियों का एक ही ध्येय हो तो संगठन बनने में देर नहीं लगती। और जैसे ही संगठन बना कि संघर्ष की नींव पड़ी। आजकल मजदूरों के इन संगठनों में तथा कारखाने दारों में प्रतिदिन झगड़े रहते हैं यहाँ तक कि कारखानों में हड़तालें भी होती हैं। मजदूरों की बहुत सी मांगें पूरी भी होती हैं, किन्तु यह संघर्ष कम नहीं होते। वास्तव, में जब तक वितरण की कोई योजना नहीं बनती यह संघर्ष कम नहीं हो सकते।

प्रश्न ४८. भारत मे कृषि की क्या अवस्था है ?

उत्तर—कृषि भारत का सबसे महत्वपूर्ण व्यवसाय है। भारत की ६० प्रतिशत जनता देहातो मे रहती है। और उन सब भारतीय व्यवसायों मे खेती का स्थान का गुजारा खेती पर होता है। इसके अतिरिक्त हमारे देश के बहुत से उद्योग धन्धे भी खेती पर निर्भर हैं क्योंकि उनके लिए कच्चा माल जैसे गन्ना, कपास आदि कृषि से ही प्राप्त होता है।

भारत की प्रमुख खाद्य फसलें हैं चावल गेहू, जौ, मक्का, ज्वार, बाजरा, दालें, गन्ना, मूंगफली आदि और अन्यान्य फसलें हैं कपास, जूट, तम्बाकू आदि। भारत में खेती की अवस्था अच्छी नहीं है। अन्य देशों की तुलना में हमारी जमीन की प्रति एकड उपज बहुत कम है।

भारत में चावल एक एकड में ८६२ पाऊण्ड होता है जब कि मिश्र मे २०३० पाऊण्ड, जापान में २४५४ पाऊण्ड और इटली में २६४० पाऊण्ड होता है। गेहू भारत में एक एकड में ६ बुशल पैदा होता है, जब कि चीन मे १६ बुशल, फ्रांस मे १६ बुशल और इटली में १७ बुशल होता है। गन्ने की उत्पत्ति प्रति एकड क्यूबा मे भारत से तीन गुना और जावा में भारत से ६ गुना और हवाई मे भारत से ७ गुना होती है। रुई की उत्पत्ति भारत में प्रति एकड ८४ बुशल, रूस मे ३२० बुशल अमरीका में ३६४ बुशल और मिश्र में ५३१ बुशल होती है।

यही नहीं कि हमारी उपज कम है बल्कि यह दिन प्रति दिन कम होती जारही है। १९३९ में भारत में गेहू ११ बुशल उत्पन्न होती थी सन १९४८ में केवल ६ बुशल रह गई। इस प्रकार भारत मे कृषि व्यवसाय की अवस्था बहुत शोचनीय है। कृषि भारत का प्रधान व्यवसाय है और ९० प्रतिशत लोग इस पर निर्भर करते हैं। इसलिये भारत का खुशहाल बनाने के लिये कृषि व्यवसाय में सुधार होना अत्यन्त आवश्यक है। हमारी उपज प्रति एकड और अधिक होनी चाहिये।

प्रश्न ४६. भारत मे कृषि की अवनति के क्या कारण हैं ?

उत्तर—अच्छी खेती के लिये जो भी साधन होने चाहिये भारत में

अच्छी खेती के लिये आवश्यक साधन

इनका अभाव है और यही यहां की कृषि की अवनति के कारण हैं। अच्छी खेती के लिये आवश्यक है कि खेत बड़े हों, सिचाई का प्रबन्ध हो, भूमि उपजाऊ हो, अच्छा बीज हो, अच्छी खाद हो। कृषकों के पास अच्छे मजबूत पशु हों। कृषक खेती के काम से भली प्रकार परिचित हों। भारत में इन सब बातों का अभाव है।

कृषि प्राकृतिक कारणों पर निर्भर

हमें कृषि के लिये वर्षा पर निर्भर रहना पड़ता है। भारत मे वर्षा सभी भागों में बराबर नहीं होती। कहीं पर वर्षा कम होती है तो कहीं पर अधिक। कहीं पर वर्षा न होने से खेती सूख जाती है। और कहीं पर वर्षा अधिक होने से खेती नष्ट हो जाती है। इसीलिये भारत में कृषि को मौनसून का खेल कहा गया है।

बटवारा खेतों का

भारत में किसानों के पास बहुत ही छोटे-छोटे खेत हैं। सन्तोषजनक निर्वाह के लिये एक परिवार को लगभग २० एकड़ भूमि की आवश्यकता है किन्तु आज हम देखते हैं साधारणतया एक परिवार के पास ३ एकड़ से पाँच एकड़ भूमि है और कहीं कहीं पर तो भूमि एक एक एकड़ के टुकड़ों में बटी है। जब तक इन टुकड़ों को मिलाने का प्रबन्ध नहीं होगा कृषि में सुधार असम्भव है।

सिंचाई की कमी

भारतीय कृषि की अवनति का कारण यह भी है कि यहाँ पर सिंचाई की व्यवस्था नहीं है। विभाजन के पश्चात् ऐसा सारा क्षेत्र जहां नहरों से सिंचाई होती थी पाकिस्तान मे चला गया है। नहरों के अतिरिक्त भारत में सिंचाई का काम कूओं और तालाबों से भी होता है किन्तु वह अपर्याप्त है। आजकल बड़े बड़े दर्याओं पर बाँध बना कर बहुत से बंजर इलाकों को सिंचाई के लिये पानी देने की योजनायें कार्यान्वित की जा रही हैं।

हजारों वर्षों से लगातार जोती जाने के कारण भूमि की उर्वरता नष्ट हो गई है। इसके अतिरिक्त उर्वरता खाद की कमी

खेतों की उर्वरता का नाश और उसके कारण

और खेतों में बाढ़ आने से उपजाऊ मिट्टी के बह जाने के कारण, भी नष्ट हुई हैं। जगलों के कट जाने से भी बाढ़ आने के लिये मार्ग खुल गया है। हमारे यहाँ गोबर के उपले बनाकर जला लिये जाते हैं और इस प्रकार यह उपयोगी खाद भी नष्ट हो जाती है।

अवैज्ञानिक कृषि और दुर्बल पशु

भारत मे कृषि पुराने ढग के हलों और कमज़ोर बैलों द्वारा ही की जाती है जब कि अन्य देशों मे ट्रैक्टरों और दूसरे साधनों द्वारा होती है। इसीलिये हमारी उपज दूसर देशों की तुलना मे कम है।

ऋण भार से दबे कृषक

भारत के कृषक सदा ऋण भार से दबे रहते हैं। उनको पेट भर भोजन भी नहीं मिलता। वह अच्छी खाद तथा आधुनिक ढग के साधनों का उपयोग करने में असमर्थ हैं। इसके अतिरिक्त जमीदारी प्रथा के कारण किसानों पर बडे बडे अत्याचार हुये हैं। इन्हे कभी भी उनकी मेहनत का फल नहीं मिला।

इस प्रकार भूमि विभाजन, सिंचाई के साधन, तथा खाद की कमी पशुओं की कमज़ोरी, किसानों में शिक्षा की कमी तथा गरीबी के कारण भारत कृषि प्रधान देश होते हुए भी यहाँ की कृषि की दशा शोचनीय है।

प्रश्न ५० भारत में कृषि सुधार के लिए क्या किया जाना चाहिये ?

खेत का न्यूनतम क्षेत्रफल

उत्तर—भारत के किसानों के पास ज़मीन बहुत थोड़ी-थोड़ी है और इसके भी धीरे-धीरे और अधिक टुकडे होते जा रहे हैं। एक परिवार को ठीक प्रकार से जीवन व्यतीत करने के लिए कम से कम ३० एकड भूमि चाहिए। हमें भूमि के एकत्रीकरण के लिए विशेष प्रयत्न करने चाहिएँ। और खेती सामूहिक रूप से करनी चाहिये।

भारत में इस समय केवल १६ प्रतिशत भूमि मे सिंचाई होती है। हार

सिंचाई की योजनाएँ

ही में केन्द्रीय सरकार ने सिंचाई की बड़ी-बड़ी योजनायें बनाई हैं। इनमें दामोदर घाटी योजना, कोसी योजना, हीराकुण्ड योजना, तुंगभद्रा योजना विशेष उल्लेखनीय हैं। इन योजनाओं के लिए २ अरब ३० करोड़ रुपये खर्च होंगे। और इन से १ करोड़ २० लाख एकड़ भूमि में सिंचाई होगी। इन योजनाओं को पूरा होने में अभी समय लगेगा। इसलिये अपनी एक दम आवश्यकता के लिए ट्यूबवैल इत्यादि से सिंचाई का प्रबन्ध करना चाहिये।

खेतों में अच्छी खाद डालनी चाहिये गोबर को जलाने की बजाय उसे खाद के लिये उपयोग में लाना चाहिये।

अच्छे बीज तथा अच्छी खाद की व्यवस्था

इसके अतिरिक्त अच्छे बीज का प्रबन्ध भी करना चाहिये। अच्छे बीज के बिना उपज अच्छी नहीं होती।

अच्छी नसल के पशु

हमें अपने पशुओं की नसल सुधारने की ओर बहुत ध्यान देना चाहिये और जीर्ण तथा हीन पशुओं की संख्या में कमी करनी चाहिये।

सहकारी खेती

एक गांव के लोगों को आपस में मिल कर खेती करनी चाहिये और बाद में उपज का बटवारा कर लेना चाहिये। इससे उनको कई प्रकार से लाभ होगा। सहकारी ढंग से कार्य करने पर उन्हें रुपये थोड़ी दर पर मिल सकते हैं। भूमि का एकीकरण हो जाने से ट्रैक्टर आदि का उपयोग सम्भव होता है। सिंचाई की योजना भी कार्यान्वित हो सकती है। और इस प्रकार कम खर्च में अधिक उत्पादन होता है।

जंगल लगाना

भूमि के कटाव को रोकने के लिये, अधिक वर्षा हो इस के लिये तथा बंजर भूमि में वृद्धि को रोकने के लिए जंगल लगाने अत्यन्त आवश्यक हैं।

ग्राम विश्वविद्यालयों की स्थापना

देश में कृषि कालिजों की स्थापना की जानी चाहिये जहां पर कृषि सम्बन्धी शिक्षा मिलनी चाहिये और इस प्रकार कृषक भाइयों को शिक्षित बनाना चाहिये। उनको नये-नये खेती के ढंगों से अवगत कराना चाहिये।

सरकार द्वारा भी कृषि सुधार की योजनायें बनाई जाती चाहियें। सरकार को चाहिये कि, अच्छी खाद, अच्छे बीज तथा आधुनिक मशीनरी आदि की व्यवस्था करे जिससे भारतीय कृषि में सुधार हो सके।

प्रश्न ५१ भारत मे अंग्रेजो का राज्य स्थापित होने पर किस प्रकार भारतीय कुटीर व्यवसाय की अवनति हुई ?

अंग्रेजों के काल में कुटीर व्यवसाय का ह्रास

उत्तर—भारत में अंग्रेज़ों का राज्य स्थापित होने ही यहा के उद्योग धन्धों का ह्रास होना प्रारम्भ हो गया। इगलैण्ड में औद्योगिक क्रान्ति हुई और इगलैण्ड के बने माल को भारत की मण्डिया मिल गई। भारत से कच्चा माल इगलैण्ड भेजा गया और वहां का बना माल ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा भारतीयों के सिर पर जबरदस्ती थोपा गया।

इगलैण्ड से जो माल भारत आता था उस पर बहुत मामूली कर लगाया जाता था जब कि भारत के माल पर इगलैण्ड जाते समय ४०० प्रतिशत तक चुगी देनी पड़ती थी। इंगलैण्ड में भारत के बने हुए कपड़े के उपयोग पर पाबन्दी लगा दी गई। जिन लोगो ने भारतीय कपड़े का उपयोग किया उन पर जुर्माने किये गये। इस प्रकार भारतीय वस्त्र व्यवसाय को नष्ट करने के लिये पूरा प्रयत्न किया गया। भारत मे लोहा गलाने के कारखाने थे, उनका ठेका अंग्रेज़ों को दिया गया और इङ्गलैण्ड से सस्ता लोहा लाकर यहा बेचा गया। भारत मे बने हुए जहाजों में इङ्गलैण्ड माल भेजना कानून द्वारा निषिद्ध कर दिया गया और इस प्रकार यह जहाज़ों के निर्माण का कार्य भी बन्द हो गया। धीरे धीरे एक उद्योग के पश्चात दूसरा ऐसे करके सब उद्योग चौपट हो गये।

इसके साथ-साथ यहा पर मशीनो से माल बनने लगा तथा बाहर से मशीनों का बना माल यहा आने लगा और यहां का हाथ का बना माल मशीन के बने माल की प्रतियोगिता मे ठहर न सका और समाप्त हो गया।

प्रश्न ५२ आज भारत मे कुटीर व्यवसाय का क्या महत्व है ?

उत्तर—भारतीय अर्थ व्यवस्था म कुटीर व्यवसाय का बड़ा

कुटीर व्यवसाय का महत्व

महत्वपूर्ण स्थान है। औद्योगीकरण की आवश्यकता के साथ साथ कुटीर व्यवसाय भी अपना अलग स्थान रखता है। औद्योगीकरण के विकास के साथ जैसे जैसे मशीनों की संख्या मे वृद्धि होती है वैसे ही वेकारी भी बढ़ती जाती है। कुटीर व्यवसाय इन बेकार लोगों के लिये काम प्रस्तुत करता है।

बडे-बडे कारखानों के लिए अधिक पूंजी तथा श्रमिकों की आवश्यकता होती है और कुटीर व्यवसाय में थोड़ी पूंजी से अधिक श्रमिक काम कर सकते हैं। इसलिये यह भारत की वर्तमान आर्थिक स्थिति के अनुकूल है।

इसके अतिरिक्त भारत कृषि प्रधान देश है। भारत की ८० प्रतिशत जन-संख्या का निर्वाह खेती पर होता है। हमारे इन ८० प्रतिशत लोगों की अवस्था बहुत दयनीय है। यह लोग वर्ष मे कुछ महीने व्यस्त रहते हैं और शेष सारा समय वह खाली रहते हैं। उस समय में कुटीर व्यवसाय द्वारा यह लोग अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं और अपने जीवन को सुधार सकते हैं।

अनेकों कठिनाइयों के होते हुए भी भारत मे कुटीर व्यवसाय तथा गृह उद्योग जीवित । इनमें सूती व ऊनी वस्त्रों की बुनाई तथा कताई, का काम रेशम का काम, चमड़ा कमाना, जूते बनाना, लकड़ी का काम, मिट्टी के बर्तन बनाना व तेल निकालना आदि मुख्य हैं। इनके अतिरिक्त दरी बुनना, कालीन बनाना निवाड़ बुनना, कसीदे का काम, लोहे का काम, छापे दार का काम और चटाई बनाना आदि अनेक धन्धे प्रचलित हैं। इस प्रकार यह गृह उद्योग अथवा कुटीर व्यवसाय भारतीय अर्थ व्यवस्था के [illegible] रहे हैं [illegible] अपने-अपने स्थान पर बड़ा महत्व रखते हैं।

प्रश्न ५३ भारत के कुटीर व्यवसा [illegible] सकती हैं ?

उत्तर—भारतीय अर्थ व्यवस्था में कुई [illegible]

कुटीर उद्योगों के पुनरुद्धार के लिये सुझाव

है। कुटीर व्यवसाय की उन्नति के लिये सरकार को चाहिये कि कारीगरों को रुपया उधार देने की व्यवस्था करे तथा इन कुटीर उद्योगों द्वारा उत्पन्न किये हुए माल को बेचने का प्रबन्ध भी करे। सरकारी दफ्तरों में काम आने वाले स्टेशनरी तथा अन्य सामान इन्हीं कुटीर व्यवसाइयों से खरीदा जाना चाहिये। कुटीर व्यवसाय द्वारा तैयार की हुई वस्तुओं को प्रदर्शनियों में रखा जाना चाहिये और इस प्रकार इन वस्तुओं से विज्ञापन और प्रचार द्वारा जनता को परिचित कराना चाहिये और कारीगरों को अधिकाधिक निर्माण करने के लिये प्रोत्साहन देना चाहिये। सरकार को यह भी चाहिये कि सस्ते दामों पर कच्चा माल इन कारिगरों को प्राप्त करावे।

कारिगर लोगों को अपने सगठन बनाने चाहियें और सहकारी सस्थायें निर्माण करनी चाहियें। यह सस्थायें सामूहिक रूप से रुपये तथा अन्य उपयोगी सामग्री का आसानी से प्रबन्ध कर सकती हैं।

हमारे कारिगर आज भी पुराने ढग के औजारों से ही काम कर रहे हैं। हमारी सरकार को चाहिये कि इन्हे नये नये प्रकार के औज़ारों से अवगत करावे। अन्य देशों की भान्ति कुटीर उद्योग के लिये नये ढग की मशीनों का आविष्कार हो इसकी ओर ध्यान देना चाहिये। कारीगरों को शिक्षा के लिये अच्छे से अच्छे स्कूल तथा कालेजों का निर्माण होना चाहिये जहाँ कला की दृष्टि से विद्यार्थियों को उत्तम शिक्षा मिल सके और हमारे कुटीर उद्योग भी पनप सकें।

कुटीर उद्योगों में उत्पादन पर खर्च कम करने के लिये तथा उत्पादन में वृद्धि करने के लिये गाव गाव में बिजली का फैलाव होना चाहिये। स्विटज़रलैंड में घड़िया कुटीर उद्योग द्वारा ही बनाई जाती है। वहाँ पर छोटे छोटे उद्योगों को भी विद्युत शक्ति से चलाया जाता है। भारत में विद्युत शक्ति के निर्माण के लिये बहुत प्राकृतिक साधन उपलब्ध है हमें उनको उपयोग में लाने का भरपूर प्रयत्न करना चाहिये।

प्रश्न ५४ अंग्रेजों के भारत में आने के पूर्व कुटीर व्यवसाय तथा अन्य उद्योगों की क्या अवस्था थी ?

उत्तर—अंग्रेजों के श्री चरण भारत में पड़ने से पहिले भारत के उद्योग धन्धे बड़ी उन्नत अवस्था में थे। सम्वत् ७० ईस्वी में प्लिनी नामक एक रोमन इतिहासज्ञ लिखता है कि भारत का माल रोम में आकर १०० गुणी कीमत पर बिकता था। रेशम, सन, जूट आदि के वस्त्र बन कर भारत से विदेशों में भेजे जाते थे। मौर्य काल में भारत में नौका बनाने का धन्धा भी चलता था। सिकन्दर ने सिन्धु नदी को भारतीय नावों द्वारा ही पार किया था। नाव बनाने का कार्य समाप्त तब हुआ जब ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भारतीय पोतों में माल बाहर भेजने पर पाबन्दी लगा दी। गांव के लोग लोहे से अस्त्र शस्त्र भी बनाते थे। इस प्रकार उद्योग धन्धों तथा गृह उद्योगों में हमारा देश खूब उन्नति पर था।

प्राचीन भारत में कुटीर व्यवसाय की समृद्धि

मध्य युग में भी भारत का बना माल विदेशों में जाता रहा है। मार्को पोलो ने लिखा है कि इस समय भारत में लाल नीले चमड़े की चटाइयां बनती थीं जिनपर सुनहरे, रुपहरे पशु पक्षियों के चित्र कढ़े हुये होते थे। भांति-भांति के नक्काशीदार बर्तन बनाये जाते थे। काश्मीर में ऊनी काम तथा काशी में ज़री तथा बर्तनों का बहुत अच्छा काम होता था। मुगलों के जमाने में रेशमी कपड़ा, बर्तन, चमड़े का सामान तथा सोने चांदी की वस्तुयें बनती थीं। कसीदा, नक्काशी तथा जरदोज़ी का काम बहुत अच्छा होता था। हमारी ढाके की मलमल को तो संसार जानता है। इन सब उद्योग धन्धों द्वारा लाखों स्त्री पुरुष अपना पेट पालते थे। अब्दुल फजल ने आईने अकबरी में उस समय के कला कौशल का अच्छा वर्णन किया है जिससे उस समय के भारत का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त होता है।

मध्यकालीन भारत में कुटीर व्यवसाय

नौकरी आदि करने के अतिरिक्त निर्वाह का और कोई साधन न रहा। भारत में आने वाले माल पर नाम मात्र कर लगाया गया जिससे वह भारत में बने माल से भी सस्ता बिक सके और भारत से बाहर जाने वाले माल पर १०० गुणा कर लगा दिया जाता था जिससे वह विदेशों में अंग्रेजी माल की तुलना में मंहगा रहे। इस प्रकार कोई ऐसी चाल बाकी नहीं रही जिसे भारतीय उद्योग धन्धों को समाप्त करने के लिये उपयोग नहीं किया गया हो।

प्रश्न ५५. सहकारी खेती (Cooperative Farming) से क्या मतलब है ?

सहकारी खेती

उत्तर—हमारे किसान सदा ऋण के बोझ से दबे रहे। न वे अच्छी खाद का प्रबन्ध कर सके न अच्छे बीज का और न हीं आधुनिक ढग के खेती के साधनो को ही उपयोग में ला सके। इसके अतिरिक्त भारत में खेतों के बहुत छोटे-छोटे टुकडे हो गये। यदि बहुत सारे छोटे-छोटे टुकडों का एकत्री-करण कर लिया जाय तो उत्पादन अधिक होगा और खर्च बहुत कम। किन्तु यह सब तभी सम्भव हो सकता है जब किसान लोग सहकारी समितियों का निर्माण करें।

सहकारी समिति का अर्थ है सामूहिक रूप से खेती करना। एक गाव के थोड़े से लोग मिल जाय और वह अपनी-अपनी ज़मीन को अलग-अलग जोतने के स्थान पर सारी ज़मीन का एकीकरण करलें और फिर उसकी जुताई आदि सामूहिक रूप से करें। जो लोग खेत पर काम करें उन्हे उसकी तनख्वाह मिले। इस प्रकार जो उपज हो उसमें से बराबर हिस्सा बांट लें। सहकारी ढग से खेती करने पर हम कृषि उद्योग को बहुत उन्नत बना सकते हैं। सहकारी समिति के प्रभाव के कारण रुपया थोड़े ब्याज पर मिल सकता है। अच्छे ढङ्ग का खाद तथा अच्छे बीज का प्रबन्ध करने में भी सुविधा हो जाती है। सब से बडा लाभ जो सहकारी खेती द्वारा होता है वह भूमि के एकत्रीकरण हो जाने से ट्रैक्टर आदि आधुनिक प्रकार की मशीनरी का उप-योग सम्भव हो जाता है। किसान लोगों को अपनी उपज मण्डियों में बेचने

के लिये भी बहुत कठिनाई आती है। सहकारी ढङ्ग से खेती करने पर वह अपनी उपज को मण्डियों में सामूहिक रूप से बेच सकते हैं। इस प्रकार उनका बहुत-सा खर्च बच जाता है। अत स्पष्ट है कि सहकारी समितियों द्वारा कृषि व्यवसाय को बहुत उन्नत बनाया जा सकता है और इनका भारत के कृषि उद्योग में बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है।

———

अध्याय ८

भारत के बड़े-बड़े उद्योग

प्रश्न ५६ भारत के मुख्य बड़े-बड़े उद्योग कौन से हैं? उनकी क्या स्थिति है?

उत्तर—प्राचीन काल में भारत अपने औद्योगिक विकास के लिए प्रसिद्ध था। यूरोप में औद्योगिक क्रान्ति के पश्चात् कारखानों में मशीनों से माल बनने लगा जो सस्ता और सुन्दर था। भारत का हाथ का बना माल उसके सामने नहीं ठेर सका। धीरे-धीरे भारत में भी औद्योगीकरण होने लगा और अंग्रेजों की नीति इसके विपरीत होने पर भी प्रथम तथा द्वितीय महायुद्ध में यहां पर बड़े-बड़े कारखानों तथा उद्योगों का निर्माण हुआ।

ऐतिहासिक परिचय

हमारे देश में सब से अधिक विकसित उद्योग कपड़े का है। देश में इस समय ४२७ के लगभग कारखाने हैं जहां कपड़ा बनता है। यहां से बर्मा, ईरान, ईराक और अफ्रीका आदि देशों में कपड़ा भेजा जाता है। पिछले वर्षों में इस उद्योग की स्थिति कुछ ढीली पड़ गई है। कई मिलें बन्द हो गई हैं कइयों में कारीगरों की छटनी कर दी गई है। इसका कारण कपास की कमी है। विभाजन के पश्चात् अधिक कपास उपजाऊ क्षेत्र पाकिस्तान में चले गये हैं। जब तक भारत तथा पाकिस्तान में कोई स्थाई समझौता नहीं हो जाता इस अवस्था में सुधार की अधिक आशा नहीं है।

सूती वस्त्र उद्योग

भारत का दूसरा महत्व पूर्ण उद्योग है जूट। जूट अधिकांश पूर्वी बंगाल में होता है। जूट की मिलें कलकत्ते में अथवा हुगली के किनारे हैं। विभाजन से जूट उपजाऊ सभी क्षेत्र पाकिस्तान में चले गये हैं और जूट के कारखाने भारत में रह गये हैं। इस उद्योग के पनपने के लिये भी पाकिस्तान से सधी की आवश्यकता है।

जूट के कारखाने

आज के युग में लोहे का उद्योग बहुत महत्वपूर्ण है। कोई भी मशीन ऐसी नहीं जिस में लोहे का उपयोग न होता हो। इसी कारण इस युग को (Iron age) कहते हैं। भारत में यह उद्योग बहुत पुराना है। भारतीय लोह उद्योग के विकास में टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी का प्रमुख स्थान है। इस कम्पनी का एक कारखाना सन् १९०७ में जमशेदपुर में खुला था। इस में भारी मशीनें तथा रेल की लाइनें बनती हैं। १९४९ में भारत में कुल नौ लाख टन इस्पात का वस्तुयें बना जिन में ७ लाख टन अकेले जमशेदपुर में बनी। आज भारत में स्टील का तथा इस्पात की वस्तुयें बनाने का काम अच्छा होने लगा है। किन्तु फिर भी उन्नत देशों की तुलना में नहीं के बराबर है

लोहे का उद्योग

भारत में आज चीनी का उत्पादन अच्छा होता है किन्तु हमारी चीनी जावा से आने वाली चीनी की तुलना में अब भी महगी पड़ती है। हमें चीनी का उत्पादन और बढ़ाना चाहिये तथा गन्ने की उपज बढ़ाने के लिये भी प्रयत्न करना चाहिये।

चीनी उद्योग

इन के अतिरिक्त भारत में सिमेंट का उद्योग तथा कागज़ का उद्योग भी धीरे धीरे उन्नति कर रहे हैं। सिमेंट के २२ कारखानों में प्रति वर्ष ४० लाख टन सिमेंट बनता है। कागज की १४ मिलों में १ लाख ३० हजार टन कागज़ का उत्पादन होता है। दिया सलाई का उद्योग भी काफी विकसित है। हम दिया सलाई विदेशों से नहीं मंगानी पड़ती। इन के अतिरिक्त भारतीय खनिज उद्योगों का भी यहां के उद्योगों में बड़ा महत्व पूर्ण स्थान है।

वह इस ओर और अधिक पूंजी लगाने मे भय खाते हैं। वह डरते हैं कि यदि भविष्य में उद्योगों का राष्ट्रीयकरण हुआ तो उन की सारी पूंजी मारी जायगी, किन्तु सरकार को इस ओर अपनी नीति स्पष्ट कर देनी चाहिये और विदेशी पूंजी का भारतीय औद्योगिक विकास में उपयोग करना चाहिये। किन्तु विदेशी कम्पनियों को भारतीय कम्पनियों के नियमों के अन्तर्गत ही कार्य करना होगा।

आधारभूत कल कारखानों की स्थापना

भारत को कल कारखानों के निर्माण के लिये भारी मशीनरी बाहर से मंगानी पड़ती है। हमें शीघ्र ही इन भारी मशीनों के निर्माण के लिये आधार भूत कल कारखानों की स्थापना करनी चाहिये जिस से दूसरे कारखाने स्थापित होने में सहायता मिल सके।

औद्योगिक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना

हमारे देश में शिक्षित और अच्छे कारीगरों की बहुत कमी है। हमें उच्च कोटि की शिक्षण संस्थाओं का निर्माण करना चाहिये और उन में शिक्षा देने के लिये अनुभवी शिक्षक विदेशों से मगाने का प्रबन्ध करना चाहिये। जिस से अधिकाधिक व्यक्ति औद्योगिक शिक्षण प्राप्त कर सकें।

श्रमिक हित सम्बन्धी कार्य

हमारे कारखानों में काम करने वाले कारीगर अशिक्षित हैं उनकी शिक्षा का प्रबन्ध होना चाहिये। उन्हे कारखाना में अधिक समय काम करना पड़ता है। यद्यपि कुछ फैक्ट्री कानूनों द्वारा समय में कमी की गई है किन्तु फिर भी छोटी छोटी फैक्ट्रियाँ बहुत हैं जहाँ ये नियम लागू नहीं होते, कारखानों तथा घरों में सफाई की कमी के कारण हमारे कारीगरों का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता। उन्हें वेतन भी पूरा नहीं मिलता। इसलिए वे अपनी कार्य कुशलता, तथा क्षमता को बढ़ाने के स्थान पर दिन प्रति दिन खोते जा रहे हैं। हमें इन लोगों का जीवन स्तर ऊंचा

उठाने का प्रयत्न करना चाहिए, तभी हम औद्योगिक दृष्टि से उन्नति के स्वप्न सत्य कर सकेंगे।

इस प्रकार औद्योगिक उन्नति के लिये अधिक पूंजी, अधिक मशीनें, औद्योगिक शिक्षण तथा मजदूरों का जीवन स्तर ऊंचा करने की अत्यन्त आवश्यकता है।

वह इस ओर और अधिक पूंजी लगाने मे भय खाते हैं। वह डरते हैं कि यदि भविष्य मे उद्योगों का राष्ट्रीय करण हुआ तो उन की सारी पूंजी मारी जायगी, किन्तु सरकार को इस ओर अपनी नीति स्पष्ट कर देनी चाहिये और विदेशी पूंजी का भारतीय औद्योगिक विकास में उपयोग करना चाहिये। किन्तु विदेशी कम्पनियों को भारतीय कम्पनियों के नियमों के अन्तर्गत ही कार्य करना होगा।

आधारभूत कल कारखानों की स्थापना

भारत को कल कारखानों के निर्माण के लिये भारी मशीनरी बाहर से मंगानी पडती है। हमे शीघ्र ही इन भारी मशीनों के निर्माण के लिये आधार भूत कल कारखानों की स्थापना करनी चाहिये जिस से दूसरे कारखाने स्थापित होने में सहायता मिल सके।

औद्योगिक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना

हमारे देश में शिक्षित और अच्छे कारीगरों की बहुत कमी है। हमें उच्च कोटि की शिक्षण संस्थाओं का निर्माण करना चाहिये और उन में शिक्षा देने के लिये अनुभवी शिक्षक विदेशों से मगाने का प्रबन्ध करना चाहिये। जिस से अधिकाधिक व्यक्ति औद्योगिक शिक्षण प्राप्त कर सकें।

श्रमिक हित सम्बन्धी कार्य

हमारे कारखानों में काम करने वाले कारीगर अशिक्षित है उनकी शिक्षा का प्रबन्ध होना चाहिये। उन्हे कारखानो में अधिक समय काम करना पडता है। यद्यपि कुछ फैक्ट्री कानूनो द्वारा समय में कमी की गई हैं किन्तु फिर भी छोटी छोटो फैक्ट्रियाँ बहुत हैं जहाँ ये नियम लागू नहीं होते, कारखानों तथा घरों में सफाई की कमी के कारण हमारे कारीगरों का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता। उन्हें वेतन भी पूरा नहीं मिलता। इसलिए वे अपनी कार्य कुशलता, तथा क्षमता को बढ़ाने के स्थान पर दिन प्रति दिन खोते जा रहे हैं। हमें इन लोगों का जीवन स्तर ऊंचा

उठाने का प्रयत्न करना चाहिए, तभी हम औद्योगिक दृष्टि से उन्नति के स्वप्न सत्य कर सकेंगे।

इस प्रकार औद्योगिक उन्नति के लिये अधिक पूंजी, अधिक मशीनें, औद्योगिक शिक्षण तथा मजदूरों का जीवन स्तर ऊंचा करने की अत्यन्त आवश्यकता है।

———

रेलों के विकास से भारत में मशीन उद्योग को बड़ी सहायता मिली है। रेलों द्वारा भारी से भारी मशीनें देश के कोने कोने तक पहुँच सकी और यहाँ पर भी औद्योगिकरण सम्भव हो सका। सारे देश में संगठित शासन व्यवस्था स्थापित करने में बड़ी सहायता मिली। कारखानों में बना हुआ माल मण्डियों तक पहुचाने में भी रेलों ने बड़ी सहायता दी है।

प्रश्न ६२ सड़कों का आर्थिक महत्व क्या है? भारत में सड़कों का कितना विकास हुआ है?

उत्तर—सन् १९४९ में भारत में १,४४००० मोटरें, बसें तथा ट्रक इत्यादि चलते थे और १९४९ में भारत में १,७९००० ट्रक आदि सड़कों पर चलते थे। रेल के विकास के साथ साथ मोटरों की सख्या भी बढ़ती जा रही है। किन्तु मोटरों के इस विस्तार को देखते हुये भारत में सड़कों के निर्माण का कार्य बहुत कम हुआ है।

भारत में सड़कें

भारतीय सघ में आज २,४०००० मील लम्बी सड़कें हैं। इनमें से अच्छी सड़कें ७६ हजार मील हैं और सिमेंट वाली सड़कों की लम्बाई केवल १० हजार मील है। भारत के विस्तार को तथा जन संख्या को देखते हुये यहां सड़कें बहुत कम हैं। अमरीका में सडकों की लम्बाई एक लाख लोगों के पीछे २५०० मील है। फ्रास मे ९३४ मील इगलैंड में ३९२ मील और भारत में केवल ८९ मील ही है। हमारी सड़कों की हालत भी खराब है। पैसे की कमी के कारण बहुत समय तक इनकी मरम्मत भी नहीं होती है। भारत में सडकें बनाने के लिए एक पांच वर्षीय योजना बनाई गई है जिसके अनुसार सड़कों की लम्बाई २४०००० मील से २९९००० मील तक हो जाने का ख्याल है। इस योजना के अनुसार कुल १२० करोड रुपये व्यय होने का अनुमान है।

आर्थिक दृष्टि से सड़कों का बड़ा ही महत्व है। रेलों के निर्माण से भारतीय अर्थ व्यवस्था पर बड़ा प्रभाव पड़ा है। किन्तु रेलें गाव गाव और कस्बे कस्बे में नहीं जा सकती। इसलिये जो काम रेलों द्वारा नहीं हो सकता वह मोटरें पूरा कर देती हैं। गाव से कपास और गन्ना इत्यादि तथा अन्य

कच्चा माल कारखानों तक पहुँचाना और कारखानो से तैयार माल ग्राहकों तक पहुचाने में मोटरों ने बड़ी सहायता दी है। पहिले किसान लोग गाव से अनाज बैल गाड़ियों में मंडियों तक ले जाते थे इस प्रकार उन्हे कई दिन लग जाते थे। इसी बीच में अनाज का भाव गिर जाता था। सडकों के निर्माण से यह कठिनाई बहुत दूर हो गई है। इस प्रकार सडको का आर्थिक दृष्टि से बड़ा महत्व है।

प्रश्न ६३ भारत में समुद्री तथा आकाश यातायात का विकास कहाँ तक हुआ है?

उत्तर—भारत में नौका बनाने का कार्य बहुत पहिले होता था।

जल यातायात और आकाश यातायात

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के समय में नियम द्वारा भारतीय जहाजों में माल विदेशों से भेजना निषेध कर दिया गया। इस से भारतीय नौका व्यवसाय चौपट हो गया और भारतीय जहाजों का स्थान अंग्रेजी जहाज़ों ने ले लिया। कुछ समय के पश्चात भारतीय व्यापारियों को निकटवर्ती स्थानों पर जहाज़ लाने ले जाने का अवसर दिया गया।

इस समय से लगातार स्वतंत्रता प्राप्ति तक भारत में नौका उद्योग ने कोई उन्नति नहीं की। यद्यपि इस उद्योग को फिर से जीवित करने के लिये इस से पहिले भी बहुत प्रयत्न किये गये और बहुत से उद्योग पतियों ने अंग्रेज सरकार से भारत में जहाज बनाने के कारखाने खोलने की आज्ञा माँगी। किन्तु आज्ञा न मिली। आजकल भारत सरकार जहाजों के निर्माण तथा विकास के लिये बहुत प्रयत्न कर रही हैं। सन् १६४६ में विज़गापट्टम में प्रथम भारतीय जहाज़ समुद्र में प्रवेश करा दिया गया जहाज बनाने वाली कम्पनियों को भारत सरकार द्वारा विशेष संरक्षण प्राप्त है। भारत सरकार की योजना के अनुसार शीघ्र ही कम से कम ७५ प्रतिशत व्यापार निकट वर्तीय देशों से तथा ५० प्रतिशत व्यापार दूर देशों से भारतीय जहाजों में होने लगेगा।

भारत में वायुयान बनाने का कार्य १६३२ में प्रारम्भ हुआ। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात वायुयानों के उद्योग को कुछ प्रोत्साहन मिला है। इस समय हमारे देश में छ. वायुयान कम्पनियाँ हैं जिन में से एयर इंडिया लिमिटेड, डालमिया जैन एयरवेज के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। १६४७ में एयर इण्डिया कम्पनी को ६ लाख रुपये का लाभ हुआ जबकि अन्य कम्पनियों को ५७ लाख रुपये का घाटा रहा। अभी इन कम्पनियों की आर्थिक स्थिति वायुयान जैसे उद्योग के लिये अनुकूल नहीं है किन्तु भविष्य में पर्याप्त सुधार की आशा है।

अध्याय १०

हमारा संविधान

प्रश्न ६४ भारतीय संविधान में क्या-क्या विशेषताएं हैं ? तथा उसकी मुख्य मुख्य बातें कौनसी हैं ?

संविधान सभा

उत्तर—भारतवर्ष १५ अगस्त सन् १९४७ को स्वतन्त्र हुआ किन्तु हमारी संविधान सभा दिसम्बर १९४६ में ही बन चुकी थी। इस सभा के तीन वर्षों के अथक परिश्रम से यह संविधान बन कर तैयार हुआ और इस संविधान के अनुसार २६ जनवरी १९५० को भारत एक गणतन्त्रात्मक गण राज्य घोषित कर दिया गया। इसके पश्चात भारत का सम्पूर्ण प्रभुत्व जनता के हाथ में आ गया और भारत सब प्रकार से बाहरी प्रभाव से पूर्ण स्वतन्त्र हो गया।

संविधान के अनुसार भारत एक धर्म-निरपेक्ष राज्य है। प्रत्येक धर्म के अनुयायियों को यह अधिकार है कि वह अपने धर्म का प्रचार कर सके।

सामाजिक समानता

हमारे संविधान की सब से बड़ी विशेषता है कि संविधान के अनुसार धर्म, वर्ण अथवा जाति के आधार पर किसी भी जाति से पक्षपात नहीं किया जायगा।

किसी भी नागरिक को सेना तथा शिक्षा सम्बन्धी उपाधियों के अतिरिक्त और कोई उपाधि नहीं दी जायगी। विदेशी उपाधियों के सम्बन्ध में राष्ट्रपति की अनुमति आवश्यक है।

हमारे देश में क़ानून का शासन है। क़ानून की दृष्टि में सब नागरिक समान है।

विधान के अनुसार भारत चार प्रकार के राज्यों का संघ है। (अ) इस श्रेणी में वे राज्य सम्मिलित हैं जो स्वतन्त्रता से पहिले प्रान्त कहलाते थे। (ब) इसमें बहुत सी छोटी-छोटी रियासतों को मिला कर जो राज्य बनाये गये हैं वे तथा कुछ बड़ी-बड़ी रियासतों के राज्य सम्मिलित हैं। (स) इसमें वे राज्य हैं जिनका शासन प्रबन्ध केन्द्रीय सरकार के हाथ में है जैसे देहली, अजमेर, मेरवाड़ा आदि। (द) इनके अन्तर्गत अण्डमान तथा निकोबार के टापू हैं।

संघ राज्य

संघ तथा राज्यों में अधिकारों के बटवारे की दृष्टि से तीन सूचिया बनाई गई हैं। पहली सूची वह है जिसमें संघ के अधिकारों का वर्णन है दूसरी वह है जिसमें राज्यों के अधिकार दिए गए हैं तथा तीसरी सूची के विषयों पर राज्य तथा संघ दोनों ही नियम बना सकते हैं। इन सूचियों को क्रमश. संघ सूची, राज्य सूची तथा समवर्ती सूची कहा जाता है।

राष्ट्रपति भारतीय संघ का वैधानिक शासक होगा। उसका चुनाव ५ वर्ष के लिए होगा। राष्ट्रपति भारत की नौ सेना थल सेना तथा वायु सेना का प्रधान होगा। राज्यपालों तथा राज्य प्रमुखों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा होगी। प्रत्येक बिल पर क़ानून बनने से पहिले राष्ट्रपति की अनुमति आवश्यक है।

भारत का एक उपराष्ट्रपति भी होगा जिसे संसद के दोनों भवनों के सदस्य चुनेंगे। उपराष्ट्रपति राज्य-परिषद् का अध्यक्ष होगा तथा राष्ट्रपति की अनुपस्थिति में कार्य करेगा।

विधान के अनुसार प्रधान मन्त्री मन्त्रि-परिषद का प्रमुख है और लोक सभा का नेता है। प्रधान मन्त्री की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा होती है तथा प्रधान मन्त्री राष्ट्रपति की अनुमति से अन्य मन्त्रियों की नियुक्ति करता है। मन्त्री परिषद अपने कार्य के लिए प्रधान मन्त्री तथा लोक सभा के प्रति उत्तरदायी है। यदि लोक सभा अविश्वास का प्रस्ताव पास करे तो प्रधान-मन्त्री को तथा उसके साथ मन्त्री परिषद को त्याग पत्र देना पड़ता है।

भारतीय विधान में संसद के दो भवनों का निर्माण किया गया है।

एक भवन का नाम लोक सभा है जिसमें ५०० के लगभग सदस्य होंगे और दूसरे भवन का नाम राज्य परिषद है जिसमें २५० सदस्य होंगे इनमें से २३८ राज्यों की ओर से निर्वाचित होंगे और १२ राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त किये जायेंगे। संसद देश के लिए क़ानून बनाती है, बजट पर विचार करती है तथा देश की शासन नीति का निर्माण करती है। यदि मन्त्री-परिषद ठीक कार्य न करे तो लोक सभा अविश्वास के प्रस्ताव द्वारा उनसे त्याग पत्र ले सकती है। इस प्रकार वास्तव में संसद ही देश का शासन चलाती है।

प्रश्न ६५ भारतीय संविधान में नागरिकों के मूल अधिकार क्या हैं?

उत्तर—संविधान के अन्तर्गत भारत एक सम्पूर्ण सत्ता सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य है जिसके अनुसार भारत की सम्पूर्ण प्रभुसत्ता जनता के हाथ में है।

प्रत्येक देश के विधान के अनुसार वहाँ की जनता को कुछ मूल अधिकार दिये गये हैं। इसी प्रकार भारतीय संविधान के अनुसार हमें भी कुछ मूल अधिकार प्राप्त हैं।

सामाजिक समानता

हमारे संविधान की दृष्टि में प्रत्येक नागरिक समान है चाहे वह किसी भी जाति अथवा मत के मानने वाला हो। जाति अथवा धर्म अथवा जन्म स्थान के आधार पर किसी भी नागरिक से पक्षपात पूर्ण व्यवहार नहीं किया जायगा। छूत छात की भावना रखना नियम विरुद्ध घर दी गई है।

के आचरण से संसद असन्तुष्ट हो तो वह अविश्वास का प्रस्ताव पास करके उससे त्याग पत्र ले सकती है। इस प्रकार मन्त्री परिषद् अपने आचरण के लिये संसद के प्रति उत्तरदायी है। संसद संघ सूची तथा समवर्ती सूचियों के अन्तर्गत विषयों पर तो नियम बनाती ही है किन्तु वह राज्य सूची सम्बन्धी विषयों पर भी नियम बना सकती है यदि राष्ट्रपति संकट की घोषणा करदे अथवा ऐसा करना राष्ट्र हित मे हो और संसद के दो तिहाई सदस्यों द्वारा इसका समर्थन किया गया हो।

थोड़े शब्दों में इतना कह सकते हैं कि वास्तव में देश का शासन संसद के हाथ में है।

प्रश्न ६८ हमारे संविधान मे राष्ट्रपति का क्या स्थान है? उनके क्या कर्तव्य तथा अधिकार हैं?

उत्तर—हमारे संविधान में राष्ट्रपति का सबसे ऊचा तथा महत्वपूर्ण स्थान है। वह देश का वैधानिक शासक है। राष्ट्रपति एक बार चुने जाने पर पांच वर्ष तक कार्य करेगा राष्ट्रपति का निर्वाचन संसद के दोनो भवनों के सदस्यों तथा राज्यों की विधान सभा के निर्वाचित सदस्यों द्वारा होगा। राष्ट्रपति के पद पर निर्वाचित होने के लिये यह आवश्यक है कि वह व्यक्ति ३५ वर्ष से अधिक आयु का हो और उसमें लोक सभा का सदस्य बनने की योग्यता हो। उसके लिये भारत का नागरिक होना आवश्यक है। राष्ट्रपति का वेतन १०,००० रुपये मासिक होगा।

राष्ट्रपति भारत की जल, थल तथा नभ सेना का सेनापति है। वह विदेशों में राजदूतों की नियुक्ति करता है तथा विदेशों से कोई संधि इत्यादि करते समय उसके हस्ताक्षर होने आवश्यक हैं। केन्द्र के मंत्रियों की नियुक्ति तथा राज्यों के राजपालों अथवा राज्य प्रमुखों की नियुक्ति भी राष्ट्रपति द्वारा होती है। राज्यों के राजपाल अथवा राज्य प्रमुख सीधे राष्ट्रपति के प्रति उत्तरदायी हैं। संकट की स्थिति की घोषणा करके राष्ट्रपति राज्यों का शासन भार स्वयं संभाल सकता है। उच्च तथा उच्चतम न्यायालयों के न्यायाधीशों की नियुक्ति भी राष्ट्रपति द्वारा ही होती है।

संसद द्वारा पास किया हुआ कोई भी बिल तब तक नियम नहीं बन सकता जब तक राष्ट्रपति की स्वीकृति न मिल जाय। इस प्रकार राष्ट्रपति को बहुत ही महत्वपूर्ण अधिकार प्राप्त हैं किन्तु वह इन अधिकारों का उपयोग प्रधान मंत्री तथा मंत्री परिषद की सलाह से ही करता है।

प्रश्न ६६—तथा भारत में न्याय की क्या व्यवस्था है भारत में उच्चतम न्यायालय (Supreme Court) तथा उच्च न्यायालय (High Court) किस प्रकार संविधान तथा नागरिक अधिकारों की रक्षा करते हैं ?

उत्तर—केन्द्र तथा राज्यों के आपसी मत भेद के समय फैसला करने के लिये भारत में उच्चतम न्यायालय की स्थापना की गई है। अन्य देशों में भी जहाँ संघात्मक शासन प्रणाली को अपनाया गया है इसी प्रकार की व्यवस्था है। उच्चतम न्यायालय में एक मुख्य न्यायाधिपति तथा सात अन्य न्यायाधीश होते हैं जिनकी नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा होगी। मुख्य न्यायाधीश का वेतन ५००० रुपये मासिक तथा अन्य न्यायाधीशों का ४००० रुपये मासिक होता है। इन न्यायाधीशों के लिये भारत का नागरिक होना आवश्यक है। और यह भी आवश्यक है कि इन में से प्रत्येक ५ वर्ष तक किसी न्यायालय का न्यायाधीश रहा हो अथवा किसी उच्च या उच्चतम न्यायालय में वकालत की हो।

उच्चतम न्यायालय हमारे संविधान की रक्षा करता है। यदि राज्य अथवा केन्द्र विधान के नियमों के विरुद्ध जा कर कानून बनावें तो उच्चतम न्यायालय उन कानूनों को अवैध घोषित कर सकता है। यदि केन्द्र अथवा राज्यों के बीच अथवा किसी व्यक्ति, संस्था अथवा सरकार के बीच कोई मत भेद हो जाय और उस में विधान की किसी धारा का स्पष्टीकरण चाहिये और यदि उच्चतम न्यायालय में इसकी अपील की गई हो तो उस स्थिति में उच्चतम न्यायालय का निर्णय अन्तिम माना जायगा। उच्च न्यायालयों के निर्णय के विरुद्ध उच्चतम न्यायालय में अपील की जा सकती है।

अ और ब श्रेणी के राज्यों में उच्च न्यायालयों की व्यवस्था की गई है। इन न्यायालयों में भी एक मुख्य न्यायाधिपति और सात अन्य न्याया-

धीश होते हैं। इनकी नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा होती है। इन का वेतन ४००० रुपये तथा ३५०० रुपये मासिक होता है। यह न्यायालय राज्यों तथा नागरिकों के बीच होने वाले तथा नागरिकों के आपस में होने वाले झगड़ों का निपटारा करेंगे। किन्तु इन न्यायालयों के निर्णय के विरुद्ध उच्चतम न्यायालय में अपील की जा सकती है। उच्चतम न्यायालय अपने आधीन सब न्यायालयों का निरीक्षण करते हैं। उच्च न्यायालय राज्य भर मे दीवानी और फौजदारी अपील का सबसे बड़ा न्यायालय है।

इस प्रकार उच्चतम न्यायालय तथा उच्च न्यायालयों की व्यवस्था से न केन्द्र राज्यों के अधिकारो पर हस्तक्षेप करने का साहस कर सकता है और न राज्य केन्द्र के अधिकारों पर ही। नागरिकों के अधिकारो की रक्षा के लिए भी इन न्यायालयों ने बडा कार्य किया है। ऐसे उदाहरण हमारे सामने हैं जब सरकार और नागरिकों के बीच वैधानिक मत भेद के समय उचचतम न्यायालय ने सरकार के विरुद्ध निर्णय दिया है।

प्रश्न ७०. हमारे सविधान मे केन्द्र तथा राज्यों के कार्यक्षेत्र का बटवारा कैसे हुआ है?

उत्तर—जिन देशों में संघात्मक सविधान लागू है वहा पर केन्द्र तथा राज्यों में अधिकारों का बन्टवारा इस प्रकार होता है कि समान हित की दृष्टि से जो भी महत्व पूर्ण विषय है वह केन्द्र के हाथ में रह जाते हैं और शेष विषयों में राज्य स्वतन्त्रता पूर्वक नियम इत्यादि बना सकते हैं। इनके अतिरिक्त कुछ ऐसे विषय होते हैं जिन पर केन्द्र तथा राज्यों की सरकारें दोनों नियम बना सकती हैं।

भारत में भी इसी प्रकार राज्यों तथा केन्द्र में अधिकारों का बटवारा हुआ है। यह बटवारा तीन सूचियों के आधार पर हुआ है।

इस सूची में वह विषय दिये गये हैं जो केन्द्र के अधिकार मे है।

सघ सूची — इसमें वर्णित सब विषय ऐसे हैं जो सारे देश के हित की दृष्टि मे महत्व रखते हैं। जैसे देश की सुरक्षा, सैनिक सगठन, विदेशी नीति, व्यापार, युद्ध शांति, रेल, डाक व तार आदि।

इस सूची में उन विषयों का स्पष्टकरण किया गया है जो शासन की दृष्टि से राज्यों के अधिकार में हैं। यह सब विषय स्थानीय हैं। इस लिये यह राज्यों को ही सौंपे गये हैं, जैसे—सार्वजनिक स्वास्थ्य, स्थानीय शासन तथा शिक्षा आदि। इन विषयों में केन्द्रीय सरकार हस्तक्षेप नहीं करेगी।

राज्य सूची

इस सूची के अन्तर्गत जो विषय आते हैं उन पर केन्द्रीय संसद तथा राज्यों के विधान मण्डलों को नियम बनाने का अधिकार है—जैसे श्रमिकों के कल्याण सम्बन्धी सुधार, नौकरी, बेकारी, तथा समाचार पत्र आदि।

समवर्ती सूची

इस प्रकार इन सूचियों द्वारा केन्द्र तथा राज्यों में देश के शासन की दृष्टि से कार्य क्षेत्रों का विभाजन किया गया है।

प्रश्न ७१ केन्द्र को राज्य के कार्यक्षेत्र में हस्तक्षेप करने के क्या अधिकार हैं? विशेष कर 'ब' श्रेणी के राज्यों के कार्यक्षेत्र के सम्बन्ध में लिखिये।

के अनुसार राज्य में कार्य नही चल सकता तो राष्ट्रपति के आदेश पर उस राज्य का शासन भार केन्द्रीय सरकार सभाल सकती है।

इस प्रकार पूर्ण शान्ति के समय राज्य त । केन्द्र अपने अपने कार्यक्षेत्र में पूर्ण रूप से स्वतन्त्र हैं किन्तु आपत्ति के समय भारत को एकात्मक (Unitary) राज्य बनाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त केन्द्रीय कार्य-पालिका (Executive) समय समय पर राज्यों की कार्यपालिकाओं को सुझाव अथवा आदेश भी दे सकती है। 'ब' श्रेणी के राज्य दस वर्ष तक केन्द्र के सुझाव के अनुसार चलेंगे। इस प्रकार भारत एक सघात्मक राज्य होने पर भी बहुत कुछ एकात्मक है और आवश्यकता पडने पर इसे पूर्ण रूप से एकात्मक राज्य भी बनाया जा सकता है।

प्रश्न ७२ हमारे सविधान में प्रधान मन्त्री का क्या स्थान है?

उत्तर—प्रधान मन्त्री उस दल का नेता होता है जिसे संसद में बहुमत प्राप्त हो। बहुमत वाले दल में से राष्ट्रपति प्रधान मन्त्री की नियुक्ति करता है। प्रधान मन्त्री राष्ट्रपति की सलाह से अन्य मन्त्रियों की नियुक्ति करता है।

मन्त्री परिषद् के सभी मन्त्री प्रधान मन्त्री के प्रति उत्तरदायी हैं यदि प्रधानमन्त्री किसी अन्य मन्त्री के कार्य से असन्तुष्ट हो तो वह उससे त्याग पत्र माग सकता है। इसी प्रकार प्रधान मन्त्री तथा मन्त्री परिषद् अपने कार्य के लिये लोक सभा के प्रति उत्तरदायी हैं। यदि लोक सभा मन्त्री परिषद् के कार्य से असन्तुष्ट हो तो वह अविश्वास का प्रस्ताव पास करके मन्त्री परिषद् से त्याग पत्र माग सकती है। इस प्रकार लोक सभा प्रधान मन्त्री तथा मन्त्री परिषद् के आचरण पर नियन्त्रण रखती है।

शासन व्यवस्था का सारा भार प्रधान मन्त्री तथा मन्त्री परिषद् पर है। देश में सुरक्षा तथा अन्य सुधारों की दृष्टि से जो क़ानून बनाने आवश्यक होते हैं वह मन्त्री वर्ग लोक सभा में पेश करते हैं। प्रधान मन्त्री दिन प्रति दिन की सरकार की नीति तथा प्रगति से राष्ट्रपति को सूचित करते रहते हैं।

उच्चतम तथा उच्च न्यायालयों के न्यायाधीश तथा विदेशों के राजदूत तथा सेनाओं के सेनापति आदि सब की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा प्रधान मन्त्री

की अनुमति अथवा सलाह से की जाती है। विदेशों से सन्धियां आदि भी प्रधान मन्त्री की सलाह से होती है। इस प्रकार देश का शासन लगभग प्रधान मन्त्री के ही हाथ में है।

प्रश्न ७३. भारतीय संघ में कौन-कौन सी श्रेणियों के राज्य सम्मिलित हैं? इनकी व्यवस्था पर एक संक्षिप्त नोट लिखिये।

उत्तर—भारतीय संघ में चार प्रकार के राज्य सम्मिलित हैं. इनमें पहली प्रकार के वे राज्य हैं जिन्हें अंग्रेजी शासन के अन्तर्गत प्रान्त कहा जाता था, अब इन्हें 'अ' श्रेणी के राज्य कहा जाता है, इनके नाम इस प्रकार हैं।

(१) उत्तर प्रदेश
(२) पूर्वी पंजाब
(३) बम्बई
(४) मध्य प्रदेश
(५) पश्चिमी बंगाल
(६) बिहार
(७) आसाम
(८) मद्रास
(९) उडीसा

स्वतन्त्रता मिलने के पश्चात भारत की सब छोटी बड़ी रियासतें भारतीय संघ में सम्मिलित हो गई थीं, इन में कई छोटी रियासतों को मिलाकर राज्य बना दिये गये थे और कुछ बड़ी रियासतों को वैसे ही राज्यों का रूप दे दिया गया था, इन दोनों प्रकार के राज्यों को 'ब' श्रेणी के अन्तर्गत रखा गया है, उनके नाम इस प्रकार है —

(१) हैदराबाद
(२) राजस्थान
(३) सौराष्ट्र
(४) काश्मीर
(५) मध्यभारत
(६) विन्ध्य प्रदेश
(७) पैप्सू
(८) मैसूर
(९) कोचीन ट्रावनकोर

प्रश्न ७४. भारतीय सघ में सम्मिलित राज्यो की शासन व्यवस्था पर एक निबंध लिखिये ?

उत्तर—भारतीय संघ में चार प्रकार के राज्य सम्मिलित हैं । प्रत्येक राज्य में एक विधान सभा होगी । कुछ राज्यों में जैसे बिहार, मैसोर, बम्बइ मद्रास, पूर्वी पंजाब, उत्तर प्रदेश, तथा पश्चिमी बगाल में विधान सभाओं के दो सदन होंगे एक का नाम विधान सभा होगा और दूसरे का नाम विधान परिषद होगा। अन्य राज्यों में केवल एक ही सदन होगा जिसका नाम विधान सभा होगा। विधान सभा के सदस्य जनता द्वारा निर्वाचित होंगे और पांच वर्ष तक कार्य करेंगे। विधान सभा अपना एक अध्यक्ष और एक उपाध्यक्ष चुनेगी। जिन राज्यों मे विधान परिषद होगी वह स्थायी रूप से कार्य करेगी और उसके एक तिहाई सदस्य प्रत्येक २ वर्ष के पश्चात स्थान रिक्त करते रहेंगे। विधान परिषद के सदस्यों का चुनाव नगर पालिकाओं, विश्व विद्यालयों, डिस्ट्रिक बोर्डों, उच्च शिक्षकों तथा विधान सभा के सदस्य द्वारा होगा।

विधान सभा राज्य के लिये नियम बनाये गी तथा मत्री मण्डल को राज्य की नीति का निर्देशन भी करती रहेगी। विधान परिषद विधान सभा द्वारा पास किये बिलों पर अपने सुझाव ही दे सकती है। किन्तु विधान सभा उनके सुझाव मानने के लिये बाध्य नहीं हैं।

'अ' और 'ब' राज्यों में एक कार्यपालिका का प्रधान होगा जिसे 'अ' राज्यों में राज्यपाल (Governor) तथा 'ब' राज्यो मे राज्य प्रमुख कहते हैं। कार्य पालिका के प्रधान की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा होगी। वह राज्य का वैधानिक शासक होगा। विधान सभा द्वारा पास किये गये बिलो पर कानून बनने मे पहिले प्रधान की स्वीकृति आवश्यक है।

विधान सभा की बहुमत वाली पार्टी से राज्यपाल एक प्रधान मत्री चुनेगा और फिर प्रधान मत्री के परामर्श से मत्री परिषद के अन्य मन्त्रियों की नियुक्ति करेगा। प्रधान मन्त्री विधान सभा की बहुमत वाली पार्टी का नेता होगा। राज्य की शासन व्यवस्था का भार वास्तव में मन्त्री परिषद

पर होगा और मन्त्री परिषद अपने हर कार्य के लिये विधान सभा के प्रति उत्तरदायी होगी।

संकट के समय राष्ट्रपति संकट की घोषणा करके राज्यों का शासन भार भी स्वयं संभाल सकता है। इस स्थिति में केन्द्रीय संसद न केवल राज्य सूची में वर्णित विषयों पर ही कानून बना सकती है वरन जिन विषयों को वह राज्य के हित के लिये आवश्यक समझती है उन पर नियम बना सकती है।

प्रश्न ७४. लोक सेवा आयोग से क्या तात्पर्य है? इसकी स्थापना किन विचारों को ध्यान में रखकर की गई?

ध्यान नहीं दिया जाता है। यदि यह सस्थायें इसी प्रकार निष्पक्ष भाव कार्य करती रही तो संघ तथा राज्यों के सरकारी विभागों का कार्य सुचा रूप से चलता रहेगा।

प्रश्न ७६ २६ जनवरी १९५० से पहिले के भारत में तथा उस बाद के भारत में क्या अन्तर है? स्पष्ट कीजिये।

उत्तर—२६ जनवरी १९५० को भारत एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतंत्रात्मक गण राज्य बन गया। उस से पहिले भारत अंग्रेजी साम्राज्य का एक अंग था और इगलैंड का बादशाह हमारा वैधानिक शासक था विदेशों से व्यापारिक तथा अन्य प्रकार की संधियां उसके नाम पर की जाती थी।

२६ जनवरी १९५० के पश्चात जब से भारतीय विधान परिषद ने भारत को लोकतंत्रात्मक गणराज्य घोषित किया है तब से हमारा इँगलैंड के बादशाह से उस प्रकार का कोई सबन्ध नहीं रहा है। अब भारत की सर्वोपरि सत्ता भारतीय जनता के हाथ में है। अब हमारा वैधानिक शासक राष्ट्रपति है। अब महत्वपूर्ण विषयों पर संधियें आदि राष्ट्रपति के नाम पर होती हैं। अब हमारे आतरिक अथवा विदेशी नीति में भी कोई बाह्य शक्ति हस्तक्षेप नहीं कर सकती अब अपने भाग्य के विधाता हम स्वय ही हैं।

पहिले भारत में राष्ट्रपति के स्थान पर गवर्नर जनरल बादशाह के प्रतिनिधि के रूप में होता था। उस को असीम अधिकार प्राप्त थे। वह विधान सभा द्वारा पास किये विधेयकों (बिलों) को रद्द कर सकता था, किन्तु आज हमारे राष्ट्रपति को संसद द्वारा पास किये विधेयकों को रद्द करने का अधिकार नहीं है। अब विधान सभा वास्तव में जनता की प्रतिनिधि संस्था है और वह नियम बनाने में स्वतन्त्र है।

अध्याय ११

स्वतंत्र भारत की वर्तमान समस्यायें

प्रश्न ७७. भारत स्वतन्त्र होते ही हमारी सरकार को किन-किन बडी समस्याओं का सामना करना पडा ? संक्षेप में लिखिये।

उत्तर—भारत को स्वतन्त्र होते ही अनेकों कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। भारत १५ अगस्त १९४७ को स्वतन्त्र हुआ और उसी दिन भारत का विभाजन हुआ। मुसलमानों के बहुमत वाले प्रान्त तथा अधिक अन्न वाले प्रान्त पाकिस्तान में चले गये और भारत को अनाज की कमी के कारण बड़े कष्ट सहन करने पड़े। सम्वत १९४९ और ५० में बहुत सा अनाज विदेशों से मंगाया गया। पटसन उपजाऊ लगभग सभी क्षेत्र पाकिस्तान में चले गये और इस के लगभग सभी कारखाने भारत में रह गये। पटसन की कमी के कारण कई कारखाने बन्द हो गये और श्रमिकों को बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

स्वतन्त्रता मिलते ही पाकिस्तान के संकेत से कबायली काश्मीर पर चढ़ आये और भारत को काश्मीर की सहायता के लिये सेनायें भेजनी पड़ीं। पाकिस्तान द्वारा भी अपनी सेनाएँ भेजने पर स्थिति और अधिक गम्भीर हो गई। इस लड़ाई में भारत को बहुत हानि उठानी पड़ी और समस्या का हल अब तक भी नहीं हुआ।

बच्चों की शिक्षा के लिये नये स्कूल खोले गए हैं। कृषकों को उपजाऊ भूमि दी गई है। गृह उद्योग धन्धों की शिक्षा के लिए बहुत से शिक्षण केन्द्रों की व्यवस्था की गई है।

इस प्रकार शरणार्थी समस्या को हल करने के लिए बहुत प्रयास किया गया है। किन्तु यह समस्या इतनी जटिल है कि इस पर अभी तक नियन्त्रण नहीं किया जा सका है। आशा है कि थोड़े समय के पश्चात यह समस्या कुछ हलकी हो जायगी।

प्रश्न ७६ भारत में देशी राज्यो का एकीकरण किस प्रकार किया गया है?

उत्तर—भारत १५ अगस्त सन् १९४७ को स्वतन्त्र हुआ। उस समय भारत में लगभग ६०० छोटी बडी रियासतें थी। इन रियासतों का एकीकरण होना आवश्यक था। कारण जनता राजाओं के निरंकुश शासन से तंग आ चुकी थी और वह इनके एकीकरण के लिए आन्दोलन कर रही थी। दूसरे रियासतों को इस प्रकार स्वतंत्र रखना भारत की सुरक्षा के लिए उचित नहीं था।

इसके अतिरिक्त आर्थिक दृष्टि से भी इन रियासतों का एकीकरण आवश्यक था। इन रियासतों में अधिकतर बहुत छोटी थी जिनकी आय बहुत कम थी इसलिए उनमें अच्छा शासन होना असम्भव था। इसलिए यह आवश्यक था कि जो छोटी छोटी रियासतें हैं उनको मिलाकर राज्य बना दिए जाय। परिणाम स्वरूप सौराष्ट्र, विन्ध्यप्रदेश, हिमाचल प्रदेश आदि राज्यों की स्थापना हुई। कुछ रियासतें जो बहुत ही छोटी थी वह अपने पड़ोसी प्रान्तों में विलीन हो गई कुछ बड़ी रियासतें अकेले ही राज्य के रूप में रखी गई जैसे काश्मीर, हैदराबाद आदि। इस प्रकार २१६ रियासतें प्रान्तों में विलीन हो गई, ६१ रियासतों का शासन भार केन्द्र द्वारा संभाल लिया गया और शेष २७५ रियासतों को अ मिला कर सब बना दिए गए जिनका शासन अन्य राज्यों की भान्ति होता है। राज्यों के एकीकरण का श्रेय माननीय सरदार वल्लभ भाई पटेल को है।

केन्द्र द्वारा शासित राज्यों में सलाहकार समितियों द्वारा शासन कार्य में सहायता दी जाती है। अन्य राज्यों में विधान सभाएं बनाने की योजना है। ट्रावनकोर, मध्यभारत और सौराष्ट्र में विधान सभायें बन चुकी हैं अन्य सब में १९५२ में विधान मण्डल बना दिए जायेंगे। रियासतों के राजाओं के लिए खर्च की रकमें नियत कर दी गई हैं तथा राज्यों की सेनायें अब केन्द्र के आधीन हैं और अभी दस वर्ष तक इन राज्यों का कार्य केन्द्र के सुझावों के अनुसार ही होगा।

बढ़ी हुई प्रतीत होती है परन्तु वास्तव में इसका मूल्य कम होता जा रहा है और हमारा जीवन स्तर दिनों दिन घटता जा रहा है।

जमींदारों को छोड़कर अन्य किसानों के जीवन स्तर में भी कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है और उनकी दशा भी शोचनीय है।

अन्य देशों की तुलना में भारत के नागरिक आधे भूखे रहते हैं। उन्हें कुल भोजन का केवल ४/७ भाग ही मिलता है। फिर भी उनकी आय का ६० प्रतिशत भोजन पर लग जाता है और शेष वह विवाह शादियों, मकान तथा वस्त्र आदि पर लगाते हैं जो आवश्यकता से बहुत ही कम है। इस लिये उन्हें कर्ज द्वारा काम चलाना पड़ता है और वह सदा कर्ज के बोझ से दबे रहते हैं। भारत के अधिकतर नागरिक कर्ज में पैदा होते हैं, कर्ज मे पलते हैं और सन्तान के लिये कर्ज छोड़ कर मरते है।

गरीबी के कारण तथा उसे दूर करने के लिये सुझाव

भारत कृषि प्रधान देश है किन्तु यहा कृषि बड़ी अवनत दशा मे है। भारत की ६० प्रतिशत जन संख्या का बोझ अकेली कृषि पर है इस बोझ को कम करने के लिये कुटीर व्यवसाय में विकास की अत्यन्त आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त उद्योगीकरण की ओर भी ध्यान देना चाहिये।

आर्थिक विकास और सामाजिक कुरीतिया

हमारी सामाजिक कुरीतिया भी हमारी गरीबी का बहुत बड़ा कारण है। सम्मिलित कुटुम्ब प्रणाली के कारण घर के एक दो आदमियों पर ही सारे कुटुम्ब के खर्च का बोझ पडता है। हम भूखे रहना पसन्द कर लेते हैं पर हमें अपना घर नहीं छोडना भाता है। हम किस्मत का सहारा लेकर अकर्मण्य बैठे रहते है और आजीविका के लिये कोई प्रयत्न नहीं करते। हमें इन सामाजिक कुरीतियों को समाज से उखाड फेंकना होगा।

हमारे देश की सम्पत्ति कुछ गिने चुने लोगों के हाथों मे एकत्रित हो गई है और होती जा रही है। कृषकों की कमाई जमींदार या औ

सम्पत्ति का अन्याय पूर्ण विभाजन तथा वितरण

है और मिल मजदूरों की मेहनत का पैसा मिल मालिकों की गाठ में चला जाता है इस प्रकार सम्पत्ति के इस अन्याय पूर्ण वितरण मे गरीब लोगों की संख्या में वृद्धि होती जा रही है। किन्तु अब सरकार इस ओर ध्यान दे रही है। जमीदारी प्रथा को उखाड फेंकने के प्रयत्न हो रहे हैं तथा फैक्ट्रियों में भी नियमों की व्यवस्था की जा रही है। सम्भव है भविष्य में स्थिति कुछ सुधर जाय।

अङ्गरेजो द्वारा भारत का शोषण

भारत अभी तक परतन्त्र था और अंगरेजों की पक्षपात पूर्ण नीति के कारण यहां पर औद्योगीकरण ना नहीं हो सका और यहा के घरेलू उद्योग धन्धे भी चौपट हो गये जिनसे बेरोजगारी बढ गई। अब सरकार दोनों प्रकार के उद्योगों की ओर ध्यान दे रही है।

अत्यधिक जन वृद्धि

१९३१ मे भारत की जन संख्या ३८ करोड थी और विभाजन के पश्चात् भी भारत की जन संख्या ३८ करोड़ से अधिक है। भारत की जन संख्या मे प्रति वर्ष ५० लाख की वृद्धि होती है। पर उसी अनुपात मे उपज न बढ़ने से निर्धनता स्वाभाविक है। इसलिये समाज सुधारकों तथा सरकार को भी जन वृद्धि रोकने के उपाय सोचने चाहिएँ।

हाल ही मे सरकार ने एक पंच वर्षीय योजना बनाई है जिसमें देश की आर्थिक दशा को सुधारने के लिये एक विस्तृत योजना का उल्लेख है। सम्भव है यह योजना ठीक प्रकार से कार्यान्वित हो जाय और हमारा जीवन स्तर कुछ ऊँचा उठ जाय।

भारत में जनतन्त्र-शासन प्रणाली की स्थापना के पश्चात शिक्षा की अत्यन्त आवश्यकता है। अशिक्षित लोग शासन चलाने के लिये योग्य प्रतिनिधि चुनने में असमर्थ होते हैं।

सन् १९४४ में शिक्षा की एक योजना सार्जेण्ट योजना के नाम से बनाई गई थी। इसके अनुसार ४० वर्ष में भारत के सब लोगों को शिक्षित बनाने का अनुमान था किन्तु यह योजना अभी तक कार्यान्वित नहीं हो सकी है। प्रौढ़ शिक्षा की एक और योजना सन् १९४८ में बनाई गई थी जिसके अनुसार भारत की आधी वयस्क जनता को तीन वर्ष में शिक्षित बनाने की योजना थी। किन्तु अर्थाभाव के कारण यह योजना भी कार्यान्वित न हो सकी।

भारत में अन्य सभ्य देशों जैसे इंगलैण्ड और अमरीका की भांति प्रारम्भिक शिक्षा अनिवार्य और निःशुल्क होनी चाहिये। जो विद्यार्थी कुशल हों उनके लिए उच्च शिक्षा का प्रबन्ध भी राज्य की ओर से होना चाहिये। १९४९ में भारतीय संविधान में निर्देशित अनिवार्य और निःशुल्क शिक्षा के आधार पर श्री० बी० जी० खेर की अध्यक्षता में एक कमेटी बनाई गई जिसने सरकार से १६ वर्ष के अन्दर अनिवार्य और निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था करने की अपील की है।

हमारे देश में प्रारम्भिक, माध्यमिक तथा विश्व-विद्यालय तीनों प्रकार की शिक्षाओं का उचित प्रबन्ध नहीं है। विद्यार्थियों को डिग्री कालेजों में भेजने का उद्देश्य न होकर उनको योग्य बनाने का होना चाहिये। उन्हें उद्योग धन्धों की शिक्षा दी जानी चाहिये। हमारे देश में विश्वविद्यालयों से जो विद्यार्थी बी० ए० तथा एम० ए० की डिग्री लेकर निकलते हैं उनमें वास्तव में वह योग्यता नहीं होती जो उस डिग्री वाले व्यक्ति में होनी चाहिये। यह हमारी शिक्षा प्रणाली का दोष है जिसमें सुधार होना आवश्यक है।

भारत की ९० प्रतिशत जनता गांव में रहती है उनको शिक्षित बनाने का कोई प्रबन्ध नहीं है। राधा कृष्णन यूनिवर्सिटी कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार भारत में ग्राम्य विश्वविद्यालयों की स्थापना होनी चाहिये जिससे गांव के लोगों को शिक्षा दी जा सके। तथा ग्राम्य जीवन सम्बन्धी विषयों पर [illegible]

हमारे जीवन में स्वास्थ्य रक्षक तत्व जैसे साग, तरकारी और फल आदि का बड़ा अभाव रहता है। स्वास्थ्य के लिये प्रत्येक व्यक्ति को लगभग १० औंस तरकारी प्रतिदिन खाना आवश्यक है किन्तु वह आज हमें प्राप्त नहीं है। हमें इसकी उपज बढ़ानी चाहिये। शरीर के लिये आवश्यक भोजन का केवल ५/६ भाग ही हमें प्राप्त होता है। अन्य देशों की तुलना में दूध भी हमें नहीं के बराबर ही मिलता है। हमें दूध तथा भोजन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये भरसक प्रयत्न करने चाहियें। तभी हमारा स्वास्थ्यस्तर ऊंचा उठ सकेगा केवल औषधियों के सेवन से कुछ नहीं होगा।

स्वास्थ्य रक्षा के लिये हमें स्वच्छता की ओर भी अधिक ध्यान देना चाहिये। गाव तथा शहरों मे गन्दगी होने से रोगकीटाणु उत्पन्न होते हैं और भान्ति-भान्ति के रोग फैलते हैं। नगरो तथा गाव की स्वच्छता की उचित व्यवस्था होनी चाहिये।

देश में सार्वजनिक शिक्षा की बड़ी कमी है। हस्पतालो की संख्या नाम मात्र है। भारत में अधिक लोग मलेरिया, हैजा, इन्फ्लुएंजा तथा प्लेग आदि रोगों से मरते हैं। यदि चिकित्सा का उचित प्रबन्ध हो तो इन रोगो से होने वाली मृत्यु संख्या बहुत कम हो सकती है।

भारत मे आजकल क्षय रोग बड़ा भयकर रूप धारण किये हुए है। २५ लाख व्यक्ति प्रति वर्ष इस रोग के शिकार होते है जिनमे से ५ लाख प्रतिवर्ष मर जाते हैं। ३००० क्षय रोगियों में से केवल १ रोगी के लिये ही सेनिटोरियम (Sanitorium) की व्यवस्था है। सरकार को चाहिये कि अधिक से अधिक सेनिटोरियम खोले। B C G के टीके लगाने की व्यवस्था करे। विश्व स्वास्थ्य संस्था (W H O) की ओर से B C G के टीको की व्यवस्था की जा रही है। यह संस्था अन्य रोगो की रोकथाम के भी प्रयत्न कर रही है।

भारत में स्वास्थ्य सम्बन्धी आवश्यकताओं की बड़ी शोचनीय स्थिति है। हमारे देश में भोर कमेटी योजना के अनुसार [illegible] डाक्टरों, ६७००० नर्सों और ११२५०० दाइयों की आवश्यकता है जब कि इस समय डाक्टरों की संख्या केवल [illegible] है, नर्सों की [illegible] और [illegible]

शासन कार्य में अपने सुझाव दे सकेंगे तथा सरकार की नीति की आलोचना कर सकेंगे। जनता द्वारा आलोचना होने से सरकार का मार्ग दर्शन होता है और सरकार अपनी त्रुटियों का सुधार करती रहती है। किन्तु यह सब तभी हो सकता है जब जनता शिक्षित हो। इस प्रकार जनतन्त्र शासन प्रणाली के लिये शिक्षा का होना अत्यन्त आवश्यक है।

प्रश्न ८५. आज संसार के भिन्न भिन्न देश किस प्रकार अन्योन्याश्रित निर्भर हो गये हैं?

उत्तर—आज हम सारे विश्व की एक सरकार बनाने के स्वप्न देखने लगे हैं। इसका कारण है दूर दूर के सभी देश आज के युग में राष्ट्रों अत्यन्त निकट आ गये हैं। विज्ञान के विकास के की परस्पर निर्भरता पूर्व देशों के बीच जिस दूरी का अनुभव होता जाता था वह अब एक दम कम हो गई है। आज यदि एक देश में कोई घटना घटती है तो उसका दूसरे देशों पर प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता। भारत की स्वतन्त्रता का पड़ोसी देशों पर बड़ा प्रभाव पड़ा है विशेष रूप से बर्मा, इन्डोनेशिया और अफगानिस्तान आदि देशों पर।

अध्याय १३

अन्तर्राष्ट्रीय संगठन की आवश्यकता

संयुक्त राष्ट्र-संघ

प्रश्न ८६. सयुक्त राष्ट्र संघ के मुख्य विभाग कोन से हैं? प्रत्येक विभाग का काय सक्षेप में लिखिये।

सयुक्त राष्ट्र संघ

उत्तर—संयुक्त राष्ट्र सघ की स्थापना २४ अक्तूबर सन १६४५ को हुई, इस समय संसार के ६० राष्ट्र इसके सदस्य हैं; सयुक्त राष्ट्र सघ का उद्देश्य है कि ससार में पूर्ण शान्ति की स्थापना हो। इसके मुख्य छ भाग है।

१ साधारण सभा General Assembly

इस सभा में सघ के सदस्य राष्ट्रों की ओर से प्रतिनिधि भेजे जाते हैं। इसके अधिवेशन में प्रत्येक राष्ट्र पाँच प्रतिनिधि भेज सकता है, किन्तु उनका वोट एक ही होगा साधारण सभा संयुक्त राष्ट्र संघ की नीति निर्धारित करती है, और ससार के आर्थिक, स्वास्थ्य सुधार, राजनैतिक उन्नति तथा सास्कृतिक विकास आदि विषयों के सम्बन्ध में विचार करती है, सयुक्त राष्ट्र संघ के अन्य सभी विभाग इस सभा में अपने कार्य का ब्यौरा देते हैं, और सभा उन पर विचार करती है, साधारण सभा का निर्णय साधारण बहुमत द्वारा होता है परन्तु महत्वपूर्ण विषयों पर दो तिहाई बहुमत आवश्यक है।

२ सुरक्षा परिषद Security Council

अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति तथा सुरक्षा रखने की प्रथम ज़िम्मेदारी सुरक्षा परिषद पर है, इसके ११ सदस्य हैं जिनमे अमेरिका, इगलैण्ड, रूस, चीन और फ्रांस यह पाँच तो स्थायी सदस्य है अन्य ६ साधारण सभा द्वारा २ वर्ष के लिये चुने जाते हैं। दो देशों में लड़ाई छिड़ने का

दशा में सुरक्षा परिषद उनमें से किसी को भी लड़ाई बन्द करने का आदेश दे सकती है, उसके आदेश की अवज्ञा होने पर वह सदस्य राष्ट्रों से उस देश का आर्थिक तथा राजनैतिक सम्बन्ध विच्छेद करने को कह सकती है, यदि सुरक्षा परिषद के निर्णय को कोई एक सदस्य भी मानने से इन्कार कर दे तो वह निर्णय रद्द समझा जाता है, इस अधिकार (Veto) के उपयोग के कारण ही सुरक्षा परिषद भूतकाल में अपने कार्य में असफल रही है।

3
आर्थिक तथा सामाजिक सभा
Economic and Social Council

यह परिषद आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी विषयों पर जांच पड़ताल करती है, इस परिषद का सबसे बड़ा कार्य है मानवी अधिकारों तथा बुनियादी स्वतन्त्रता सम्बन्धी अधिकार पत्र तैयार करना, परिषद की एक समिति ने एक मानवीय अधिकार पत्र (Declaration of Human Rights) तैयार किया है जिसके अनुसार सब देशों से वहां के स्त्री, बच्चों तथा श्रमिकों के हितों का विशेष ध्यान रखने की अपील की गई है। I L O, W H O तथा UNESCO इसी परिषद के आदेशानुसार कार्य करती है।

रही है । इस प्रकार यह सस्था स्वास्थ्य सुधार के लिये प्रशंसनीय काम कर रही है ।

अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय भी सयुक्त राष्ट्र संघ का एक महत्वपूर्ण अग है । इस न्यायालय में दो अथवा अधिक देशों के बीच हुए झगड़े विचार करने के लिये पेश किये जाते हैं, जिन पर इस न्यायालय का निर्णय अन्तिम होता है । और वह सम्बन्धित देशों को मानना पड़ता है । अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में १५ न्यायाधीश होते हैं जो सदस्य देशों मे से ही साधारण सभा तथा सुरक्षा परिषद् द्वारा चुने जाते हैं । न्यायालय का कार्यालय हालैंड की राजधानी हेग में है ।

प्रश्न ८६. अभी तक अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति के क्या क्या प्रयत्न किये गये ? राष्ट्र संघ तथा सयुक्त राष्ट्र सघ अपने उद्देश्य मे कहा तक सफल रहे ?

अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति के लिये प्रयत्न

उत्तर—प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् ससार में शान्ति स्थापना के उद्देश्य से सन् १६२० में एक सस्था बनाई गई जिसका नाम राष्ट्र सघ (League of Nations) रखा गया । इसका कार्यालय जेनेवा में रखा गया । इस सस्था के सदस्यों ने यह प्रतिज्ञा की थी कि वह संसार के किसी भी देश के साथ युद्ध नहीं करेंगे और आपसी झगड़ों का निपटारा अन्तर्राष्ट्रीय पचायत द्वारा ही होगा । यदि कोई राष्ट्र इस प्रतिज्ञा को भग करता है तो सदस्य देश उस राष्ट्र का आर्थिक अथवा राजनैतिक बहिष्कार करेंगे । यदि सब देश अपनी अपनी प्रतिज्ञा याद रखते तो सम्भव है ससार शान्ति की ओर एक पग बढ़ा सकता । किन्तु स्वार्थ के सयम किसी को भी प्रतिज्ञा याद नही रही । और राष्ट्र सघ के पास कोई सैनिक शक्ति नहीं थी जिससे वह सदस्य देशों को अपने निर्णयों के अनुसार चलने पर बाध्य कर सकती । अत यह सस्था अपने उद्देश्यों की पूर्ति मे बुरी तरह असफल रही और द्वितीय महायुद्ध को यह सस्था नहीं सकी ।

एक प्रयत्न फिर द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् हुआ और एक और विश्व सस्था की स्थापना की गई जिसे सयुक्त राष्ट्र संघ (United Nati-

ons Organisation) कहते हैं। इस संस्था के पास भी सैनिक शक्ति नहीं है जिसके अभाव में यह भी अपने उद्देश्यों में सफल नहीं हो सकी है। दूसरे सदस्य देश अभी तक अपने निजी स्वार्थों को नहीं छोड़ सके हैं। यही कारण है कि विभिन्न देशों मे सदैव झगड़े रहते है और संयुक्त राष्ट्र संघ उन्हें हल करने में असमर्थ है।

अध्याय १४

संयुक्त राष्ट्र संघ के कार्य का मूल्याङ्कन

प्रश्न ६० संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा अराजनैतिक क्षेत्र मे अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के क्या प्रयत्न हो रहे है ?

उत्तर—संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना सन् १९४५ में हुई। तब से आज तक इस संस्था ने बहुत से उपयोगी कार्य किये है विशेषकर आर्थिक सांस्कृतिक और स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं को हल करने के लिये संघ ने बड़ा ही सराहनीय कार्य किया है।

संयुक्त राष्ट्र संघ की सामाजिक और आर्थिक संस्था ने बहुत सी समितियां बनाई है जिनका मुख्य उद्देश्य है पिछड़े हुए अथवा अनुन्नत देशों को आर्थिक तथा सामाजिक विकास मे सहायता देना। खाद्य तथा खेती की समस्या पर विचार की दृष्टि से खुराक और खेती की संस्था (Food and Agricultural Organisation) की स्थापना की है। एशिया और दूर पूर्व के देशों के विकास के लिये एक संस्था और बनाई है जिसे (ECAFE) इकेफ कहते है। जिन देशों मे औद्योगीकरण नही हुआ है उन्हे टेक्निकल शिक्षा देने के लिए विचार हो रहा है। जिन देशों मे संकटकालीन सहायता की दृष्टि से विकास की आवश्यकता है उन्हे (I M F) अन्तर्राष्ट्रीय धन कोष से पूंजी उधार दिलाई जाती है। विभिन्न देशों के शरणार्थियों को सहायता देने के लिये एक अन्तर्राष्ट्रीय शरणार्थी संगठन बनाया गया है जिस के द्वारा फिलिस्तीन आदि देशों के शरणार्थियो पर करोडो रुपया खर्च करके उनकी रक्षा की गई है।

अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षणिक संस्था द्वारा संसार के देशों में शिक्षा के प्रसार के लिये बड़ा प्रयत्न किया जा रहा है। विश्व स्वास्थ्य संस्था (W H O)

उधर दक्षिणी अफ्रीका में भारतीयों तथा अन्य अगौर वर्ण वाली जातियों से पक्षपात पूर्ण व्यवहार होता है। उन्हे नागरिक अधिकारों से वंचित रखा जाता है। दक्षिणी अफ्रीका की सरकार का व्यवहार सयुक्त राष्ट्र सघ के घोषणा पत्र (United Nations Charter) के विरुद्ध है। किन्तु राष्ट्र सघ मे गौर वर्ण जातियो का बहुमत होने के कारण इस समस्या का हल नहीं हो सका है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सयुक्तराष्ट्र संघ मे जो समस्याएँ रखी जाती हैं वह सुलझने के स्थान पर और उलझ जाती है। जिन देशों का सघ में जोर है वह स्वार्थ से भरे हुए है। यदि यह देश अपनी स्वार्थमयी नीति को छोड कर सच्चे मन से शान्ति स्थापित करने का प्रयत्न करे तभी संयुक्त राष्ट्र सघ अपने उद्देश्य में सफल हो सकता है अन्यथा नहीं।

प्रश्न ६२. हिन्देशिया तथा फिलिस्तीन की क्या समस्यायें थीं तथा उन्हे सयुक्त राष्ट्र सघ ने कैसे निपटाया ?

उत्तर—हिन्देशिया भारत के पूर्व में स्थित है। यह दक्षिणी पूर्वी एशिया का सब से बड़ा देश है, इसमें जावा, बोर्नियो, सुमात्रा आदि कई टापू सम्मिलित है। पिछले साढ़े तीन सौ वर्षों से हिन्देशिया हालैण्ड के अधीन था। पिछले युद्ध मे इस पर जापान का अधिकार हो गया था।

हिन्देशिया

१९४५ में जापान ने हिन्देशिया को छोड़ा तो इसमे एक स्वतन्त्र सरकार की स्थापना हो गई। डचों ने अंग्रेज़ी फौजों की सहायता से देश पर फिर अधिकार कर लिया। हिन्देशिया की जनता स्वतन्त्र सरकार की स्थापना के लिये निरन्तर लड़ती रही। भारत के नेताओं द्वारा भी हिन्देशिया की जनता की माग का समर्थन किया गया। अन्त में सयुक्त राष्ट्र सघ के प्रयत्न से समझौता हो गया और इसके अनुसार हिन्देशिया के अधिकतर भाग पर राष्ट्रीय सरकार का अधिकार हो गया। सन् १९४८ दिसम्बर में डचो ने आक्रमण कर राष्ट्रीय सरकार के मन्त्रि-मण्डल को बन्दी बना लिया। इस पर भारत सरकार ने राष्ट्रीय सरकार की सहानुभूति में हालैण्ड सरकार से राजनैतिक सम्बन्ध विच्छेद कर दिया। तथा जनवरी सन् १९४९ में भारत मे

वास्तव में दक्षिणी अफ्रीका की ऐसी स्थिति है जिससे अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति भंग होने का भय है। इसलिये उसने दक्षिणी अफ्रीका की सरकार को आदेश दिया कि वह भारत सरकार से मिल जुलकर समझौता करे। किन्तु उसने इस आदेश की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। बल्कि उलटे ऐसे नियम बनाये जिनसे स्थिति और भी गम्भीर और असहनीय हो गई।

दक्षिणी अफ्रीका की सरकार का यह व्यवहार संयुक्त राष्ट्र संघ के घोषणा पत्र (United Nations Charter) के बिलकुल विरुद्ध है। किन्तु संयुक्त राष्ट्र संघ दक्षिणी अफ्रीका की सरकार को अपना यह व्यवहार ठीक करने के जो भी आदेश देता है वह उन सब की अवहेलना करती चली आई है। संयुक्त राष्ट्र संघ में गौर वर्ण वाले राष्ट्रों का आधिक्य तथा प्रभाव है। इसलिये संयुक्त राष्ट्र संघ इस समस्या को सुलझाने में अभी तक असमर्थ रहा है।

सदस्य देश संयुक्त राष्ट्र संघ के आदेशों की अवहेलना करते रहते हैं।

सेना की कमी — संघ के पास सेना आदि की ऐसी कोई शक्ति नहीं जिससे वह अपने आदेशों का पालन करा सके।

संघ की असफलता का सबसे मुख्य कारण है सदस्य राष्ट्रों में एक

राष्ट्रों में आपसी अविश्वास — दूसरे के प्रति अविश्वास पूर्ण भावना का होना। यदि कोई राष्ट्र दयानतदारी से भी कोई सुझाव रखता है तो उसे सन्देह की दृष्टि से देखा जाता है और वह प्रस्ताव ऐसे ही उड़ा दिया जाता है। इसके अतिरिक्त आज संसार में दो दल हो गये हैं। एक दल साम्यवादी शासन प्रणाली द्वारा संसार में शांति स्थापना में विश्वास रखता है और दूसरा पूंजीवादी जनतंत्र प्रणाली द्वारा और इस कारण अविश्वास का वातावरण और भी अधिक तीव्र हो गया है। इसलिये भविष्य में शांति स्थापना के स्थान पर घोर अशांति के बादल मंडरा रहे हैं और यह कुछ नहीं कहा जा सकता कि कब-घन गर्जन प्रारम्भ हो जाय।

इस प्रकार इन सब कारणों ने मिलाकर संयुक्त राष्ट्र संघ को अपने कार्य में पूर्णतया असफल बना दिया है।

प्रश्न ६५ आज संसार के राष्ट्र किन दो दलों में बट गये हैं और उनमें संघर्ष के क्या कारण हैं?

उत्तर—आज संसार दो दलों में बट गया है और उन दोनों में

संसार दो गुटों में विभक्त — परस्पर घोर संघर्ष चल रहा है। एक ओर तो वह देश हैं जिन्हें रूस का समर्थन प्राप्त है और दूसरी ओर वह देश हैं जिनमें पूंजीवादी जनतंत्र की स्थापना हो चुकी है। साम्यवादी गुट का नेता रूस है और दूसरे गुट को अमरीका का नेतृत्व प्राप्त है।

रूस साम्यवाद का केन्द्र है। साम्यवादी सिद्धान्तों के अनुसार संसार में शांति तभी हो सकती है जब सब देशों में साम्यवादी शासन व्यवस्था स्थापित हो जायगी। दूसरा गुट इस विचार धारा का विरोध करता है यही कारण है कि पिछले महायुद्ध के पश्चात इन दोनों गुटों में भारी संघर्ष चल

रहा है। युद्ध के पश्चात पूर्वी यूरोप के कुछ देशों तथा एशिया में चीन में साम्यवादी शासन व्यवस्था स्थापित हो गई है। किन्तु अमरीका अब तक भी च्यांगकाई शेक की राष्ट्रीय सरकार को ही मान्यता देता है जबकि भारत और इंगलैंड ने साम्यवादी सरकार को मान्यता दे दी है।

रूस के इस बढ़ते हुए प्रभाव को देखकर अमरीका के कान खड़े हो रहे हैं। अमरीका ने पश्चिमी यूरोप तथा अमरीका के देशों से सामूहिक सैनिक कार्यवाही के लिये एक समझौता किया है जिसे (Atlantic Pact) कहा है। इसके विपरीत पूर्व में एक प्रशान्त समझौता (Pacific Pact) का प्रयत्न हो रहा है।

किन्तु किसी भी देश मे एक दम साम्यवादी व्यवस्था लाना अत्यन्त कठिन है। कुछ छोटे छोटे उद्योग धन्धे ऐसे हैं जिनको

समाजवाद

व्यक्तियो के अधिकार में रखने मे ही लाभ है। इस प्रकार प्रारम्भ में बड़े बड़े कारखानों तथा कृषि के लिये बडे बड़े फार्मों पर ही सरकार का अधिकार होगा। बाकी सब क्षेत्रो में व्यक्तिगत सम्पत्ति का अधिकार दिया जायगा। इस व्यवस्था को समाजवादी व्यवस्था कहते हैं। इस को दूसरे शब्दों में साम्य वाद के लिये पहिली सीढ़ी कह सकते हैं। पूर्णतया साम्यवाद लाने के लिये पहिले समाजवाद लाना आवश्यक है।

जनतन्त्र का अर्थ है जनता का राज्य। साम्यवादी अथवा समाजवादी तन्त्रों के विपरीत यहा पर व्यक्ति को बहुत अधिक

जनतन्त्र

स्वतन्त्रता दी जाती है। जनतन्त्र शासन प्रणाली वाले देशो मे नागरिकों को सम्पत्ति पर पूर्ण अधिकार दिया गया है। जनतन्त्रों मे पूंजीवाद का प्राधान्य है। देश का सारा धन कुछ गिने चुने लोगो के हाथों मे एकत्र हो जाता है। छोटे से लगा कर बड़े बड़े सब उद्योग धन्धे व्यक्तियो के हाथों मे हैं। यदि सरकार कभी किसी उद्योग को स्वय लेना चाहे तो उसके बदले में उसका पूरा मूल्य देगी। इस प्रकार इन तीनों वादों मे मौलिक भेद हैं।

प्रश्न ६७ रूस मे साम्यवादी शासन प्रणाली कहाँ तक सफल रही है?

उत्तर—पहिले युद्ध के पश्चात् कार्लमार्क्स के सिद्धान्तों का लेकर रूस में राज्य क्रान्ति हुई और वहा पर बोलशेविक दल की साम्यवादी सरकार बन गई जिसने वहा पर समाजवादी सोवियत गणतन्त्र संघ (Union of the Socialist Soviet Republic U S S R.) की स्थापना की।

साम्यवादी सरकार बनने के बाद रूस की काया पलट हो गई। लाखों एकड़ भूमि को एकत्र कर सामूहिक फार्म बनाये गये हैं जहाँ पर कुछ व्यक्ति मिलकर आधुनिक मशीनरी द्वारा काम करते है। सैकड़ों बड़े बड़े कारखाने खोले गये हैं जिनमें रेल के इंजन, वायुयान, मोटर तथा ट्रैक्टर आदि उपयोगी

स्थापना हो गई है। इन में पूर्वी यूरोप के देश, पोलैंड, चेकोस्लावेकिया, बल्गेरिया, रूमानिया, हंगरी तथा अलबानिया सम्मिलित हैं। एशिया में चीन ने साम्यवादी जनतन्त्र (Peoples Republic of China) की स्थापना की है। उत्तरी कोरिया में भी साम्यवादी सरकार द्वारा शासन हो रहा है।

किन्तु इन सब देशों में भी अभी पूर्ण साम्यवाद की स्थापना नहीं हुई है। योग्यता के अनुसार आय में अभी अन्तर बना हुआ है तथा कुछ व्यक्तिगत सम्पत्ति के अधिकार भी दिये गये हैं। कुछ छोटे छोटे उद्योग भी व्यक्तियों के हाथों में है। पूर्ण साम्यवाद तभी होगा जब व्यक्तिगत सम्पत्ति के लिये कोई स्थान नहीं रहेगा तथा प्रत्येक व्यक्ति को उसकी आवश्यकतानुसार मिलने लगेगा। किसी से भी भेद भाव नहीं बर्ता जायगा। किन्तु इतना अवश्य है कि यहां की शासन सत्ता साम्यवादी पार्टी के हाथ में है। इन सब देशों में साम्यवादी पार्टी का तानाशाही शासन चल रहा है।

किन्तु अभी संसार के अधिकतर राष्ट्रों में पूंजीवादी समाज व्यवस्था ही चल रही है और उन सब देशों में साम्यवादी पार्टियां श्रमिकों तथा कृषकों के संगठनों को चला रही है। प्रति दिन पूंजीपतियों तथा श्रमिकों में संघर्ष दिनों दिन प्रबल होता जा रहा है। साम्यवादियों के अनुसार यह संघर्ष तभी शान्त होगा जब शासन सत्ता श्रमिकों और कृषकों के हाथों में होगी।

प्रश्न ९९ ब्रिटेन में समाजवादी व्यवस्था स्थापित करने का प्रयत्न किया जा रहा है इस वाक्य पर अपने विचार व्यक्त करिये।

उत्तर—ब्रिटेन ही एक ऐसा देश है जहां पर न समाजवादी व्यवस्था है और न पूर्ण रूपेण पूंजीवादी व्यवस्था ही। वहां समाजवादी व्यवस्था के गुण भी हैं और पूंजीवादी जनतन्त्र के भी। इसलिये ऐसा कहा जाता है कि ब्रिटेन में जनतांत्रिक समाजवाद (Domocratic Socialism) की स्थापना हो रही है। वास्तव में वह व्यवस्था समाजवादी तानाशाही से तथा पूंजीवादी जनतंत्र दोनों से अच्छी है।

इंगलैंड में कोयले, इस्पात (Steel) आदि कुछ प्रमुख व्यवसायों का राष्ट्रीयकरण हो गया है। अब उन पर पूंजीपतियों का कोई अधिकार नहीं है इंगलैण्ड में वार्षिक आय पर भारी कर लगे हुए हैं जिनको चुका देने

पर पाँच हजार वार्षिक आय वाले कुछ ही व्यक्ति रह जाते हैं। इस प्रकार देश की आय का वितरण न्याय पूर्ण हो इसका प्रयत्न किया जा रहा है। सर्व साधारण लोगों के लिये बीमारी के समय फीस के बिना डाक्टर बुलाने की व्यवस्था है बच्चों के लिए उत्तम स्कूलों तथा उत्तम शिक्षा का प्रबन्ध है इसके अतिरिक्त सरकार बुढ़ापे तथा बेकारी के समय में नागरिकों को सहायता देती है। इस प्रकार धीरे-धीरे इगलैण्ड में समाजवादी व्यवस्था की स्थापना का प्रयत्न किया जा रहा है।

प्रश्न १०० साम्यवादी राज्यों तथा जनतान्त्रिक पूँजीवादी राज्यों की तुलना कीजिये ?

रहने के लिये झोपडी भी नहीं है। पूंजीपतियों द्वारा श्रमिकों का दिन रात शोषण होता है और श्रमिकों तथा पूंजीपतियों में संघर्ष चलता रहता है।

पूंजीवादी जनतन्त्रो मे व्यक्ति को विचारों तथा बोलने की स्वतन्त्रता है, किन्तु साम्यवादी देशों मे यह स्वतन्त्रता नाम को भी नही है। वहा पर डण्डे और भय का राज्य है। वहा का वातावरण सदैव गला घोंटू और तानाशाही है। इस प्रकार हम देखते है कि दोनों प्रकार की व्यवस्थाओं मे गुण और दोप दोनों हैं। इसलिये हमें दोनों के गुणों को रखकर बीच का मार्ग अपनाना चाहिये दोनों के दोषों को छोड देना चाहिये।

प्रश्न १०१ पूंजीवाद की क्या क्या खराबियाँ हैं? पूंजीवादी देशों की आर्थिक दशा पर एक सक्षिप्त नोट लिखिये।

पूंजीवाद की खराबियाँ

उत्तर—पूंजीवादी देशों में जैसे कल कारखाने बढ़ते जाते हैं वैसे ही पूंजीवादियों की शक्ति बढ़ती जाती है, श्रमिक दिन भर मेहनत से कार्य करते है और उनकी इस कमाई का बहुत बड़ा भाग पूंजीपति ले उड़ते हैं, पूंजीपतियों के बच्चों के लिये अच्छी शिक्षा तथा अच्छे खाने पहिनने का प्रबन्ध है, उनके रहने के लिये ऊँचे ऊँचे सुन्दर भवन हैं, किन्तु श्रमिकों के रहने के लिये साधारण कोठरियाँ भी नहीं हैं, उनके बच्चों के लिये अच्छी शिक्षा तथा खाने पहिनने की कोई व्यवस्था नहीं है, इस प्रकार पूंजीवाद में बहुत अधिक आर्थिक असमानता है, देश के अधिकांश लोग कठिनाई मे जीवन व्यतीत करते हैं।

पूंजीवादी देशों की आर्थिक दशा

पूंजीवादी देशों में श्रमिको तथा पूंजीपतियों के जीवन स्तर मे भारी अन्तर है। यद्यपि अमरीका के श्रमिकों को दुनिया के अन्य सभी श्रमिकों से बहुत अधिक धन मिलता है किन्तु उसके विपरीत यदि वहा के पूंजीपतियों को जो धन मिलता है उसका हिसाब लगाया जाय तो पता लगता है कि वहां के श्रमिक को भी कुछ नहीं मिलता, सर्व साधारण को यद्यपि नागरिक अधिकार प्राप्त हैं फिर भी राज्य सत्ता पूंजीपतियों के हाथ में है, जो केवल पूंजीपतियों के लाभ का ही सदा ध्यान रखती है, इसलिये

इस प्रकार सयुक्त राष्ट्र संघ के कार्यों में भारत बड़े उत्सा, से भाग ले रहा है। भारत की यह हार्दिक इच्छा है कि ससार में भाई चारे का व्यवहार बढ़े और ससार भर के लोग सुख से जीवन व्यतीत कर सकें।

प्रश्न १०४ अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति तथा पिछड़े राष्ट्रों की स्वतन्त्रता के लिये भारत ने क्या प्रयत्न किया है ?

उत्तर—भारत की अन्तर्राष्ट्रीय चेत्रों में स्वतन्त्र नीति है। आज ससार दो गुटों में बँटा हुआ है। एक गुट को रूस का नेतृत्व प्राप्त है और दूसरे को अमरीका का। किन्तु भारत किसी भी गुट के प्रभाव में रहना नहीं चाहता उसकी अपनी स्वतन्त्र नीति है और वह इन गुटों से बाहर रहकर विश्व शान्ति का प्रयत्न करना चाहता है।

भारत ने चीन की साम्यवादी सरकार को मान्यता दी है। अमरीका तथा उससे प्रभावित देश अब भी च्यागकाई शेक की राष्ट्रीय सरकार को ही मान्यता दिये हुये हैं।

इसी प्रकार जब हिन्देशिया पर आक्रमण कर डचों ने वहां के स्वतन्त्र मन्त्री मण्डल को कैद कर लिया तो भारत ने हालैण्ड सरकार का राजनैतिक बहिष्कार किया और भारत के नेतृत्व में एशिया के १८ देशों का सम्मेलन हुआ जिसमें डच सरकार की इस नीति का विरोध किया गया। इसका श्रेय बहुत कुछ भारत को ही है कि हिन्देशिया से डच सरकार को हटना पडा। एशिया मे पाश्चात्य देशों के औपनिवेशिक साम्राज्यवाद को समाप्त करने के लिये भारत प्रयत्न करता चला आ रहा है।

इसी प्रकार दक्षिणी अफ्रीका की सरकार की अगौर वर्ण लोगों के प्रति भेद भाव की नीति का घोर विरोध किया है। वह पिछले चार वर्षों से संयुक्त राष्ट्र संघ में इस बात पर बल दे रहा है कि मानवीय अधिकारों के घोषणा पत्र के अनुसार दक्षिणी अफ्रीका की सरकार के प्रति यह नाति

अथवा धर्म के आधार पर भेद भाव अन्याय पूर्ण है इसलिये उसे इस नीति को बदलना चाहिये ।

परतन्त्र देशों को शीघ्र स्वतन्त्र किया जाय इसके लिये भी भारत निरन्तर बल देता आ रहा है। इसके अतिरिक्त परमाणु अस्त्रों के प्रयोग पर प्रतिबन्ध लगाने पर भी भारत का समर्थन प्राप्त है। इस प्रकार भारत अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में बड़ा महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है।

अध्याय १७

भारतीय सामाजिक जीवन

प्रश्न १०५ भारतीय समाज की मुख्य आधार शिलायें कौन सी हैं ?

उत्तर—भारतीय समाज की तीन आधार शिलायें हैं। (१) आत्म-निर्भर ग्राम्य जीवन (२) जाति व्यवस्था तथा (३) सम्मिलित कुटुम्ब प्रणाली। भारत की ९० प्रतिशत जन संख्या ग्रामों में रहती है और वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं ही कर लेती है।

आत्म निर्भर ग्राम्य जीवन

इस प्रकार हमारा आर्थिक जीवन स्वावलम्बी है। कितने ही राज्य बदले परन्तु भारतीय ग्राम जीवन उसी प्रकार बना है। हमारे गाव छोटे-छोटे राज्य अथवा जन तन्त्र थे जो अपना शासन स्वय चलाते थे। प्राचीन गांव का शासन आज के पंचायत राज्य से कहीं अधिक जनतान्त्रिक था। वहा गाँव के किसी ऐसे व्यक्ति को जिस पर गाव की निष्ठा होती थी शासन का भार सौंप देते थे और वह उस जिम्मेदारी को अपना कर्तव्य समझ कर करता था। वह वहा की जनता का सच्चा सेवक होता था। गाव को समृद्ध बनाने के लिये एक वर्ग के लोग दूसरे वर्ग की पूरी सहायता करते थे। कुम्हार लुहार, सुनार, जुलाहे सब काम में लगे रहते थे और सब को एक दूसरे का सहयोग प्राप्त था। इस प्रकार गाव एक सहयोगी जीवन का अच्छा नमूना था। छोटे छोटे कुटुम्बों से मिलकर एक ग्राम बना है इस प्रकार भारतीय समाज जीवन का निर्माण सवात्मक आधार पर हुआ है। गाव में कई जातिया होती

तो उन्होंने द्रविड़ों को हराया और विजेता होने के नाते द्रविड़ों से सेवा का कार्य लिया गया। इनका नाम आगे चल कर सेवक अथवा दास पड गया।

धीरे-धीरे धामिक कर्म काण्ड अधिक व्यापक हो गये और एक ही व्यक्ति के लिये सब वस्तुओं का अथवा सब विद्याओं का ज्ञान रखना कठिन हो गया। इसलिये कुछ योग्य और बुद्धिमान लोगों को और कार्यों से मुक्त कर विद्याअध्ययन तथा धार्मिक कार्यों में लगा दिया जिन्हे ब्राह्मण की पदवी दी गई।

इस प्रकार धीरे-धीरे चार वर्ण बनाये गये। प्रथम वर्ण ब्राह्मणोका था, दूसरा क्षत्रियों का और तीसरे वर्ण के लोग वैश्य कहलाते थे। चौथा वर्ण शूद्रों का था जिनमे मुख्यत द्रविड़ लोग ही सम्मिलित थे। उस समय लोगों को वर्णों में योग्यता के अनुसार ही बांटा जाता था। उस समय आज की भान्ति रूढ़ी को कोई महत्व नहीं दिया जाता था। उस समय यदि ब्राह्मण के पुत्र में क्षत्रिय बनने की योग्यता होती थी तो वह क्षत्रिय बन सकता था इसी प्रकार अन्य वर्ण वाले अपने वर्ण से दूसरे वर्ण में जा सकते थे यदि उन मे उन वर्णों की योग्यता होती। परन्तु व्यवहार मे यह कठिन अवश्य था और ऐसा हुआ भी बहुत कम है।

परन्तु एक समय पश्चात् वर्ण व्यवस्था बड़ी कड़ी हो गई जिससे अपने वर्ण को छोडकर दूसरे वर्ण को अपनाना कठिन ही नहीं असम्भव हो गया। ब्राह्मण लोग अपने वर्ण की प्रतिष्ठा अपने बेटों के लिये सुरक्षित रखते थे चाहे वह बेटे शूद्र होने के योग्य भी न हों। इसी प्रकार क्षत्रिय भी अपनी पदवी अथवा प्रतिष्ठा अपने बेटे को ही सौंपते थे। इस प्रकार वर्ण व्यवस्था कड़ी होती गई। इसके पश्चात् काम धन्धों के आधार पर जातियां बन गई। आज भारत में इतनी जातियां हैं कि उनका हिसाब करना भी असम्भव है। उनकी संख्या लगभग अढ़ाई हजार बताई जाती है।

आज वर्णों के अनुसार कार्य करने की प्रथा एक दम कम हो गई है। कोई भी व्यक्ति सेना में भरती हो सकता है अथवा व्यवसाय कर सकता है और विद्या अध्ययन करना तो आज कल सब के लिये आवश्यक समझा जाता है। सम्भव है आने वाले समय में जाति व्यवस्था का कोई स्थान न रहे।

प्रकार जाति व्यवस्था मे बहुत से गुण और दोष विद्यमान है। भविष्य मे जाति व्यवस्था मे बहुत कुछ सुधार की आशा है।

प्रश्न १०८ सम्मिलित कुटुम्बप्रणाली आज के जीवन में किस हद तक सफलता पूर्वक चल रहा है तथा चल सकता है? उसे सुधारने के लिये सुझाव दीजिये।

उत्तर—सम्मिलित कुटुम्ब प्रणाली भारतीय समाज जीवन का आधार

सम्मिलित कुटुम्ब प्रणाली

रही है। प्रारम्भ मे एक एक कुटुम्ब मे बहुत से सदस्य होते थे और उन सब मे घनिष्ट प्रेम होता था। यदि कुटुम्ब मे एक भाई कमाता था और बाकी सब खाते थे तो उसके मन में कोई द्वेषभाव नहीं होता था और यही नहीं, सब का रहन सहन भी समान हो जाता था। एक कुटुम्ब प्राय एक ही धन्धा उत्तरोत्तर करता चला आता था इससे वह धन्धा सुचारु रूप से चलता रहता था। खेती का कार्य अथवा और कोई छोटा-मोटा कारखाना सारा कुटुम्ब मिलकर चला लेते थे। इस प्रकार आर्थिक दृष्टि से भी सम्मिलित कुटुम्ब प्रणाली बडी महत्व की रही है।

किन्तु आज सम्मिलित कुटुम्ब प्रणाली का ह्रास होता जा रहा है।

परिस्थिति मे परिवर्तन

औद्योगीकरण के विकास मे गृह उद्योग धन्धे प्राय चौपट हो गये है। अब सारा कुटुम्ब एक ही पैत्रिक धन्धे पर निर्वाह नहीं कर सकता। कुटुम्ब के कुछ लोग खेती पर निर्वाह करते है तो कुछ बडे शहरों मे जाकर नौकरी करते हैं। जिससे एक कुटुम्ब के कई भाग बन जाते है। इस प्रकार कुटुम्ब प्रणाली का ढाचा धीरे-धीरे बिखर रहा है।

पहिले सारे कुटुम्ब की सम्मिलित आय पर सारे कुटुम्ब का निर्वाह होता था। अब एक कुटुम्ब के कई कुटुम्ब बन गये है और हरएक की आय कम है और अलग होने के कारण खर्च उसी अनुपात मे बढ गया है इसलिये लोग मुसीबत मे दिन व्यतीत कर रहे है।

अलग-अलग धन्धा होने के कारण दो भाइयों को अलग-अलग वातावरण मे रहना पडता है इससे उनके रहन सहन मे अन्तर पडता है।

प्रकार जाति व्यवस्था में बहुत से गुण और दोष विद्यमान हैं। भविष्य में जाति व्यवस्था में बहुत कुछ सुधार की आशा है।

प्रश्न १०८. सम्मिलित कुटुम्बप्रणाली आज के जीवन में किस हद तक सफलता पूर्वक चल रहा है तथा चल सकता है? उसे सुधारने के लिये सुझाव दीजिये।

उत्तर—सम्मिलित कुटुम्ब प्रणाली भारतीय समाज जीवन का आधार रही है। प्रारम्भ में एक एक कुटुम्ब में बहुत से सदस्य होते थे और उन सब में घनिष्ट प्रेम होता था। यदि कुटुम्ब में एक भाई कमाता था और बाकी सब खाते थे तो उसके मन में कोई द्वेषभाव नहीं होता था और यही नहीं, सब का रहन सहन भी समान हो जाता था। एक कुटुम्ब प्राय एक ही धन्धा उत्तरोत्तर करता चला आता था उससे वह धन्धा सुचारु रूप से चलता रहता था। खेती का कार्य अथवा और कोई छोटा-मोटा कारखाना सारा कुटुम्ब मिलकर चला लेते थे। इस प्रकार आर्थिक दृष्टि से भी सम्मिलित कुटुम्ब प्रणाली बड़ी महत्व की रही है।

सम्मिलित कुटुम्ब प्रणाली

किन्तु आज सम्मिलित कुटुम्ब प्रणाली का ह्रास होता जा रहा है। औद्योगीकरण के विकास से गृह उद्योग धन्धे प्राय चौपट हो गये हैं। अब सारा कुटुम्ब एक ही पैत्रिक धन्धे पर निर्वाह नहीं कर सकता। कुटुम्ब के कुछ लोग खेती पर निर्वाह करते हैं तो कुछ बड़े शहरों में जाकर नौकरी करते हैं। जिससे एक कुटुम्ब के कई भाग बन जाते हैं। इस प्रकार कुटुम्ब प्रणाली का ढाचा धीरे-धीरे बिखर रहा है।

परिस्थिति में परिवर्तन

पहिले सारे कुटुम्ब को सम्मिलित आय पर सारे कुटुम्ब का निर्वाह होता था। अब एक कुटुम्ब के कई कुटुम्ब बन गये हैं और हरएक की आय कम है और अलग होने के कारण खर्च उसी अनुपात से बढ़ गया है इसलिए लोग मुसीबत में दिन व्यतीत कर रहे हैं।

अलग-अलग धन्धा होने के कारण दो भाइयों को अलग-अलग वातावरण में रहना पड़ता है इससे उनके रहन सहन में अन्तर पड़ता है।

इसलिये उनका साथ रहना कठिन हो जाता है दूसरे दोनों की पत्नियों में वह सहिष्णुता नहीं रही है जो पहिले थी यह पाश्चात्य समाज के प्रभाव का कारण है। एक पत्नि समझती है कि मेरा पति अधिक कमाता है इस पर दोनों की पत्नियों में झगड़ा बना रहता है, परिणाम स्वरूप एक कुटुम्ब के दो कुटुम्ब बन जाते हैं।

सम्मिलित कुटुम्ब में स्त्रियों का स्वतन्त्रता बहुत कम रहती है। उन्हे अपने मानसिक विकास का अवसर नहीं मिलता। वह सारे दिन घर के धन्धे में ही लगी रहती हैं। इसलिये वह इसका प्रतिकार करती हैं और अपने पति को अलग कुटुम्ब बनाने पर विवश करती हैं जहां उन्हे अधिक स्वतन्त्रता मिलने का ख्याल होता है। सम्मिलित कुटुम्ब प्रणाली को सफलता पूर्वक चलाने के लिये इसमे कुछ सुधार अवश्य करने पड़ेंगे और रूढ़िवाद को त्यागना पड़ेगा। आजकल सम्मिलित कुटुम्ब की व्यवस्था सहकारी व्यवस्था के ढङ्ग (Co-operative Basis) पर होनी चाहिये। तथा व्यक्ति के विकास के लिये अवसर देना चाहिये। स्त्रियों को आवश्यक स्वतन्त्रता अवश्य देना चाहिये। घर में किसी भी व्यक्ति को निकम्मे रह कर दूसरों की कमाई पर पड़े रहने का कोई अधिकार नहीं होना चाहिये। इस प्रकार आज के युग के साथ चल कर आवश्यक फेर बदल कर के ही हम इस प्रणाली को जीवित रख सकते हैं अन्यथा इसे समाप्त होने में समय नहीं लगेगा।

प्रश्न १०६ हमारे सामाजिक जीवन मे कौन से मुख्य दोष आ गये है? उन्हे कैसे सुधारा जा सकता है?

उत्तर—हमारा सामाजिक जीवन बहुत प्राचीन काल से चला आता है और वह अब भी प्राचीन परम्पराओं से बँधा हुआ है। किन्तु आज हमारे सामाजिक जीवन में बहुत दोष आ गये है?

आज भी हम लोग विवाह शादियों में अपनी शक्ति से अधिक धन व्यय कर देते हैं और इसका परिणाम यह होता है कि हम कर्जदार हो जाते हैं।

जाति पाति की व्यवस्था में इतनी कट्टरता आ गई है कि इस बात के भी नियम बनाये गये हैं कि किस जाति के हाथ का बना हुआ खाया जाय और

परम्पराओं के बन्धन

सम्पर्क आने के कारण हमारे सामाजिक जीवन में बहुत से परिवर्तन हुये हैं किन्तु फिर भी हमारा समाज अतीत की परम्पराओं से बधा हुआ है, विवाह, बच्चों के नामकरण संस्कार आदि में बडी असुविधा होती है किन्तु फिर भी पढ़े लिखे लोग भी इन परम्पराओं का उल्लघन करने की हिम्मत नहीं कर सकते।

खान पान तथा विवाह सम्बन्ध आदि स्थापित करने में भी हम इन परम्पराओं से बंधे हुए हैं हमारे मन में यह विचार बना रहता है कि किस जाति के हाथ का बना हुआ खायें और किस जाति के हाथ का बना हुआ न खायें, विवाह सम्बन्ध तो अपनी जाति के बाहर होना बहुत बड़ी बात है।

दहेज प्रथा भी हमारे यहा प्राचीन काल से चली आती है। इन प्रथाओं का अन्धानुसरण होने के कारण हमारे समाज मे बहुत से दोष आ गये हैं, आज पुत्री के जन्म को एक बोझ समझा जाने लगा है, क्योंकि उसके जन्म से उन पर दहेज़ का भार आ पडता है।

महिलाओं का समाज मे स्थान

हमारे समाज में महिलायें अनपढ़ हैं स्त्रियों की शिक्षा का स्तर गिरा हुआ है, वे पुरुषों से दूर रहती हैं और सामाजिक जीवन में कोई भाग नहीं ले सकतीं, वह सदा घर के काम में ही लगी रहती है, इसके विपरीत पाश्चात्य नारी घर के कामों से स्वतत्र है और वह सामाजिक जीवन मे खूब भाग लेती है, विवाह के समय लडके लडकी का आपस में सम्पर्क नहीं आता, इससे योग्य लडके गूगी अथवा बहरी लडकियों से बांध दिये जाते हैं, और इसी प्रकार लडकियों के साथ भी बहुत अन्याय होता है।

हमारे समाज में कौटुम्बिक जिम्मेदारी की भावना बहुत अधिक है, सम्मिलित कुटुम्ब प्रणाली प्राचीन काल से चली आ रही है, एक एक कुटुम्ब में २०, ३० के लगभग व्यक्ति भी होते हैं, इससे स्पष्ट है कि हमारा सामाजिक जीवन किस प्रकार प्राचीन परम्पराओ से बधा हुआ है।

अध्याय १८

पाश्चात्य सामाजिक जीवन और उसका भारतीय सामाजिक जीवन पर प्रभाव

प्रश्न ११२ पाश्चात्य सामाजिक जीवन के बारे में आप क्या जानते हैं ?

जाति व्यवस्था का न होना

उत्तर—पाश्चात्य सामाजिक जीवन की एक सब से बड़ी विशेषता यह है कि वहां जाति व्यवस्था नहीं है कोई भी मनुष्य इस कारण नीच नहीं समझा जाता कि वह नीच जाति में उत्पन्न हुआ है। वास्तव में वहां कोई जाति है ही नहीं। वहां धनी और निर्धन का भेद अवश्य है किन्तु एक निर्धन पढ़ लिख कर योग्य बन कर धनी घरानों में विवाह कर सकता है। वह समाज के अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों के समान समझा जाता है।

के प्रचार से वह मर्दों की भांति कार्य करती हैं उन्हें इसमें तनिक भी झिझक नहीं होती। इसके विपरीत भारतीय नारी को अबला कह कर पुकारा जाता है।

विवाह की प्रणाली

पाश्चात्य समाज व्यवस्था में विवाह प्रथा हमारे यहां की प्रथा से भिन्न है। युवक और युवती जब आवश्यक समझते हैं विवाह कर लेते हैं। बाल विवाह की प्रथा तो वहां है ही नहीं। अपने पुत्र अथवा पुत्री के विवाह की जिम्मेवारी माता पिता पर नहीं। वह अपनी शादी के लिये स्वयं ही वर अथवा वधू को खोज कर लेते हैं। कहीं कहीं तो बड़े घर की लड़कियां विवाह करती भी नहीं हैं। वह कौटुम्बिक जीवन से घबराती हैं कारण इससे उनकी स्वतन्त्रता में बाधा आती है।

पाश्चात्य सामाजिक जीवन की यह विशेषतायें भारतीय सामाजिक जीवन से एकदम भिन्न है।

प्रश्न ११३ भारतीय तथा पाश्चात्य सामाजिक जीवन में क्या अन्तर है?

हमारी वेश-भूषा, खान-पान तथा रहन-सहन में बड़ा परिवर्तन हुआ। शिक्षित लोगों ने अंग्रेजों के रहन-सहन के ढंग, उनकी पोशाक को अपना लिया। धीरे धीरे उनका दृष्टिकोण भी बदलने लगा। चाय, बिस्कुट आदि तथा घर की बनावट सजावट आदि सब अंग्रेजी ढंग पर होने लगे।

पाश्चात्य सम्पर्क के कारण शिक्षित वर्ग में वैयक्तिक स्वतंत्रता की भावना बढ़ गई है। जाति व्यवस्था, सम्मिलित कुटुम्ब प्रणाली तथा समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना कमजोर पड रही है।

अंग्रेज़ों के सम्पर्क आने के पूर्व भारत में छुआछूत बहुत अधिक था किन्तु औद्योगीकरण, शहरों के निर्माण तथा शिक्षा के कारण अधिक से अधिक लोगों का आपस में सम्पर्क आया, एक ही नल पर लोग पानी पीने लगे इस प्रकार छुआछूत आदि की प्रथा में भी बहुत सुधार हुआ है।

बहुत से बुरे रीति-रिवाज, जैसे सती होने की प्रथा भी समाप्त हो गई है। विवाह सम्बन्धी मामलों में भी अब लड़के लड़कियों की सलाह ली जाने लगी है। तथा लड़कियों को शिक्षा देना भी आवश्यक समझा जाने लगा है। जाति प्रथा में भी अब वह रूढ़ीवाद नहीं रहा है उसकी कट्टरता कम हो गई है। अपनी जाति के बाहर भी अब विवाह होने लगे हैं।

यद्यपि पाश्चात्य सभ्यता के सम्पक से हमारे समाज जीवन में द्रुतर महत्वपूर्ण परिवर्तन हुये हैं किन्तु उन का आधार अब भी भारतीय है। हमने ठाठ-बाठ तथा रहन-महन की दृष्टि से पाश्चात्य समाज की नकल की है किन्तु हमारी परम्परायें अब भी वैसे ही बनी हुई हैं।

विलक्षण शक्ति है। प्रो० डॉडवेल कहते हैं कि भारत में समुद्र की तरह सोखने की शक्ति थी।

जिस समय आर्य भारत में आये यहाँ पर द्राविड़ सभ्यता थी किन्तु आर्य थोड़े समय पश्चात् ही द्राविड़ों से इस प्रकार घुलमिल गये कि द्रविड़ और आर्य में अन्तर ही नहीं रहा। आर्यों ने भारत में अपनी कला कौशल का विकास किया। भारत में उसके पश्चात् यूनानी, शक, हूण, तथा अन्य जातियां आईं। पहिले तो उनका भारतीयों से संघर्ष हुआ किन्तु धीरे धीरे वह सब जातियां भारतीय जीवन में ही घुल-मिल गईं। भारतीय सभ्यता पर सबसे अधिक प्रभाव मुसलमानों का पड़ा। यद्यपि दोनों संस्कृतियां अलग-अलग रहीं किन्तु इनमें बहुत सा सामञ्जस्य स्थापित हो गया। इसके पश्चात् यहां पुर्तगीज, डच, फ्रांसीसी तथा अंग्रेज आये। पाश्चात्य सभ्यता का भारतीय संस्कृति पर बहुत प्रभाव पड़ा। किन्तु भारतीय संस्कृति ने पाश्चात्य सभ्यता के कल्याणकारी तत्वों को अपने में घुला मिला लिया और वह अब भी भली भांति जीवित है।

प्रश्न ११६ भारतीय संस्कृति में धर्म का क्या स्थान रहा है? धर्म की भारतीय कल्पना की सविस्तार व्याख्या कीजिये।

उत्तर—भारतीय संस्कृति में धर्म सदा प्रधान रहा है। धर्म का अर्थ है कर्तव्य। जीवन में मनुष्य जिस परिस्थिति में हो उस समय जो उसका कर्तव्य होना चाहिये वही उसका धर्म होगा। एक पिता का अपनी सन्तान के प्रति जो कर्तव्य है उसे पितृ धर्म कहेंगे। पत्नि का अपने पति के प्रति जो कर्तव्य होगा उसे पतिव्रत धर्म कहेंगे। इसी प्रकार राजा का प्रजा के प्रति जो धर्म है उसे राज धर्म तथा जनता का एक दूसरे के प्रति जो कर्तव्य है उसे समाज धर्म कहते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्तव्य के पालन करने को अपना धर्म समझ कर करता था। कर्तव्य पालन में स्वार्थ नहीं होना चाहिये। प्रत्येक व्यक्ति अपने सामने एक आदर्श रखता था। डाक्टर के सामने वास्तव में अपनी सारी शक्ति लगा कर रोगी को ठीक करना यही धर्म था। राजा अपने आप

के लिये हितकारी हो। इस प्रकार सच्चे कर्तव्य भाव से अपने व्यवहार को करना धर्म समझा जाता था।

वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम

सांसारिक जीवन व्यतीत करने के पश्चात् स्वाभाविक ही मनुष्य इस संसार की उलझनों में कुछ ऊब-सा जाता है और उसका मन एकान्तवास के लिये अथवा गृहपरित्याग के लिये लालायित हो उठता है। इसीलिये जीवन के प्रत्येक अंग पर दृष्टि रखते हुए मनोवैज्ञानिक ढंग से हमारे ऋषियों ने वर्णाश्रम धर्म की व्यवस्था की। २५ वर्ष ब्रह्मचर्य आश्रम तथा २५ वर्ष गृहस्थ आश्रम में व्यतीत करने के पश्चात् वानप्रस्थ आश्रम तथा सन्यास आश्रम की व्यवस्था की गई थी। वानप्रस्थ आश्रम में मनुष्य २५ वर्ष संसार की सेवा में अपना जीवन लगाता था और सन्यास आश्रम में २५ वर्ष तक भजन चिन्तन तथा एकान्तवास द्वारा मन की शान्ति का प्रयास करता था। उस समय मनुष्य की साधारण आयु १०० वर्ष की समझी जाती थी। यह १०० वर्ष सुख चैन तथा आनन्द पूर्वक व्यतीत हो जायें इसलिये वर्णाश्रम धर्म की व्यवस्था की गई थी।

स्मृतियों में चारों आश्रमों तथा वर्णों की विवेचना की गई है।

स्मृतियाँ

स्मृतियों में मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य तथा पाराशर की स्मृतियाँ मुख्य हैं। मनुस्मृति वर्णाश्रम व्यवस्था का आधार मानी जाती है। मनुस्मृति हिन्दू क़ानून का आधार है।

महाकाव्य

रामायण और महाभारत दो प्रसिद्ध महाकाव्य हैं। कवित्व की दृष्टि से तो ग्रन्थ सर्वोत्कृष्ट हैं ही। किन्तु जीवन के आदर्शों के व्यवहारिक रूप पर भी पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।

गीता

अर्जुन महाभारत युद्ध में जिस समय शस्त्र छोड़ कर खड़ा हो गया उस समय भगवान् श्री कृष्ण ने उन्हें कर्तव्य का जो उपदेश दिया है वह श्रीमद्भगवद्गीता अथवा गीता के नाम से प्रसिद्ध है। इसने निःस्वार्थ-भाव से कर्तव्य पालन पर बल दिया गया है। विद्वानों का मत है कि ब्रह्म ज्ञान की शिक्षा की दृष्टि से गीता संसार भर के ग्रन्थों में सर्वश्रेष्ठ है।

पुराण

पुराणों में हिन्दू देवी देवताओं सम्बन्धी काल्पनिक कहानियाँ दी गई हैं। यह कहानियाँ अत्यन्त मनोरंजक हैं। इन कहानियों का अलङ्कारों के रूप में प्रयोग किया गया है इसलिये आजकल इनका समझना कठिन हो गया है। यदि इन अलङ्कारों की खोज की जाय और इन्हें समझने का प्रयत्न किया जाय तो पुराण बहुत ही उपकारी सिद्ध हो सकते हैं।

बौद्ध और जैन दर्शन शास्त्र

बौद्ध और जैन दर्शन दोनों में बहुत अन्तर है। किन्तु ईश्वर को दोनों ही नहीं मानते। बुद्ध ने अन्धविश्वास को छोड़ कर प्रत्येक विषय को तर्क और अनुभव की कसौटी पर कसने का उपदेश दिया है। जैन धर्म में त्याग, अहिंसा तथा आत्मसंयम पर बल दिया गया है।

में फस कर आर्य लोगों के सामाजिक जीवन में खोखलापन आने लगा था। महात्मा बुद्ध ने यज्ञ, हवन तथा अन्य कर्मकाण्डों के विरुद्ध प्रचार किया। उन्होंने यज्ञों में पशुओं की बलि देने को पाप बताया। उनके अनुसार निरीह पशुओं को मारना धर्म नहीं है। धर्म का आधार केवल चरित्र बल ही है इस पर जोर दिया गया। मनुष्य के मन में कभी भी क्रोध, लोभ और मोह नहीं होना चाहिये।

बुद्ध मत के अनुयायी ईश्वर को नहीं मानते। महात्मा बुद्ध ने अन्ध-विश्वास के स्थान पर यह शिक्षा दी कि केवल उसे ही सत्य जानो जो अनुभव और तर्क की कसौटी पर सत्य साबित हो। महात्मा बुद्ध का सब से बड़ा सिद्धान्त था सत्य बोलना चाहिये और उसे ही ग्रहण करना चाहिये जो सत्य हो। किसी भी प्राणी को कष्ट नहीं देना चाहिये तथा शत्रु को प्रेम से जीतना चाहिये।

बुद्ध मत का प्रचार लगभग एक हज़ार वर्ष तक रहा। भारत में तथा भारत से बाहर बुद्ध मत फैलाने में महाराजा अशोक, कनिष्क तथा अन्य बौद्ध राजाओं ने बड़ा कार्य किया। उस समय बुद्ध मत लङ्का, चीन तथा दूर पूर्व में फैल चुका था। स्वामी शङ्कराचार्य ने बुद्ध मत के तत्वों को भी हिन्दू धर्म में मिला लिया और फिर से हिन्दू धर्म को जीवित किया और थोड़े समय में बुद्ध मत का ह्रास प्रारम्भ हो गया।

प्रश्न १२१. सामान्य जन के लिये गीता का क्या उपदेश है?

उत्तर—महाभारत के युद्ध के प्रारम्भ में जब अर्जुन शस्त्र छोड़ कर बैठ गया तब श्री कृष्ण जी ने उसे युद्ध करने को कहा और अपने उपदेश द्वारा अर्जुन की शङ्काओं का समाधान किया। श्रीकृष्ण जी के इस उपदेश को ही श्रीमद्भगवत गीता अथवा गीता कहा जाता है।

गीता गभीर तत्वज्ञान से भरपूर है। गीता में ज्ञान, कर्म तथा भक्ति तीनों योगों का बड़े सुन्दर ढंग से समन्वय किया गया है। इन गहन विषयों के अतिरिक्त गीता में सामान्यजन के लिये भी बहुत सी उपयोगी बातें दी गई हैं। गीता ने कर्मयोग पर अधिक जोर दिया गया है। कर्मयोग का अर्थ है कि मनुष्य को निष्काम भाव से अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिये, उस

बनवाये थे जिन पर धार्मिक उपदेश खुदे हुए थे। यह स्तूप ससार में प्रसिद्ध हैं। साची के स्तूप का तोरण द्वार भारतीय मूर्तिकला का सुन्दर नमूना है।

स्थापत्य कला अथवा भवन निर्माण कला मे भी भारत बहुत उन्नति पर रहा है। कुछ बहुत प्राचीन मन्दिर आज भी अच्छी हालत में विद्यमान हैं जिनकी कला को देखकर आज हम आश्चर्य चकित हो जाते हैं। महाबली पुरम, मथुरा, तंजौर, कंजीवरम तथा रामेश्वर में बड़े भव्य मन्दिर बने हुए हैं जिनकी कला को देख कोई भी व्यक्ति प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता। उनकी कला वास्तव मे सराहनीय है उनमे खुदाई का काम बड़ी बारीकी से किया गया है। इसी प्रकार गया जी मे बौद्ध मन्दिर, उडीसा मे कुनार का टूटा हुआ सूर्य मन्दिर तथा भुवनेश्वर तथा जगन्नाथपुरी के मन्दिर भारतीय स्थापत्य कला के अच्छे उदाहरण हैं। इस प्रकार प्राचीन भारत म चित्रकला मूर्तिकला तथा स्थापत्य कला पूर्ण उन्नत पर थी।

प्रश्न १२३. दसवीं शताब्दी के बाद भारत मे वैज्ञानिक तथा दार्शनिक खोज रुक जाने के क्या कारण हो सकते हैं?

उत्तर—गुप्तकाल तथा हर्ष के शासन काल के पश्चात धीरे धीरे दर्शन और ज्ञान में बढोतरी बन्द हो जाती है। हमारे प्रसिद्ध विद्यापीठ निर्जीव हो जाते हैं। जहां दसवीं शताब्दी मे भारत विज्ञान और दर्शन में ससार के उन्नत देशों में गिना जाता था वहा उन्नीसवीं शताब्दी में भारत दुनिया के पिछड़े हुए देशों में रह गया।

हमारी इस अवनति का एक कारण तो यह हो सकता है कि भारत एक बहुत लम्बे समय तक युद्ध में ही व्यस्त रहा और शत्रुओं के सतत् आक्रमणों से भारत की शक्ति का हास हो चुका था और अन्त में जब भारत अपनी स्वतन्त्रता खो बैठा फिर उसके लिये उन्नति करने का अवसर नहीं रहा।

अवनति के कारण

दूसरा कारण यह हो सकता है कि हमारे सामाजिक जीवन में शिथिलता आ गई थी। जाति व्यवस्था के कारण देश का शत्रुओं से रक्षा करना केवल क्षत्रियों का ही कार्य रह गया था जो अपर्याप्त होने के कारण देश की

जीर्ण समाज व्यवस्था

अध्याय २१

मध्यकालीन समन्वय

प्रश्न १२८ अरबों, पठानों तथा मुगलों के सम्पर्क से हिन्दुओं के सामाजिक जीवन पर तथा हिन्दु सामाजिक जीवन का उन पर क्या प्रभाव पड़ा ?

इस्लमा से प्रथम सम्पर्क

उत्तर—भारतीय सभ्यता का मुस्लिम सभ्यता से प्रथम सम्पर्क अरब सौदागरों के कारण आया। अरब सौदागरों ने सबसे पहिले दक्षिण भारत मे व्यापर सम्बन्ध स्थापित किये थे।

अरबों, अफगानों, तथा मुगलों का भारत मे प्रवेश

नवीं सदी में मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में अरबों ने भारत पर आक्रमण किया। ग्यारहवीं सदी के प्रारम्भ में महमूद गजनवी ने गुजरात पर आक्रमण किया। १६ वीं सदी मे बाबर ने मुगल वंश की नींव डाली। धीरे धीरे बाहर से आई मुस्लिम जातिया यहा बस गई।

प्रारम्भिक सम्पर्क

बादशाह तथा नवाबो के दरबारों में और शहरों मे विदेशी रहन सहन के ढग अपनाये जाने लगे। शहरो की जबान फारसी बन गई। सरकारी कर्मचारियो ने भी विदेशी भाषा विदेशी वस्त्र तथा उन्हीं के रहन सहन के ढगो को अपनाया। किन्तु गाव के जीवन पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा, इसके विपरीत इस डर से कि कहीं विदेशी हमारी सभ्यता पर आक्रमण

न करें यह और भी अधिक कट्टर हो गये। इसके अतिरिक्त विदेशी अफसरों का ग्राम्य जीवन से सम्पर्क भी बहुत कम रहा।

विदेशी सम्पर्क और ग्राम्य जीवन

हमारे गांवों में जो जातियां नीची समझी जाती थीं तथा जिनसे अच्छा व्यवहार नहीं किया जाता था उन्होंने शासकों का धर्म अर्थात इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया। किन्तु उनका रहने का ढंग भारतीय ही बना रहा। गांव के जीवन में जहां अन्य जातियां थीं वहां मुसलमान एक और जाति बढ़ गई। हिन्दू सभ्यता का भी इस्लाम धर्म पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा। मुसलमान प्रारम्भ में मूर्ति पूजा के विरोधी थे किन्तु हिन्दू सभ्यता के प्रभाव के कारण भारतीय मुसलमान, दरगाह, पीर, ताजिये इत्यादि की पूजा करने लगे। धीरे धीरे हिन्दू भी दरगाह और पीर इत्यादि पर नजरें चढ़ाने लग गये।

मुसलमानों का अल्लाह एक ही है। गुरु नानक ने भी मुसलमानों के एकेश्वर-वाद को स्वीकार किया तथा अन्धविश्वास और आडम्बर का विरोध किया इसी समय चैतन्य, सूरदास, तथा मीरा बाई आदि सन्तों द्वारा भक्ति मार्ग का उत्थान हुआ जिन पर इस्लाम के सम्पर्क का प्रभाव बताया जाता है।

तीय सूफी मार्ग पर वेदान्त तथा योग दर्शनों का काफी प्रभाव पड़ा।

इस प्रकार भारत में इस्लाम के आने से एक दूसरे की संस्कृति का सूत्र समन्वय हुआ और दोनों संस्कृतियों ने एक दूसरे को बड़ा प्रभावित किया।

प्रश्न १२५. मुस्लिम सम्पर्क का भारतीय धर्म, साहित्य, चित्र-कला, स्थापत्य कला तथा संगीत पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर—आधुनिक चित्रकला, स्थापत्यकला तथा संगीत इत्यादि पर अफ़गान तथा मुगल कला कौशल का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। भारतीय चित्रकला में तथा नक्काशी में खुदाई का कार्य बहुत बारीक होता था। अजन्ता की गुफा में बहुत बारीक काम खुदा हुआ है। दक्षिण भारत में प्राचीन मन्दिरों में खुदाई का काम इतना बारीक तथा पेचीदा होता था कि मन्दिरों की दीवारों, खम्भों तथा महराबों पर एक इंच स्थान भी खाली नहीं रहता था। अफगानों और मुगलों द्वारा लाई गई ईरानी तथा अरबी कला इसके विपरीत अलग सिद्धान्तों पर आधारित थी। इसमें सरलता अधिक थी। चित्रों में मीन मेख बहुत कम होती थी। भारतीय मूर्तिकला पर भी इसका बड़ा प्रभाव पड़ा। मुसलमानों के मक़बरे तथा मसजिद इत्यादि में यही कला प्रदर्शित होती थी। बाद में इन दो कलाओं का समन्वय हो गया। चित्रकला में यह शैली मुगल शैली कहलाती थी। स्थापत्य कला में भी उत्तर भारत की सुन्दर मसजिदों, महलों तथा मन्दिरों में भारतीय तथा ईरानी और अरबी कला का मिश्रण अलग दीख पड़ता है। इनमें भारतीय मीन मेख अर्थात बारीकियें भी हैं तथा मुस्लिम प्रभाव के गुम्बज और महराबें भी।

संगीत में उन्नति

संगीत कला में भी प्राचीन और नवीन शैलियों का मेल देखा जा सकता है। मध्य काल में नये साजों जैसे सितार और सारङ्गी आदि का आविष्कार हुआ और मुगल काल में संगीत की नई शैलियां ठुमरी और ख्याल

अध्याय २२

पाश्चात्य सभ्यता का भारत पर प्रभाव

प्रश्न १२६ पाश्चात्य शिक्षा का हमारे सांस्कृतिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा ?

अंग्रेजों का भारत में प्रवेश

उत्तर—प्रारम्भ में यूरोपीय जातियों में से एक पुर्तगाली नाविक १४९८ में भारत में कालीकट के मुकाम पर उतरा। इसके पश्चात देखा-देखी यूरोप की दूसरी जातियां भी आईं। इंगलैंड का राजदूत सर टामसरो भारतीय राज-राजेश्वर जहांगीर के दरबार में १६१५ में आया और राज्य की आज्ञा से भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने व्यापार प्रारम्भ किया। इस कम्पनी के अंग्रेज कर्मचारियों ने राजनैतिक फूट से लाभ उठाकर अपना राज्य स्थापित किया। उनके राज्य स्थापित होने से लेकर उसके बहुत पीछे तक भारतीय संस्कृति तथा पश्चात्य संस्कृति में कोई विशेष समन्वय स्थापित न हो सका।

भारत में अंग्रेजी नीति

अंग्रेजों को भारत में कार्य करने के लिये राज्य स्थापन के पश्चात फारसी आदि भाषाओं को अपनाना पड़ा। तत्पश्चात लार्ड मैकाले गवर्नर जनरल की काउंसल के एक सदस्य नियुक्त हुये और उन्होंने इस बात पर बल दिया कि भारतीय नवयुवकों को पश्चात्य शिक्षा प्रणाली और शासन के ढंगों से अवगत कराना चाहिये, जिससे वह कम्पनी की सेवा भली प्रकार कर सकें। परिणाम यही हुआ पढ़ पढ़ कर भारत के इच्छुक पश्चात्य सभ्यता और शिक्षा को अपनाते चले गये। परन्तु फिर भी

इसके पश्चात जगत विख्यात श्री रविन्द्रनाथ ठाकुर जो अपनी कविता के कारण संसार में अद्वितीय रहे हैं उन्होंने भौतिकवाद का खण्डन किया और भारतीय संस्कृति का आधुनिक युग में पुन उत्थान किया। कविताओं द्वारा और विश्वभारती तथा शांति निकेतन आदि विद्या पीठ संस्थाओं की स्थापना द्वारा भारतीय सभ्यता को पुन जीवित किया। इन संस्थाओं में रहकर पाश्चात्य विद्वानों ने भी शिक्षा ग्रहण की।

कविवर इकबाल ने भी पाश्चात्य सभ्यता पर कड़ी आलोचना की गाधी जी ने भी जिनको आज सारा संसार पूज्य मानता है पश्चिमी औद्योगीकरण के विरुद्ध चेतावनी दी। और इसी ध्येय को लेकर भारतीय स्वतन्त्रता के लिये आन्दोलन किया और भारत में राष्ट्रीय भावना का संचार किया। इस प्रकार भारतीय संस्कृति को जागृत करने के शनै शनै पर अनेकों प्रयत्न होते रहे और अब भी हो रहे हैं। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति अब भी भली भांति जीवित है।

प्रश्न १२८. कविन्द्र रविन्द्रनाथ ठाकुर का भारतीय पुनर्जागृति में क्या स्थान है ?

उत्तर—कविन्द्र रविन्द्रनाथ ठाकुर जिन्हें बहुधा गुरुदेव कहा जाता है भौतिकवाद के विरुद्ध थे और उन्होंने भारतीयों को इससे बचने के लिये आग्रह किया। भारतीय संस्कृति को पुनर्जीवित करने के लिये शान्ति निकेतन तथा विश्वभारती आदि विद्यापीठ जैसी संस्थाओं की स्थापना की। साथ ही भारतीयों को अन्धानुकरण और अन्धविश्वास से रोका जिसके कारण वह बुरे रीति रिवाजों के दास बने हुये थे। उन्होंने यह भी कहा कि पाश्चात्यों से हमें यह सीखना चाहिये कि कैसे अशिक्षा, दरिद्रता और बीमारी पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

ठाकुर जैसा महान् कवि आज तक संसार में नहीं हुआ। आधुनिक युग में भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान में ठाकुर का बहुत उच्च स्थान है। उनकी बनाई हुई संस्थाओं में परस्पर प्रेम, चित्रकला, संगीत, कला-कौशल तथा प्राचीन ऐश्याई दर्शन और साहित्य के अध्ययन की विशेष व्यवस्था है। इन

अध्याय २३

महात्मा गांधी का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव

प्रश्न १३० महात्मा गांधी के आर्थिक तथा राजनैतिक पुनर्रचना सम्बन्धी विचारों की विवेचना कीजिये।

उत्तर—बड़े बड़े कारखानों में पूंजीपतियों द्वारा श्रमिकों का शोषण होता है। जिन लोगों के हाथ मे आर्थिक सत्ता केन्द्रित हो जाती है वह अपने पैसे की शक्ति से देश की नीति पर भी प्रभाव डालते है और कई बार युद्ध भी करा देते हैं। महात्मा जी आधुनिक औद्योगीकरण के विरुद्ध थे उनका कहना था कि कल कारखाने कम से कम होने चाहियें। और इनके स्थान पर गृह उद्योग अथवा ग्राम उद्योगों के विकास का प्रयत्न करना चाहिये। जिससे सम्पत्ति का वितरण न्याय पूर्ण ढंग से हो सके। ऐसा करने से आर्थिक सत्ता केन्द्रित नहीं हो सकती।

आर्थिक तथा राजनैतिक व्यवस्था-विकेन्द्रीकरण

राजनैतिक दृष्टि से महात्मा जी प्रत्येक गाव को आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे। इस प्रकार वह सत्ता का विकेन्द्रीकरण करना चाहते थे। अर्थात गाव में पंचायत राज्य होना चाहिये और इन पंचायतों को शासन चलाने के लिये काफी अधिकार होने चाहिये। क्योंकि गाव के लोग एक दूसरे को भली भान्ति जानते है इसलिये वह शासन चलाने के योग्य तथा ईमानदार लोगो को सरलता से चुन सकते हैं और वहा पर भ्रष्टाचार के लिये कोई स्थान नहीं रह जाता। इस प्रकार गाधी जी प्रत्येक गाव का एक जनतन्त्र बनाना चाहते थे। यदि एक गाव के स्थान पर शासन क्षेत्र बड़ा बना दिया जाय तो वहा धनिक लोगों का चाल बाज़ी तथा रुपये की शक्ति द्वारा शासन कार्य में आजाने का

उन्होंने भरसक प्रयत्न किया। उन्होंने अछूतों को हरिजन का नाम देकर उनके प्रति सहानुभूति दिखाई। उन्होंने स्वयं हरिजनों के हाथ का बना हुआ भोजन खाया और दूसरों को भी उनसे घुल मिल जाने की शिक्षा दी।

गान्धीजी मानवता के पुजारी थे। उनकी दृष्टि में, गोरे, काले, अफ्रीकी, यूरोपियन और चीनी आदि का भेद भाव कोई अर्थ नहीं रखता। दक्षिणी अफ्रीका की सरकार का काली जातियों के प्रति जो पक्षपात पूर्ण व्यवहार था उसके विरुद्ध महात्मा जी ने आन्दोलन किया। भारत में उन्होंने हिन्दू मुसलमानों को मिलाने का बड़ा प्रयत्न किया। भारत का विभाजन हो जाने पर पाकिस्तान तथा भारत में हिन्दुओं तथा मुसलमानों का रक्तपात हुआ। भारत में मुसलमानों की जान बचाने के लिये महात्मा जी ने मरणव्रत रक्खा और इस प्रकार यहां के रक्तपात को बन्द किया।

महात्मा जी का धर्म मानव धर्म कहना चाहिये। उनके लिये सब मानव समान तथा सब धर्म समान हैं। उनका सब से बड़ा सिद्धान्त यह था कि हमें सब धर्मों के प्रति आदर की दृष्टि से देखना चाहिये।

---

३ विकसित वाणी यंत्र, भाषा का निर्माण तथा एक पीढ़ी का ज्ञान वाणी तथा भाषा द्वारा दूसरी पीढ़ी तक जाता है।

४ विकसित मस्तिष्क—समस्त उन्नति मस्तिष्क के कारण।

मानव की क्रमिक प्रगति की कहानी।

१ पहिले मनुष्य वन मानुष्य के रूप में था।

२ धीरे-धीरे शस्त्रास्त्र बनाये, आग का प्रयोग हुआ।

३. घर बनाये, पशु पालन सीखा।

४ समाज व्यवस्था का निर्माण।

५ कला, दर्शन, विज्ञान आदि में उन्नति।

६ प्रगति अब भी चल रही है और विकास की सम्भावना।

आधुनिक वैज्ञानिक आविष्कारों का मानव जीवन पर प्रभाव।

१. आविष्कारों का मानव जीवन पर गहरा प्रभाव।

२ मानव मांसाहारी से व्यवस्थित समाज का अंग बना।

३. जल, भाप, तेल और बिजली की शक्ति से बड़े-बड़े कल कारखानों का निर्माण, ग्रामीण सभ्यता में बदल।

४ राष्ट्रीय सम्पत्ति में वृद्धि, पूंजीपतियों और मज़दूर वर्ग में संघर्ष।

अध्याय २—दूरी पर विजय

स्थल यातायात के साधनों का विकास तथा कठिनाइयों पर विजय।

१. प्रारम्भ में यातायात के कोई साधन न थे।

२. समय तथा स्थानानुकूल हाथ गाड़ी, घोड़ागाड़ी, ऊंटगाड़ी आदि बनीं।

३. यातायात में पहिये की ही करामात।

४ भारी गाड़ियों के कारण सड़कों का सुधार तथा विकास।

५ भाप इंजन से चलने वाली पहिली गाड़ी जार्ज स्टीफ़सन ने बनाई।

६ भाप इंजन भारी होने से पैट्रोल इंजनों का आविष्कार।

७ प्रारम्भ में लोग इन आविष्कारों से डरते थे। पैरिस में ट्रैफ़िक

५. दुनिया का कोई स्थान ऐसा नहीं रहा जहाँ अब न पहुँचा जा सके।

रेल के आविष्कार से मनुष्य के आर्थिक तथा सामाजिक जीवन पर प्रभाव।

१. मनुष्य जीवन के सभी क्षेत्रों में भारी प्रभाव।
२. उपज में वृद्धि, मण्डियों में माल ले जाने की सुविधा।
३ सारे देश के अनाज के भावों में समानता।
४. अब रुपये का अकाल है अनाज का नहीं।
५. औद्योगीकरण रेलों के कारण सम्भव हुआ।
६. शहरी जीवन के चिन्ह देहातों में गये।
७. छूत-छात का भूत कम हुआ।
८. लोगों का दृष्टि कोण भारतीय बना।

रेल आविष्कार की कहानी।

१. १७६६ में क्यूनों नामक व्यक्ति ने पहिली भाप से चलने वाली गाड़ी बनाई।
२. १८०२ में ट्रेविथिक ने रेल पर चलने वाली भाप गाड़ी बनाई।
३. रेल पर चलने वाली पहिली भाप गाड़ी बनाने का श्रेय जार्ज स्टीफसन को।
४. प्रारम्भ में बड़ी कठिनाइयां आई—लोग गाड़ी से डरते थे।
५. आधुनिक रेल में पर्याप्त सुधार।
६. लन्दन में भुमि गत रेलें।

मोटर गाड़ी का विकास तथा सामाजिक जीवन पर प्रभाव।

१. ०८८५ में डैमलर ने पैट्रोल इजन बनाया जिसे साईकल में लगाया।
२ मोटर गाड़ी १८९१ के आसपास बनी। उस समय स्पीड १५ मील थी।
३. मोटर गाड़ी से सामाजिक जीवन पर गहरा प्रभाव।
४. देहाती जीवन में शहरी जीवन के चिन्ह आना।

५ जमींदारों को मण्डियों में माल ले जाने की सुविधा।

यातायात के साधनों में पहिये का स्थान।

१ पहिये द्वारा ही दूरी पर विजय।

२ पहिये का उपयोग। प्राचीन-असीरियन सभ्यता में पहिये वाली गाड़ी के उपयोग का उल्लेख।

३ पहिये के कारण सड़कों में सुधार और विकास।

४ पहिये ने ही आधुनिक यातायात के साधनों के लिये मार्ग खोला।

अध्याय ३—विचार वाहन के साधनों का विकास

पिछले दो सौ वर्षों में विचार वाहन में उन्नति।

१. जैसे प्राचीन काल में आवाज अथवा नजर जहाँ तक जाती वहीं तक सन्देश जा सकते थे।

२ विचार वाहन के आधुनिक साधन पिछले दो सौ वर्षों की देन।

३ महाभारत में भी सन्देश वाहन के विभिन्न साधनों का उपयोग।

४ बीसवीं शताब्दी में छापाखाने, डाक, तार, रेडियो और टेलिफोन आदि साधनों का विकास। इनके द्वारा विचारों के आदान प्रदान में सुविधा।

२ तार का आविष्कार १९वीं शताब्दी में हुआ।

३. तार द्वारा समाचार नहीं भेजे जाते वरन बिजली की लहर दौड़ाई जाती है। जो बाद में समाचारों में परिवर्तित हो जाती है।

४. तार के लिये डेमी का उपयोग होता है। जो स्टेशनों पर खटखट करती है।

५ समुद्र पार भी पानी में केबल डालकर समाचार भेजे जाते हैं।

६. सेतुबन्ध रामेश्वर की भांति केबल बन्ध, रामेश्वर का बनना।

टेलिफोन, टेलिप्रिंटर और टेलिविजन।

१ टेलिफोन द्वारा दूर बैठे व्यक्ति से बातचीत कर सकते हैं।

२ टेलिविज़न द्वारा जिस व्यक्ति से बात करते हैं उसका चित्र हमारे सामने आ जाता है।

२ टेलिप्रिंटर द्वारा समाचार एक ही समय में हजारों मशीनों पर टाईप द्वारा लिपि बद्ध होते रहते हैं।

रेडियो का विकास तथा उसका सामाजिक दृष्टि से महत्व।

१. महाभारत काल में ऐसे यन्त्रों के होने का उल्लेख।

२. रेडियो आविष्कार का श्रेय मारकोनी को।

३ आज रेडियो का बहुत विकास हो चुका है।

४ रेडियो प्रचार और शिक्षा का प्रमुख साधन।

५ समाचार प्राप्ति की दृष्टि से रेडियो का महत्व।

६ अन्य देशों से सम्पर्क स्थापित करने में रेडियो का हाथ।

बेतार के तार द्वारा मनुष्य को लाभ।

१ बेतार के तार में दो यन्त्रों की आवश्यकता ट्रांसमीटर (Transmitter) और रिसीवर (Receiver)

२. इसी के आधार पर रेडियो का आविष्कार।

३. वायुयान में इसका उपयोग।

४ बगैर चालक के वायुयान में इसका उपयोग।

३. अधिक उपज। कपड़े आदि के बड़े-बड़े मिल—खेतों में ट्रैक्टर आदि का उपयोग।

४. पूंजीपतियों तथा श्रमिकों में संघर्ष।

यन्त्रों की आश्चर्यजनक करामात।

१ क्रेनों द्वारा भारी-भारी इंजन पटरियों पर रखना।

२. गरम लोहा क्रेन द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना।

३ बड़े पैमाने पर उत्पादन यन्त्रों से ही सम्भव हुआ।

४. नई समस्यायें—स्वच्छता तथा स्वास्थ्य के नियमों की अवहेलना। फैक्टरियों के वायुमण्डल में सुधार आवश्यक।

५. फैक्टरियों में सृजनात्मक आनन्द का अभाव।

अध्याय ५—शक्ति पर विजय

वाष्प शक्ति का उपयोग।

१. सत्रहवीं शताब्दी से भौतिक शक्ति का उपयोग।

२ १८ वीं शताब्दी में पम्प चलाने के लिये भाप का उपयोग हुआ।

३. बड़े-बड़े कारखाने वाष्प की शक्ति से चलते हैं।

४. बिजली तथा पैट्रोल की शक्ति इतनी व्यापक नहीं हुई है।

५. वाष्प शक्ति के बिना बड़े बड़े कल कारखाने बन्द हो जायें।

कोयले का महत्व तथा कोयले की खानों मे काम करने मे कठिनाइया।

१ कोयले का उपयोग व्यापक हो गया है।

२. भारत में झरिया और रानीगंज मे कोयले की बड़ी बडी खानें हैं।

३ खानों में काम करने में अनेक कठिनाइयां—सैंकड़ों व्यक्ति प्रतिवर्ष खानो की भेंट हो जाते हैं।

४. खानों की छतें गिर जाती हैं। खानों में आग लग जाती है। गैस से दम घुट कर भी मर जाते हैं।

५. आजकल खानों में अनेक सुधार हुये हैं। छतों के नीचे खम्भे लगाये गये

है। रोशनदानों की व्यवस्था हुई है। बहुत सा काम मशीनों द्वारा होता है। क़ानूनों द्वारा भी सुधार का प्रयत्न किया है।

पिछले दो सौ वर्षों से शक्ति के नये साधनों की खोज

१. कलें स्वय नहीं चलती—कोई शक्ति इन्हें चलाती है।

२ प्रारम्भ में मनुष्य हाथ से काम करता था, धीरे-धीरे भौतिक यन्त्र का प्रयोग होने लगा।

३. आधुनिक युग में बिजली, पानी, कोयला, पैट्रोल, हवा आदि शक्तियों से काम लिया जाता है।

४ हाल ही में परमाणु शक्ति भी काम में लाई जाने लगी है।

४ जल धारा के वेग से Renerator तथा Dynamo चला कर भारी परिमाण में विद्युत शक्ति पैदा की जा रही है।

५ आधुनिक युग में बिजली का उपयोग व्यापक—बड़ी-बड़ी मशीनों से लगा कर घर में छोटे बड़े काम बिजली से होने लगे हैं। बडे-बडे छापखाने, रेलें आदि बिजली से चलते हैं।

६ एक बटन दबाने भर की देर है।

परमाणु शक्ति से लाभ अथवा हानि।

१ सब शक्तियों से अधिक शक्तिशाली।

२. ताबे की एक पाई में आठ करोड़ अश्व बल की शक्ति।

३ परमाणु शक्ति का उपयोग यदि मानव हित में किया जाय तो बहुत लाभकारी और यदि मानव अहित में उपयोग किया जाये तो विनाशकारी। एक बम एक सारे शहर को तबाह करने के लिये पर्याप्त।

४. यदि मानव हित में उपयोग किया जाय तो ससार से अभाव का नाम उठ जाय।

अध्याय ६ – रोगों पर विजय

रोगों पर विजय पाने के लिये मनुष्य का पहला कदम।

१ देवी देवताओं के प्रकुपित हो जाने से रोग होते हैं—इस विश्वास को छोड़ मनुष्य ने रोगों का कारण मनुष्य शरीर में ही खोजना प्रारम्भ किया।

पाश्चात्य देशों में सामूहिक स्वास्थ्य प्रबन्ध।

१ प्राचीन भारत में नगर स्वच्छता के लिये ईंटों की नालियों आदि की व्यवस्था।

२ पाश्चात्य देशों में शासन कार्य में स्वच्छता को प्रथम स्थान।

३ गन्दे पानी की भूमि, गतनालियों की व्यवस्था।

४ साफ पानी की व्यवस्था।

आधुनिक शल्य चिकित्सा (Surgery)।

१. पहिले दर्द तथा घावों के सड़ने से मृत्यु हो जाती थी।

२ आजकल अचेतनकारी औषधियों (Anaesthetics) का उपयोग होता है।

३. आजकल घाव सड़ने से मृत्यु डाक्टर का अक्षम्य अपराध।

४ किटाणुविहीन शल्यचिकित्सा (Aseptic Surgery) का विकास।

५ शल्य चिकित्सा में X-Ray का उपयोग।

रोग निदान के साधन।

१. माइक्रोस्कोप (Microscope)

२ स्टैथैस्कोप (Stethescope)।

३. एक्स-रे (X-Ray)।

आज की अर्थव्यवस्था की विशेषतायें।

१. औद्योगीकरण का विकास।

२. उत्पादन में वृद्धि।

३. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में वृद्धि।

४ सम्पत्ति का केन्द्रीकरण तथा पूंजीपतियों और श्रमिकों में सङ्घर्ष।

भारत में कृषि की अवस्था।

१ ६० प्रतिशत लोगों का आधार खेती।

२ उपज प्रति एकड़ कम।

३ खेतों का छोटे-छोटे टुकड़ों में विभाजन।

भारत मे कृषि की अवनति के कारण।

१. खेतों का छोटे-छोटे टुकड़ो में विभाजन।

२. कृषि का वर्षा पर निर्भर होना।

३. सिंचाई की कमी।

४ खेतों की उर्वरता का नाश।

५ वैज्ञानिक साधनों, अच्छे पशुओं तथा खाद का अभाव।

६ कृषकों का ऋण भार से दबे रहना।

८ आधुनिक प्रकार के औजार तथा मशीनें उन्हें प्राप्त करानी तथा शिक्षा के लिये जापान आदि देशों से निपुण व्यक्ति बुलाना।

९ कुटीर व्यवसायियों को कच्चा माल सस्ते दामों दिलाना तथा उनके तैयार माल का प्रचार करने के लिये प्रदर्शनियों की योजना बनाना।

सहकारी खेती (Co operative Farming) ✓

१ गाँव के कुछ किसान मिलकर इकट्ठे खेतों को जोतें तथा उपज का बटवारा करलें।

२. सहकारी संस्थाओं को ऋण भी थोड़े ब्याज पर और आसानी से मिल जाता है।

३ खेतों के टुकड़े होने से जो हानिया होती हैं वह भी दूर हो जाती है।

४. आधुनिक ढंग की मशीनरी का उपयोग भी सम्भव होता है।

५. उपज को मण्डियों में ले जाने की भी सुविधा होती है।

अध्याय ८—भारत के बड़े बड़े उद्योग

भारत के मुख्य उद्योग धन्धे

१. सूती वस्त्र उद्योग।

२ जूट उद्योग।

३. चीनी उद्योग।

४, लोहे का उद्योग—आधुनिक युग में लोहे का व्यापक उपयोग होने लगा है इसलिये आधुनिक युग-लौहयुग (Ironage) कहलाता है। १९०७ में जमशेदपुर में टाटा का लोहे का कारखाना खुला। भारत में ९ लाख टन इस्पात प्रतिवर्ष तैयार होता है जबकि इगलैंड में १ करोड़ ५० लाख टन और अमरीका में १० करोड टन।

भारत के मुख्य खनिज पदार्थ

१. कोयला – झरिया और रानीगंज–३ करोड़ टन प्रति वर्ष।

२ लोहा – तीस लाख टन लोहा प्रतिवर्ष निकलता है।

३. मैंगनीज – दुनिया की उपज का तीसरा भाग भारत में होता है।

सड़कों का विकास तथा आर्थिक महत्व ।

१. १९४१ में १,४४००० मोटरें आदि सड़कों पर चलते थे और १९४६ में यह संख्या १,७१००० हो गई ।

२. भारतीय सघ में २,४०००० मील लम्बी सड़कें हैं ।

३ अमरीका में सड़कों की लम्बाई एक लाख लोगों के पीछे २५०० मील—फ्रास में ९३४ मील—इगलैण्ड में २१२ और भारत में केवल ८६ मील है । पंच वर्षीय योजना में सड़कों की लम्बाई २४०००० से २६१००० हो जाने का अनुमान ।

४ आर्थिक दृष्टि से सड़कों का बड़ा महत्व है । कच्चा माल मिलों में ले जाना और तैयार माल ग्राहकों तक पहुचाना ।

५. कृषकों को उपज मण्डियों में लेजाने में मोटर ने बड़ी सहायता की।

समुद्री तथा आकाश यातायात का विकास ।

१. ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना के पश्चात नौका व्यापार चौपट।

२. आजकल भारत सरकार ने जहाज़ बनाने की आज्ञा दी हैं ७५ प्रतिशत व्यापर निकट वर्ती देशों से और ५० प्रतिशत दूर देशों से भारतीय जहाज़ों में होने की योजना ।

३. वायुयान बनाने का कार्य १९३२ में प्रारम्भ हुआ । इस समय देश में छः वायुयान कम्पनियां हैं ।

४. आर्थिक स्थिति वायुयान उद्योग के अनुकूल नहीं ।

अध्याय १०—हमारा संविधान

भारतीय संविधान की विशेषताऐं ।

१. सामाजिक समानता ।

२. सघ राज्य ।

३. केन्द्र तथा राज्यों में अधिकारों का बटवारा सुचियों के आधार पर । राज्य सूची, सघ सूची, समवर्ती सूची ।

४. राष्ट्रपति वैधानिक शासक ।

३ प्रत्येक बिल कानून बनने से पहिले राष्ट्रपति की अनुमति तथा उसके हस्ताक्षर आवश्यक।

४. प्रमुख ओहदों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा होती है।

५. राष्ट्रपति का चुनाव-संसद के दोनों भवनों तथा राज्यों की विधान सभा के निर्वाचित सदस्यों द्वारा होगा।

न्याय व्यवस्था।

१ उच्चतम तथा उच्च न्यायालयों की स्थापना।

२ न्यायाधीशों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा।

३ राज्यों तथा केन्द्र के बीच झगड़े उच्चतम न्यायालय निपटाता है।

४. उच्च न्यायालयों से उच्चतम न्यायालयों में अपील की जा सकती है।

५. जनता के अधिकारों तथा संविधान की रक्षा।

६. इन न्यायालयों के अन्तर्गत अन्य छोटे-छोटे न्यायालय कार्य करते हैं।

संघ में चार श्रेणियों के राज्य—केन्द्र को राज्यो के कार्य मे दखल देने का अधिकार।

१ 'अ' श्रेणी में वे राज्य हैं जो पहिले प्रान्त कहलाते थे।

२. देशी रियासतों के संघ तथा कुछ बडी रियासतें 'ब' श्रेणी के अन्तर्गत।

३ चीफ़ कमिश्नर के प्रान्त जैसे अजमेर, मेरवाडा आदि 'स' श्रेणी मे।

४. अन्दमान और निकोबार टापू 'द' श्रेणी में।

५ संकट के समय राष्ट्रपति राज्यों का शासनभार स्वयं संभाल सकता है—उस स्थिति में भारतीय संसद राज्यों से सम्बन्ध रखने वाले विषयों पर नियम बना सकती है।

६ राज्यपालों तथा राज्यप्रमुखों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा—राष्ट्रपति का उन पर प्रभाव।

प्रधान मन्त्री का स्थान।

१ लोक सभा की बहुमत वाली पार्टी का नेता।

अध्याय १२—सुखी भारत का निर्माण ।

खाद्य समस्या ।

१. अनाज की आवश्यकता ४ करोड़ ८० लाख टन उपज ४ करोड़ ४० लाख टन ।

२. विभाजन के पश्चात् अधिक अन्न उपजाऊ क्षेत्र पाकिस्तान के पास चले गये ।

३. जब तक सिंचाई की योजनायें पूर्ण हों तब तक ट्यूबवेल आदि बनाने चाहिये ।

४. राशनिंग तथा कंट्रोल में कठोरता की आवश्यकता ।

५. खेतों में आधुनिक वैज्ञानिक साधनों का उपयोग किया जाय और उपज बढ़ाई जाय ।

देश की गरीबी कैसे दूर हो सकती है ।

१ प्राकृतिक साधनों की कमी नहीं केवल उनका उपयोग नहीं किया जाता ।

२. कृषि को उन्नत बनाने का भरसक प्रयत्न किया जाय कृषि पर ९० प्रतिशत व्यक्ति आश्रित ।

३. सामाजिक कुरीतियों को दूर करना ।

४. सम्पत्ति का वितरण न्याय पूर्ण ढंग से हो इसका प्रयत्न करना ।

५. जन वृद्धि को रोकना ।

६. गृह उद्योग धन्धों को प्रोत्साहन देना ।

शिक्षा की दशा तथा उसमें सुधार के लिये सुझाव ।

१. १९४१ में केवल १३.६ व्यक्ति शिक्षित थे ।

२. जनतन्त्र शासन प्रणाली में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान ।

३. १९४४ में सार्जेण्ट योजना, १९१९ में प्रौढ़ शिक्षा योजना ।

४. प्रारम्भिक शिक्षा अनिवार्य तथा निःशुल्क हो । कुशल विद्यार्थियों के लिये उच्च शिक्षा की भी व्यवस्था आवश्यक

३. आर्थिक तथा सामाजिक सभा—Economic and Social Council
४. ट्रस्टीशिप काउन्सल—Trusteeship Council
५ अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय—International Court of Justice.
६ सचिवालय—Secretariat

सुरक्षा परिषद् ।

१. बैठक सप्ताह में साधारणतय. दो बार, ११ सदस्य ।
२ मुख्य उद्देश्य राष्ट्रों के आपसी झगड़े निपटाना ।
३. सदस्यों द्वारा वीटो का उपयोग होने के कारण यह अपने कार्य में असफल ।

यूनेस्को (Unesco), W H O. तथा अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय ।

१. यह संस्थायें संयुक्त राष्ट्र सघ का कार्य चलाने के लिये बनाई गई ।
२. यूनेस्को संसार के देशों की शिक्षा तथा सास्कृतिक विकास में सहयोग देती है ।
३ W H O का उद्देश्य संसार का स्वास्थ्य स्तर ऊँचा उठाना । B C G. के टीकों की व्यवस्था ।
४. अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में देशों के आपसी झगड़े विचार करने के लिये पेश होते हैं । इसका निर्णय अन्तिम ।

अध्याय १४—संयुक्त राष्ट्र संघ के कार्य का मूल्याङ्कन ।

अराजनैतिक क्षेत्र में अन्तराष्ट्रीय सहयोग के प्रयत्न ।

१. (Food and Agricultural organisation) खुराक और खेती की संख्या ।
२. Ecafe—इकेफ ।
३ W H O विश्व स्वास्थ्य सस्था—B C G के टीके ।
४ I. L O अतर्राष्ट्रीय श्रम संस्था ।

२. उत्पादन आवश्यकतानुसार।

३ प्रत्येक व्यक्ति को उसकी आवश्यकतानुसार मिलेगा।

समाजवाद।

१. साम्यवाद की पहिली स्टेज।

२ कुछ छोटे-छोटे उद्योग प्राईवेट लोगों को देने में ही लाभ।

३ व्यक्तिगत सम्पत्ति के भी कुछ अधिकार प्राप्त होंगे।

जनतन्त्र।

१. जनता का राज्य।

२. व्यक्ति को बहुत स्वतन्त्रता।

३. पूंजीवाद का प्राधान्य।

पूजीवाद की खराबियां।

१. पूंजीपतियों में निरन्तर संघर्ष।

२ आर्थिक विषमता।

३. उत्पादन उस वस्तु का होता है जो पूंजीपति को अधिक लाभ देने वाली हो।

४ प्राकृतिक साधनों का पूरा उपयोग नहीं होता।

५. श्रमिकों का शोषण।

अध्याय १६—विश्व शान्ति और भारत।

संयुक्त राष्ट्र सघ के कार्य में भारत का हाथ।

१ भारत का वास्तविक प्रतिनिधित्व स्वतन्त्रता के पश्चात।

२. यूनेस्को के अधिवेशन का सभापतित्व—डा० राधाकृष्ण द्वारा। I L O का श्री जगजीवनराम द्वारा और W H O. का श्रीमति अमृतकौर द्वारा।

३ भारत अन्य सभी अन्तर्राष्ट्रीय सस्थाओं का सदस्य।

भारत द्वारा पिछड़े राष्ट्रों की स्वतन्त्रता के प्रयत्न।

१. भारत किसी गुट का समर्थक नहीं—स्वतन्त्र नीति।

४ विवाह शादी के मामले में वर और वधू की अपनी इच्छा।

५ पाश्चात्य सम्पर्क से हमारे रहन सहन के ढगों में परिवर्तन।

६. छूत छात कम हुआ।

७. औद्योगीकरण का विकास हुआ।

८ जाति व्यवस्था तथा कुटुम्ब प्रणाली में शिथिलता।

९. किन्तु हमारी सस्कृति अब भी प्राचीन परम्पराओं से बधी।

अध्याय १९—भारतीय संस्कृति

भारतीय संस्कृति की प्राचीनता।

१ भारतीय सस्कृति प्राचीन परम्पराओं से बँधी है।

२. मिश्र आदि अन्य देशों की सस्कृति प्राचीन से कोई सम्बन्ध नहीं रखती हैं।

३ भारतीय सस्कृति में समन्वय शक्ति—आर्य और द्रविड़ सस्कृतियों का सामञ्जस्य।

४ मोहिञ्जोदाड़ो की खुदाई में भारतीय सभ्यता के अत्यन्त उन्नत और प्राचीन होने के प्रमाण।

भारतीय सस्कृति में धर्म का स्थान

१ धर्म का अर्थ कर्तव्य।

२. स्त्री का धर्म पतिव्रत धर्म—पति का पत्निव्रत धर्म, राजा का राजधर्म।

३. कर्तव्य का पालन—फल की आशा न रखते हुये।

४ गीता में धर्म का उपदेश— कर्म योग।

वर्णाश्रम-धर्म

१. चार आश्रम—ब्रह्मचर्याश्रम—२५ वर्ष शिक्षा ग्रहण करना, ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना—शरीर को सुदृढ़ बनाना।

२ गृहस्थाश्रम—अगले २५ वर्ष कौटुम्बिक जीवन में रहना, अपना तथा स्त्री बच्चों का पेट पालना।

३. वानप्रस्थाश्रम और सन्यासाश्रम।

४. आश्रमव्यवस्था मनोवैज्ञानिक आधार पर निर्धारित। स्वाभाविक ही

३. धीरे धीरे शहरों में शासकों के रहन सहन के ढंग अपना लिये गये।

४. शहरों में फारसी का तथा उर्दू का प्रचार होने लगा।

५. गांव में इसका विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। विदेशी अफसरों का गांवों से बहुत कम सम्पर्क।

६. जो मुसलमान जातियां, जुलाहे, लोहार आदि गांवों में बस गये वह गांव की सभ्यता में ही घुल मिल गये।

धर्म तथा साहित्य में समन्वय।

७. मुसलमान कवियों ने हिन्दी में कविता की, कबीर साहब, मलिक मुहम्मद जायसी हिन्दी के अच्छे कवि हुये।

८. गुरु नानक ने कबीर के ऐकेश्वरवाद को माना।

९. दर्शन तथा विज्ञान के ग्रन्थों का अनुवाद हुआ।

१०. इस्लाम में भी मूर्ति पूजा का प्रवेश।

११. हिन्दुओं में पर्दा सिस्टम का रिवाज।

कला में समन्वय।

१. भारतीय कला में महीनता—खुदाई का काम खूब पेचीदा तथा बिन का होता था—मन्दिरों आदि की दीवारें तथा छतों मे कोई स्थान खाली नहीं रहता था। मुगल शैली में सादापन और कम पेचीदगी होती थी। इन दोनों कलाओं का खूब समन्वय हुआ।

२. सगीत में—ठुमरी, दादरा और गज़लें आदि मुस्लिम सगीत कारों की देन।

भारतीय सस्कृति की पुनर्जागृति।

१ १८५७ में अंग्रेजों के विरुद्ध सघर्ष।

२. राष्ट्रीय चेतना का निर्माण।

३ ऋषि दयानन्द ने पश्चिमी शिक्षा प्रणाली का विरोध किया। गुरुकुल खोले। छुआछूत आदि के विरुद्ध आवाज़ उठाई।

४. स्वामी विवेकानन्द ने भारतीय धार्मिक तथा सास्कृतिक विचारों का ससार भर में प्रचार किया।

५. विवेकानन्द ने पश्चिमी भौतिकवाद के विरुद्ध आवाज़ उठाई।

TEST PAPER I

Time allowed 2½ hrs *Max. M 50*

Attempt any five questions. All questions carry equal marks

1. "The Present Age is the Age of Science" Discuss

Or

Trace the important steps in the growth and development of the modern civilization

2 What part do the Rail and Roadways play in the economic set-up of India?

Or

What service has the printing press done to man?

3 What aid has Science given in conquering diseases?

Or

What achievements have been done in the field of Surgery in the past years?

4 What are the chief characteristics of the present economic set up?

Or

What are the causes of decline of Agriculture in India? Suggest remedies for improvement

5 What are the main features of the Indian Constitution?

Or

Trace the gradual steps in the growth and development of the means of Transport and Communication

2 What machines have done for man ? How have the machines affected the modern economic order ?

Or

What is Large Scale Production what are its advantages and disadvantages ?

3 What are the chief sources of power ?

Or

Are you in favour of Large or Small Scale Industries or both ? Advance reasons in support of your answer

4. Write a brief note on the industrial development in India and the present position of various industries

Or

What are the obstacles that check the progress of big industries in India ? Suggest remedies ?

5 What are the rights of the citizens as guaranteed in the 1950 Constitution of India

Or

What is the place of President in the Indian Constitution ?

6. "India is a rich country inhabited by the poor" Discuss

Or

What steps should be taken to check the growth of diseases in India

4 What part do the Supreme Court and High Courts play in preserving the constitution against encroachment by the central and state governments and to safeguard the interests of the citizens ?

Or

What is the relation between the centre and state governments ? How are the various Heads of Administration divided between the two ?

5 What is the position of education in India ? Do you want to suggest some improvements ?

Or

Upto what extent has the U N O been able to achieve its aim of establishing peace in the world ?

6 Name the two blocks in which the world is divided to-day ? What are the fundamental differences of opinion between them ?

Or

What are the advantages and disadvantages of Caste System ? Is caste system still necessary ?

7 How has the Western Civilization affected the Indian Society ?

Or

What part has joint family system played in Indian Society ? Is there any scope for this system in the future economy of India ?

8 Write short notes on any three of the following —

(a) Aeroplane (b) Steam as a Source of Power (c) Radio as a Means of Propaganda (d) Telephone (e) Wireless (f) Important features of Indian Culture

———

Or

Write a short essay on the ideologies of Communism and Capitalism

8 Write a note in two pages on the Caste System in India

Or

What has been the effect of the contact of foreigners on Indian Culture ?

9 Write notes on the following

1 W H O. 2 UNESCO 3 International Court of Justice 4 Developmet of Railways 5. Election of President in India

---

TEST PAPER VI

Time allowed 2½ hrs *Max M 50*

Attempt any five questions All questions carry equal marks

1 Write down a brief note on the activities of India in the International Affaires

Or

State the functions of the General Assembly and the Securty Council

2 Write down what may be the causes of the failure of the U N O.

Or

Estimate the work done by India regarding the integration of the Native States

3 Write down an essay on the Indian Culture explaining, that how is it that it has lived as long a period as three thousand years

TEST PAPER VII

Time allowed 2½ hrs *Max M 50*

Attempt any five questions All questions carry equal marks.

1. Write a short note on the power and functions of the Prime Minister and his cabinet

2. What is the relation between the parliament and the cabinet ?

3. Write down a brief history of the development of the printing press

4 What are reasons of failure of the U. N O in its aim of establishing peace in the world ?

5 What steps should be taken by the government to encourage the development of Cottage Industries in India ?

6. What has been the effect of industrilization on the economic and social life of India ?

7 How has Western Education influenced Indian Civilization ?

8 What is Co-operative farming ? What are its uses ?

9 What are the chief Mineral Products found in India ?

10 "Machines are the modern slaves of man " Discuss.

11. What were the efforts made for the revival of Indian Culture

---

Printed at Swatantra Bharat Press, Delhi

किस के हाथ का न खाया जाय। शादी तो एक जाति का दूसरी जाति में होने का प्रश्न ही नहीं आता। इन कट्टरताओं के कारण हमारे समाज को बहुत हानि हुई है।

हमारे समाज में ढोंग बहुत अधिक बढ़ गया है। बाहर में लोग स्वच्छता तथा छुआछूत का ढोंग करते हैं किन्तु स्वयं गन्दे रहते हैं तथा गन्दा पानी पीने से भी परहेज़ नहीं करते।

आज भी हमारे समाज में लड़की के जन्म को अभिशाप माना जाता है। इसका कारण यह है कि लड़की की शादी में दहेज देना पड़ता है। यदि दहेज प्रथा को उड़ा दिया जाय तो लड़कियों के प्रति यह अन्यायपूर्ण व्यवहार कम हो सकता है।

हमारे समाज में स्त्रियों को स्वतन्त्रता बिलकुल भी नहीं है। महिलाओं के प्रति वास्तव में यह अन्याय है। स्त्रियां सार्वजनिक क्षेत्र में मर्दों के साथ भाग नहीं ले सकतीं। उनके आचरण पर कड़ी दृष्टि रखी जाती है। पुरुष स्त्री को देखकर सुन्दर स्त्री से विवाह कर सकता है किन्तु स्त्री अपनी इच्छा से विवाह नहीं कर सकती। चाहे उनका विवाह किसी अन्धे अथवा लगड़े लूले से कर दिया जाय उन्हें कुछ भी कहने का अधिकार नहीं है। स्त्रियों के प्रति यह अन्याय हिन्दू समाज के लिये लज्जा की बात है।

हमारे समाज में यह सब बुराइयां तभी दूर हो सकती हैं जब हम धार्मिक कट्टरपन को छोड़ दें और केवल जो अच्छा है उसे अपनाएँ चाहे वह किसी भी धर्म अथवा समाज से सम्बन्ध रखता हो।

प्रश्न ११० भारतीय वर्णव्यवस्था पर एक संक्षिप्त निबन्ध लिखिये।

उत्तर—आरम्भ में सभी आदमी सम्मिलित रूप से सब काम करते थे।

वर्णव्यवस्था का प्रारम्भ

हवन, यज्ञ आदि भी सभी करते थे। युद्ध के समय लड़ते भी सभी थे। इसी प्रकार युद्ध के पश्चात शान्ति के समय कृषि भी सब ही करते थे। किन्तु धीरे धीरे धार्मिक कर्मकाण्ड इतने बढ़ गए

कि प्रत्येक आदमी के लिये उनकी पूरी जानकारी रखना कठिन हो गया। इस प्रकार धीरे धीरे चार वर्णों की व्यवस्था की गई।

जिन लोगों को विद्या का अध्ययन करना तथा दूसरों को उसकी शिक्षा देने का कार्य दिया गया वह ब्राह्मण कहलाये। क्षत्रियों को देश की आंतरिक तथा बाह्य आक्रमण से रक्षा का काम दिया गया। इसी प्रकार खेती तथा व्यापार आदि का कार्य वैश्यों के जिम्मे किया गया। इन तीनों जातियों की सेवा का कार्य शूद्रों को दिया गया।

वर्णव्यवस्था का मनोवैज्ञानिक आधार

वर्णव्यवस्था का प्रारम्भ मनोवैज्ञानिक आधार पर किया गया था। जो व्यक्ति विचारवान थे तथा बुद्धिमान थे उन्हें ब्राह्मण का कार्य दिया गया और जो प्रबन्ध इत्यादि में कुशल होते थे तथा वीर होते थे उन्हें क्षत्रिय का वर्ण सौंपा गया। इसी प्रकार जिनकी खेती में अथवा व्यापार में रुचि होती थी वह वैश्य बने और जो नीच वृत्ति के लोग थे वे शूद्र बने।

परम्पराओं के बन्धन सम्पर्क आने के कारण हमारे सामाजिक जीवन में बहुत से परिवर्तन हुये हैं किन्तु फिर भी हमारा समाज अतीत की परम्पराओं से बधा हुआ है, विवाह, बच्चों के नामकरण संस्कार आदि में बडी असुविधा होती है किन्तु फिर भी पढे लिखे लोग भी इन परम्पराओं का उल्लंघन करने की हिम्मत नहीं कर सकते।

खान पान तथा विवाह सम्बन्ध आदि स्थापित करने मे भी हम इन परम्पराओं से बंधे हुए हैं हमारे मन में यह विचार बना रहता है कि किस जाति के हाथ का बना हुआ खायें और किस जाति के हाथ का बना हुआ न खायें, विवाह सम्बन्ध तो अपनी जाति के बाहर होना बहुत बड़ी बात है।

दहेज प्रथा भी हमारे यहा प्राचीन काल से चली आती है। इन प्रथाओं का अन्धानुसरण होने के कारण हमारे समाज में बहुत से दोष आ गये हैं, आज पुत्री के जन्म को एक बोझ समझा जाने लगा है, क्योंकि उसके जन्म से उन पर दहेज़ का भार आ पडता है।

महिलाओं का समाज मे स्थान हमारे समाज में महिलायें अनपढ़ हैं स्त्रियों की शिक्षा का स्तर गिरा हुआ है, वे पुरुषों से दूर रहती है और सामाजिक जीवन में कोई भाग नहीं ले सकतीं, वह सदा घर के काम में ही लगी रहती है, इसके विपरीत पाश्चात्य नारी घर के कामों से स्वतंत्र है और वह सामाजिक जीवन में खूब भाग लेती है, विवाह के समय लडके लडकी का आपस में सम्पर्क नहीं आता, इससे योग्य लडके गूंगी अथवा बहरी लडकियों से बाध दिये जाते हैं, और इसी प्रकार लडकियों के साथ भी बहुत अन्याय होता है।

हमारे समाज में कौटुम्बिक जिम्मेदारी की भावना बहुत अधिक है, सम्मिलित कुटुम्ब प्रणाली प्राचीन काल से चली आ रही है, एक एक कुटुम्ब में ३०, ३० के लगभग व्यक्ति भी होते हैं, इससे स्पष्ट है कि हमारा सामाजिक जीवन किस प्रकार प्राचीन परम्पराओं से बधा हुआ है।

अध्याय १८

पाश्चात्य सामाजिक जीवन और उसका भारतीय सामाजिक जीवन पर प्रभाव

प्रश्न ११२ पाश्चात्य सामाजिक जीवन के बारे में आप क्या जानते हैं ?

जाति व्यवस्था का न होना

उत्तर—पाश्चात्य सामाजिक जीवन की एक सब से बड़ी विशेषता यह है कि वहां जाति व्यवस्था नहीं है कोई भी मनुष्य इस कारण नीच नहीं समझा जाता कि वह नीच जाति में उत्पन्न हुआ है। वास्तव में वहां कोई जाति है ही नहीं। वहां धनी और निर्धन का भेद अवश्य है किन्तु एक निर्धन पढ़ लिख कर योग्य बन कर धनी घरानों में विवाह कर सकता है। वह समाज के अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों के समान समझा जाता है।

हमारी वेश-भूषा, खान-पान तथा रहन-सहन में बड़ा परिवर्तन हुआ। शिक्षित लोगों ने अंग्रेजों के रहन-सहन के ढंग, उनकी पोशाक को अपना लिया। धीरे धीरे उनका दृष्टिकोण भी बदलने लगा। चाय, बिस्कुट आदि तथा घर की बनावट सजावट आदि सब अंग्रेज़ी ढंग पर होने लगे।

पाश्चात्य सम्पर्क के कारण शिक्षित वर्ग में वैयक्तिक स्वतंत्रता की भावना बढ़ गई है। जाति व्यवस्था, सम्मिलित कुटुम्ब प्रणाली तथा समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना कमज़ोर पड रही है।

अंग्रेजों के सम्पर्क आने के पूर्व भारत में छुआछूत बहुत अधिक था किन्तु औद्योगीकरण, शहरों के निर्माण तथा शिक्षा के कारण अधिक से अधिक लोगों का आपस में सम्पर्क आया, एक ही नल पर लोग पानी पीने लगे इस प्रकार छुआछूत आदि की प्रथा में भी बहुत सुधार हुआ है।

बहुत से बुरे रीति-रिवाज, जैसे सती होने की प्रथा भी समाप्त हो गई है। विवाह सम्बन्धी मामलों में भी अब लड़के लडकियों की सलाह ली जाने लगी है। तथा लडकियों को शिक्षा देना भी आवश्यक समझा जाने लगा है। जाति प्रथा में भी अब वह रूढ़ीवाद नहीं रहा है उसकी कट्टरता कम हो गई है। अपनी जाति के बाहर भी अब विवाह होने लगे हैं।

यद्यपि पाश्चात्य सभ्यता के सम्पर्क से हमारे समाज जीवन में कुछ महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुये हैं किन्तु उन का आधार अब भी भारतीय है। हमने ठाठ-बाठ तथा रहन-सहन की दृष्टि से पाश्चात्य समाज की नकल की है किन्तु हमारी परम्परायें अब भी वैसे ही बनी हुई हैं।

तथा उनकी वधुओं के लिये कुटुम्ब मे रहते हुये अपने माता पिता की सेवा करना एक सामाजिक नियम माना जाता है इस प्रकार पाश्चात्य समाज मे लडके अपने माता पिता के प्रति उत्तरदायी नहीं समझे जाते।

विवाह प्रणाली

भारत मे अपने लडके और लडकी का विवाह करना माता पिता का कर्तव्य माना जाता है। पाश्चात्य समाज मे लडके लडकी स्वय ही अपने लिये वधू अथवा वर ढूढ लेते हैं और विवाह भी कर लेते हैं। माता पिता पर उनके विवाह की दृष्टि से कोई उत्तरदायित्व नहीं होता तथा विवाह मे जाति-पाति आदि की बाधा भी नहीं आती।

नारी का स्थान

भारत में नारी को विवाह के पश्चात अपने पति के कुटुम्ब की सेवा करनी पडती है। उसे अन्य कार्यों के लिये तथा अपनी और अपने बच्चो की शिक्षा आदि के लिये अवकाश ही नहीं मिलता। पाश्चात्य नारी पूर्ण रूप से स्वतन्त्र है। उसे घर का कार्य नहीं करना पडता वह स्वतन्त्रता पूर्वक क्लबों अथवा अन्य क्रीडा स्थलों में विहार करती है। भारतीय नारियों की अपेक्षा वह शिक्षित भी अधिक हैं। उन्हें पति के कुटुम्ब से कोई वास्ता नहीं होता, वहा भारत की भांति घर में कलह भी कम दिखाई देता है।

प्रश्न ११४ पश्चिमी सम्पर्क से हमारे सामाजिक जीवन मे क्या परिवर्तन हो रहे हैं?

उत्तर—अग्रजों के भारत में आगमन के समय भारत मे बहुत सी पुरानी परम्परायें बनी हुई थीं। अंग्रेजों के पूर्व भी भारत में अन्य विदेशी जातियां आईं वह हमारे समाज जीवन मे घुल मिल गईं किन्तु उनके सम्पर्क से हमारे समाज जीवन में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुए।

अंग्रेजो के भारत मे आने के पश्चात हमारे जीवन में बहुत से परिवर्तन ये है। उनसे सम्पर्क आने के पश्चात हमारा अन्य पश्चिमी राष्ट्र... भी ...अंग्रेज़ी शिक्षा का प्रचार हुआ तथा पाश्चात्य ... पर ...यों ... की स्थापना हुई।

परम्पराओं के बन्धन सम्पर्क आने के कारण हमारे सामाजिक जीवन में बहुत से परिवर्तन हुये हैं किन्तु फिर भी हमारा समाज अतीत की परम्पराओं से बधा हुआ है, विवाह, बच्चों के नामकरण संस्कार आदि में बडी असुविधा होती है किन्तु फिर भी पढ़े लिखे लोग भी इन परम्पराओं का उल्लघन करने की हिम्मत नहीं कर सकते।

खान पान तथा विवाह सम्बन्ध आदि स्थापित करने मे भी हम इन परम्पराओं से बधे हुए हैं हमारे मन में यह विचार बना रहता है कि किस जाति के हाथ का बना हुआ खायें और किस जाति के हाथ का बना हुआ न खायें, विवाह सम्बन्ध तो अपनी जाति के बाहर होना बहुत बडी बात है।

दहेज प्रथा भी हमारे यहा प्राचीन काल से चली आती है। इन प्रथाओं का अन्धानुसरण होने के कारण हमारे समाज में बहुत से दोष आ गये हैं, आज पुत्री के जन्म को एक बोझ समझा जाने लगा है, क्योंकि उसके जन्म से उन पर दहेज़ का भार आ पडता है।

महिलाओं का समाज मे स्थान हमारे समाज में महिलायें अनपढ़ हैं स्त्रियों की शिक्षा का स्तर गिरा हुआ है, वे पुरुषों से दूर रहती हैं और सामाजिक जीवन में कोई भाग नहीं ले सकतीं, वह सदा घर के काम में ही लगी रहती है, इसके विपरीत पाश्चात्य नारी घर के कामों से स्वतत्र है और वह सामाजिक जीवन में खूब भाग लेती है, विवाह के समय लडके लडकी का आपस में सम्पर्क नहीं आता, इससे योग्य लडके गूगी अथवा बहरी लडकियों से बाध दिये जाते हैं, और इसी प्रकार लडकियों के साथ भी बहुत अन्याय होता है।

हमारे समाज में कौटुम्बिक जिम्मेदारी की भावना बहुत अधिक है, सम्मिलित कुटुम्ब प्रणाली प्राचीन काल से चली आ रही है, एक एक कुटुम्ब में ३०, ३० के लगभग व्यक्ति भी होते हैं, इससे स्पष्ट है कि हमारा सामाजिक जीवन किस प्रकार प्राचीन परम्पराओं से बधा हुआ है।

———

अध्याय १८

पाश्चात्य सामाजिक जीवन और उसका भारतीय सामाजिक जीवन पर प्रभाव

प्रश्न ११२ पाश्चात्य सामाजिक जीवन के बारे में आप क्या जानते हैं ?

उत्तर—पाश्चात्य सामाजिक जीवन की एक सब से बड़ी विशेषता यह है कि वहां जाति व्यवस्था नहीं है कोई भी मनुष्य इस कारण नीच नहीं समझा जाता कि वह नीच जाति में उत्पन्न हुआ है। वास्तव में वहां कोई जाति है ही नहीं। वहां धनी और निर्धन का भेद अवश्य है किन्तु एक निर्धन पढ़ लिख कर योग्य बन कर धनी घरानों में विवाह कर सकता है। वह समाज के अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों के समान समझा जाता है।

जाति व्यवस्था का न होना

परम्पराओं के बन्धन

सम्पर्क आने के कारण हमारे सामाजिक जीवन में बहुत से परिवर्तन हुये हैं किन्तु फिर भी हमारा समाज अतीत की परम्पराओं से बधा हुआ है, विवाह, बच्चों के नामकरण संस्कार आदि में बडी असुविधा होती है किन्तु फिर भी पढे लिखे लोग भी इन परम्पराओं का उल्लघन करने की हिम्मत नहीं कर सकते।

खान पान तथा विवाह सम्बन्ध आदि स्थापित करने मे भी हम इन परम्पराओ से बधे हुए हैं हमारे मन में यह विचार बना रहता है कि किस जाति के हाथ का बना हुआ खायें और किस जाति के हाथ का बना हुआ न खायें, विवाह सम्बन्ध तो अपनी जाति के बाहर होना बहुत बड़ी बात है।

दहेज प्रथा भी हमारे यहा प्राचीन काल से चली आती है। इन प्रथाओं का अन्धानुसरण होने के कारण हमारे समाज में बहुत से दोष आ गये हैं, आज पुत्री के जन्म को एक बोझ समझा जाने लगा है, क्योंकि उसके जन्म से उन पर दहेज का भार आ पडता है।

महिलाओं का समाज मे स्थान

हमारे समाज में महिलायें अनपढ़ हैं स्त्रियों की शिक्षा का स्तर गिरा हुआ है, वे पुरुषों से दूर रहती हैं और सामाजिक जीवन में कोई भाग नहीं ले सकतीं, वह सदा घर के काम में ही लगी रहती है, इसके विपरीत पाश्चात्य नारी घर के कामों से स्वतन्त्र है और वह सामाजिक जीवन में खूब भाग लेती है, विवाह के समय लडके लडकी का आपस में सम्पर्क नहीं आता, इससे योग्य लडके गूगी अथवा बहरी लडकियों से बाध दिये जाते हैं, और इसी प्रकार लडकियों के साथ भी बहुत अन्याय होता है।

हमारे समाज में कौटुम्बिक जिम्मेदारी की भावना बहुत अधिक है, सम्मिलित कुटुम्ब प्रणाली प्राचीन काल से चली आ रही है, एक एक कुटुम्ब में ३०, ३० के लगभग व्यक्ति भी होते हैं, इससे स्पष्ट है कि हमारा सामाजिक जीवन किस प्रकार प्राचीन परम्पराओं से बधा हुआ है।

———

अध्याय १८

पाश्चात्य सामाजिक जीवन और उसका भारतीय सामाजिक जीवन पर प्रभाव

प्रश्न ११२ पाश्चात्य सामाजिक जीवन के बारे में आप क्या जानते हैं ?

उत्तर—पाश्चात्य सामाजिक जीवन की एक सब से बड़ी विशेषता यह है कि वहां जाति व्यवस्था नहीं है कोई भी मनुष्य इस कारण नीच नहीं समझा जाता कि वह नीच जाति में उत्पन्न हुआ है। वास्तव में वहां कोई जाति है ही नहीं। वहां धनी और निर्धन का भेद अवश्य है किन्तु एक निर्धन पढ़ लिख कर योग्य बन कर धनी घरानों में विवाह कर सकता है। वह समाज के अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों के समान समझा जाता है।

जाति व्यवस्था का न होना

परम्पराओं के बन्धन

सम्पर्क आने के कारण हमारे सामाजिक जीवन में बहुत से परिवर्तन हुये हैं किन्तु फिर भी हमारा समाज अतीत की परम्पराओं से बंधा हुआ है, विवाह, बच्चों के नामकरण संस्कार आदि में बड़ी असुविधा होती है किन्तु फिर भी पढ़े लिखे लोग भी इन परम्पराओं का उल्लंघन करने की हिम्मत नहीं कर सकते।

खान पान तथा विवाह सम्बन्ध आदि स्थापित करने में भी हम इन परम्पराओं से बंधे हुए हैं हमारे मन में यह विचार बना रहता है कि किस जाति के हाथ का बना हुआ खायें और किस जाति के हाथ का बना हुआ न खायें, विवाह सम्बन्ध तो अपनी जाति के बाहर होना बहुत बड़ी बात है।

दहेज प्रथा भी हमारे यहां प्राचीन काल से चली आती है। इन प्रथाओं का अन्धानुसरण होने के कारण हमारे समाज में बहुत से दोष आ गये हैं, आज पुत्री के जन्म को एक बोझ समझा जाने लगा है, क्योंकि उसके जन्म से उन पर दहेज का भार आ पड़ता है।

महिलाओं का समाज में स्थान

हमारे समाज में महिलायें अनपढ़ हैं स्त्रियों की शिक्षा का स्तर गिरा हुआ है, वे पुरुषों से दूर रहती हैं और सामाजिक जीवन में कोई भाग नहीं ले सकतीं, वह सदा घर के काम में ही लगी रहती है, इसके विपरीत पाश्चात्य नारी घर के कामों से स्वतन्त्र है और वह सामाजिक जीवन में खूब भाग लेती है, विवाह के समय लड़के लड़की का आपस में सम्पर्क नहीं आता, इससे योग्य लड़के गूंगी अथवा बहरी लड़कियों से बांध दिये जाते हैं, और इसी प्रकार लड़कियों के साथ भी बहुत अन्याय होता है।

हमारे समाज में कौटुम्बिक जिम्मेदारी की भावना बहुत अधिक है, सम्मिलित कुटुम्ब प्रणाली प्राचीन काल से चली आ रही है, एक एक कुटुम्ब में ३०, ३० के लगभग व्यक्ति भी होते हैं, इससे स्पष्ट है कि हमारा सामाजिक जीवन किस प्रकार प्राचीन परम्पराओं से बंधा हुआ है।

———